FAIZAN-E-MADINA

माहनामा

फ़ैज़ाने मदीना

(दावते इस्लामी)

फ़रवरी 2026 ई. / रमज़ानुल मुबारक 1447 हि.

- मरने वाला क्या कहता है ? 6
- रोज़ा, तक़्वा की तरबियत का अ़मली मौक़अ़ 18
- एतिकाफ़ की रूहानिय्यत में रुकावटें और उन का हल 20
- ख़िलाफ़ते राशिदा और मौला अ़ली शेरे ख़ुदा 35
- बेटियों को सहर व इफ़्तार का सलीक़ा सिखाएं 52

रोज़ी में बरकत का वज़ीफ़ा

यकुम (1st) रमज़ानुल मुबारक को मग़रिब की नमाज़ के बाद जो कोई 21 बार सूरतुल क़द्र पढ़े तो उस की रोज़ी में ऐसी बरकत होगी जैसे ऊंची जगह से पानी नीचे की तरफ़ तेज़ी से आता है इस तरह उस की तरफ़ मालो दौलत तेज़ी से बढ़ेगा और यूं उस की तंगदस्ती दूर होगी।

जो बीमार हो वोह

یَا حَیُّ 1000 **बार**

(अव्वल आख़िर एक बार दुरूदे पाक)

पढ़े اِنْ شَآءَاللّٰہُ الْکَرِیْم सेहतयाब होगा।

(शिफ़ा मिलने तक रोज़ाना पढ़ना है)

मुराद पूरी हो

یَا رَحْمٰنُ 11 **बार**

(अव्वल आख़िर एक बार दुरूद शरीफ़)

फ़र्ज़ या नफ़्ल रोज़ा खोलते वक़्त सूरज ग़ुरूब होने से मामूली वक़्त पहले पेशानी पर हाथ रख कर पढ़ लीजिये और वक़्त होने पर इफ़्तार कर लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہُ الْکَرِیْم दिल की मुराद पूरी होगी।

याद रखने का मदनी नुस्ख़ा

जो किसी बात को याद रखना चाहे वोह येह दुआ पढ़ ले : (तर्जमा पढ़ना ज़रूरी नहीं) اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ مُذَکِّرِ الْخَیْرِ وَفَاعِلِہٖ (यानी तमाम ख़ूबियां अल्लाह तआला के लिये जो भलाई याद दिलाने वाला और भलाई करने वाला है) اِنْ شَآءَاللّٰہ उस की दुआ की बरकत से वोह बात याद रहेगी।

(شرعۃ الاسلام ومفاتیح الجنان، ص372، استنبول)

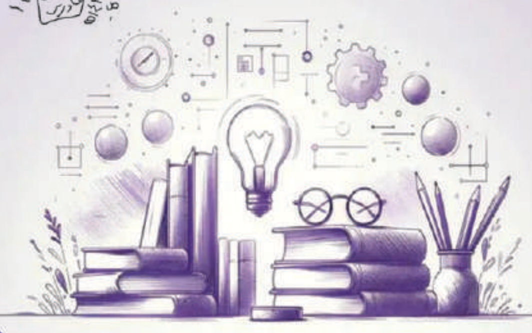

माहनामा
फ़ैज़ाने मदीना
(दावते इस्लामी)

फ़रवरी 2026 ई.

ब फ़ैज़ाने नज़र
सिराजुल उम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह,
इमामे आज़म हज़रते सय्यिदुना
इमाम अबू हनीफ़ा नोमान बिन साबित رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

ब फ़ैज़ाने करम
आला हज़रत इमामे अहले सुन्नत
मुजद्दिदे दीनो मिल्लत शाह
इमाम अहमद रज़ा ख़ान رحمۃ اللہ تعالٰی علیہ

माहनामा फ़ैज़ाने मदीना धूम मचाए घर घर
या रब जा कर इश्क़े नबी के जाम पिलाए घर घर
(अज़ : अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ)

क़ुरआनो हदीस
- नुज़ूले क़ुरआन के मक़ासिद और हिक्मतें 3
- मरने वाला क्या कहता है ? 6

फ़ैज़ाने सीरत
- रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم की अश्कबारी 8

फ़ैज़ाने अमीरे अहले सुन्नत
- रोज़े की हालत में भाप लेना कैसा ? मअ़ दीगर सुवालात 11

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत
- तक्बीरे क़ुनूत में हाथ न उठाने का हुक्म मअ़ दीगर सुवालात 13

मज़ामीन
- इस्लामी मुआ़शरा ही मिसाली मुआ़शरा है 15
- रोज़ा, तक़्वा की तरबियत का अ़मली मौक़अ़ 18
- एतिकाफ़ की रूहानिय्यत में रुकावटें और उन का हल 20
- पूछ कर देख लीजिये 23
- इस्लाम का निज़ामे मुवाख़ात 24
- जन्नत में दो महल्लात दिलाने वाली नेकियां 27
- बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन 29

ताजिरों के लिये
- अहकामे तिजारत 30

बुज़ुर्गाने दीन की सीरत
- हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ علیہ السلام तख़्ते सुल्तानी पर 32
- ख़िलाफ़ते राशिदा और मौला अ़ली शेरे ख़ुदा 35
- हज़रते मिक़्दाम बिन मअ़दी करिब رضی اللہ عنہ 39
- अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये 40

क़ारिईन के सफ़हात
- नए लिखारी 42

बच्चों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
- बरकत वाला महीना 45
- नदी का पानी ख़ुश्क हो गया 46
- सेहत का ख़ज़ाना 48
- बच्चों को क़ुरआन से जोड़िये 50

इस्लामी बहनों का "माहनामा फ़ैज़ाने मदीना"
- बेटियों को सहर व इफ़्तार का सलीक़ा सिखाएं 52
- अज़्वाजे मुतहहरात और रमज़ानुल मुबारक 54
- इस्लामी बहनों के शरई मसाइल 56

नुज़ूले क़ुरआन के मक़ासिद और ह़िक्मतें

(क़िस्त : 02)

दीने ह़क़ की तक्मील नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब दीन की तक्मील के लिये नाज़िल की गई। सूरतुल माइदा में अल्लाह तआ़ला का येह अ़ज़ीम एलान है :

﴿اَلْیَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِیْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَیْكُمْ نِعْمَتِیْ وَ رَضِیْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِیْنًاؕ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : आज मैं ने तुम्हारे लिये तुम्हारा दीन कामिल कर दिया और तुम पर अपनी नेमत पूरी कर दी और तुम्हारे लिये इस्लाम को दीन पसन्द किया।(1)

सूरतुल अन्आ़म में फ़रमाया :

﴿وَ تَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّ عَدْلًاؕ لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖۚ وَ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ(۱۱۵)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और पूरी है तेरे रब की बात सच और इन्साफ़ में उस की बातों का कोई बदलने वाला नहीं और वोही है सुनता जानता।(2)

येह आयात बताती हैं कि क़ुरआन के नुज़ूल के साथ दीने इस्लाम मुकम्मल हो गया। अब न किसी नए नबी की ज़रूरत है, न किसी नई किताब की, और न ही दीन में किसी क़िस्म की कमी बेशी की गुन्जाइश है। क़ुरआन ने अ़क़ाइद, इ़बादात, मुआ़मलात, अख़्लाक़ियात, मुआ़शरत, मई़शत, सियासत, जंग व अम्न, ख़ानदान और मुआ़शरे के हर पहलू के बारे में वाज़ेह रहनुमाई फ़राहम कर दी और रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने फ़रामीन में क़ुरआने करीम के तमाम उसूलों और तालीमात को क़ौलन और अ़मलन वाज़ेह फ़रमा दिया। येह तक्मीले दीन अल्लाह की नेमत है और मुसलमानों पर बहुत बड़ा एह़सान है। इस का तक़ाज़ा येह है कि हम उस मुकम्मल दीन को अपनी ज़िन्दगी में मुकम्मल त़ौर पर नाफ़िज़ करें, इस में अपनी त़रफ़ से कोई इज़ाफ़ा या कमी न करें, और किसी दूसरे निज़ामे ज़िन्दगी को इस पर तरजीह़ न दें। मुआ़शरे में जब लोग इस ह़क़ीक़त को समझ लेते हैं कि इस्लाम एक मुकम्मल निज़ाम है तो वोह मग़रिबी नज़रियात और अफ़्कार की ग़ुलामी से निकल आते हैं और अपनी अस्ल शनाख़्त पर फ़ख़्र करते हैं।

क़ल्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तक़्विय्यत क़ुरआने करीम के ब तदरीज नाज़िल होने का भी एक अहम मक़्सद था। सूरतुल फ़ुरक़ान में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

﴿وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا لَوْ لَا نُزِّلَ عَلَیْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةًۚۛ كَذٰلِكَۚۛ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَ رَتَّلْنٰهُ تَرْتِیْلًا(۳۲)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और काफ़िर बोले क़ुरआन उन पर एक साथ क्यूं न उतार दिया हम ने यूंही ब तदरीज इसे उतारा है कि इस से तुम्हारा दिल मज़बूत़ करें और हम ने इसे ठहर ठहर कर पढ़ा।(3)

सूरए हूद में भी इसी मज़्मून का ज़िक्र है :

﴿وَ كُلًّا نَّقُصُّ عَلَیْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَۚ وَ جَآءَكَ فِیْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَ مَوْعِظَةٌ وَّ ذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِیْنَ(۱۲۰)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और सब कुछ हम तुम्हें रसूलों की ख़बरें

सुनाते हैं जिस से तुम्हारा दिल ठहराएं और इस सूरत में तुम्हारे पास हक़ आया और मुसलमानों को पन्दो नसीहत।[4]

येह आयात बताती हैं कि क़ुरआन का बतदरीज नुज़ूल और इस में पिछले अम्बिया के वाक़िआत का तज़्किरा रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये तक़्वियते क़ल्ब का बाइस था। जब कुफ़्फ़ार की तरफ़ से मुख़ालिफ़त शदीद होती, मुश्किलात बढ़तीं और हालात दुश्वार होते तो अल्लाह तआला वही नाज़िल फ़रमाता जो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के हौसले बढ़ाती और आप को येह यक़ीन दिलाती कि अल्लाह आप के साथ है। गुज़श्ता अम्बिया के सब्र और इस्तिक़ामत के वाक़िआत सुन कर आप को तसल्ली होती कि येह राह हमेशा मुश्किल रही है लेकिन आख़िर कामयाबी हक़ की होती है। येह हमारे लिये भी सबक़ है कि जब हम दीन के रास्ते में मुश्किलात का सामना करें तो क़ुरआन की तिलावत और इस के वाक़िआत पर ग़ौरो फ़िक्र करें ताकि हमारे दिल मज़बूत हों और हमें सब्रो इस्तिक़ामत की तौफ़ीक़ मिले।

शुब्हात का इज़ाला और हक़ाइक़ की वज़ाहत नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब लोगों के शुकूको शुब्हात को दूर करने और हक़ाइक़ को वाज़ेह करने के लिये नाज़िल की गई। सूरतुन्नहल में अल्लाह तआला फ़रमाता है :

﴿وَ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ الذِّكْرَ لِتُبَیِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَیْهِمْ وَ لَعَلَّهُمْ یَتَفَكَّرُوْنَ(۴۴)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ महबूब हम ने तुम्हारी तरफ़ येह यादगार उतारी कि तुम लोगों से बयान कर दो जो उन की तरफ़ उतरा और कहीं वोह ध्यान करें।[5]

सूरतुल बक़रह में फ़रमाया :

﴿وَ لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اِلَیْكَ اٰیٰتٍۭ بَیِّنٰتٍۚ وَ مَا یَكْفُرُ بِهَاۤ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ(۹۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और बेशक हम ने तुम्हारी तरफ़ रौशन आयतें उतारीं और उन के मुन्किर न होंगे मगर फ़ासिक़ लोग।[6]

सूरतुन्निसा में भी इसी मज़्मून का ज़िक्र है :

﴿یٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا یُبَیِّنُ لَكُمْ كَثِیْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ وَ یَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ۬ؕ قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّ كِتٰبٌ مُّبِیْنٌ(۱۵)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ किताब वालो बेशक तुम्हारे पास हमारे येह रसूल तशरीफ़ लाए कि तुम पर ज़ाहिर फ़रमाते हैं बहुत सी वोह चीज़ें जो तुम ने किताब में छुपा डाली थीं और बहुत सी मुआफ़ फ़रमाते हैं बेशक तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ़ से एक नूर आया और रौशन किताब।[7]

क़ुरआने करीम की येह ख़ुसूसिय्यत इन्तिहाई अहम है कि येह हर तरह के शुब्हात का जवाब देता है और अक़ीदे, शरीअत, अख़्लाक़ और तारीख़ से मुतअल्लिक़ तमाम हक़ाइक़ को वाज़ेह करता है। अहदे नबवी में कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन की तरफ़ से मुख़्तलिफ़ शुब्हात पेश किये जाते थे, यहूदी और नसारा अपनी मज़हबी तहरीफ़ात की वज्ह से उल्झनें पैदा करते थे, और मुश्रिकीन अपने बातिल अक़ाइद का दिफ़ाअ करते थे। क़ुरआन ने इन तमाम शुब्हात का मुदल्लल और वाज़ेह जवाब दिया। आज भी जब दीन के बारे में शुकूक पैदा होते हैं, मग़रिबी फ़िक्र के ज़ेरे असर सुवालात उठाए जाते हैं, या नए फ़ितने सर उठाते हैं तो क़ुरआन ही वोह मेयार है जिस की रौशनी में उन का जवाब दिया जा सकता है। मुआशरे में जहालत और ग़लत फ़हमियों की वज्ह से बहुत से मसाइल पैदा होते हैं, क़ुरआन की तालीम से येह शुकूको शुब्हात दूर हो जाते हैं और लोगों की सोच में वज़ाहत आ जाती है।

अल्लाह की निशानियों पर तफ़क्कुर की दावत नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब लोगों को काइनात में मौजूद अल्लाह की निशानियों पर ग़ौर करने की दावत देने के लिये नाज़िल की गई। सूरए ص में अल्लाह तआला फ़रमाता है :

﴿كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَیْكَ مُبٰرَكٌ لِّیَدَّبَّرُوْۤا اٰیٰتِهٖ وَ لِیَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ(۲۹)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : येह एक किताब है

कि हम ने तुम्हारी त़रफ़ उतारी बरकत वाली ताकि इस की आयतों को सोचें और अ़क़्लमन्द नसीह़त मानें।[8]

सूरए मुह़म्मद में फ़रमाया :

﴿اَفَلَا یَتَدَبَّرُوۡنَ الۡقُرۡاٰنَ اَمۡ عَلٰى قُلُوۡبٍ اَقۡفَالُهَا(۲۴)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या वोह क़ुरआन को सोचते नहीं या बाज़े दिलों पर उन के क़ुफ़्ल लगे हैं।[9]

सूरतुन्निसा में भी फ़रमाया :

﴿اَفَلَا یَتَدَبَّرُوۡنَ الۡقُرۡاٰنَ ؕ وَ لَوۡ كَانَ مِنۡ عِنۡدِ غَیۡرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوۡا فِیۡهِ اخۡتِلَافًا كَثِیۡرًا(۸۲)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो क्या ग़ौर नहीं करते क़ुरआन में और अगर वोह ग़ैर ख़ुदा के पास से होता तो ज़रूर उस में बहुत इख़्तिलाफ़ पाते।[10]

क़ुरआन का येह पहलू बहुत अहम है कि येह इन्सान को तफ़क्कुर और तदब्बुर की दावत देता है। येह कोई ऐसी किताब नहीं जिसे बग़ैर समझे मह़ज़ पढ़ लिया जाए बल्कि इस का मक़्सद येह है कि इन्सान इस के मआ़नी में ग़ौर करे, इस की आयात पर तदब्बुर करे, अल्लाह पर ईमान लाए, तालीमाते क़ुरआन पर अ़मल करे और फिर उन की रौशनी में अपनी ज़िन्दगी को संवारे। क़ुरआन काइनात की निशानियों की त़रफ़ मुतवज्जेह करता है, आस्मानों और ज़मीन की तख़्लीक़, सूरज और चांद के निज़ाम, बारिश और नबातात, इन्सानी जिस्म की साख़्त, और दीगर बेशुमार ह़क़ाइक़ का ज़िक्र कर के इन्सान को सोचने पर मजबूर करता है। मुआ़शरे में जब लोग क़ुरआन पर तदब्बुर करना छोड़ देते हैं तो वोह मह़ज़ रस्मी तिलावत तक मह़दूद हो जाते हैं और क़ुरआन की तालीमात उन की ज़िन्दगियों में कोई तब्दीली नहीं लातीं।

पिछली किताबों की तस्दीक़ नुज़ूले क़ुरआन का एक मक़्सद क़ुरआने करीम में येह इरशाद फ़रमाया गया है कि येह किताब साबिक़ा आस्मानी किताबों की तस्दीक़ करने के लिये नाज़िल की गई। सूरए आले इ़मरान में अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है :

﴿نَزَّلَ عَلَیۡكَ الۡكِتٰبَ بِالۡحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیۡنَ یَدَیۡهِ وَ اَنۡزَلَ التَّوۡرٰىةَ وَ الۡاِنۡجِیۡلَ(۳)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उस ने तुम पर येह सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती और उस ने इस से पहले तौरेत और इन्जील उतारी।[11]

सूरतुल माइदा में फ़रमाया :

﴿وَ اَنۡزَلۡنَاۤ اِلَیۡكَ الۡكِتٰبَ بِالۡحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَیۡنَ یَدَیۡهِ مِنَ الۡكِتٰبِ وَ مُهَیۡمِنًا عَلَیۡهِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब हम ने तुम्हारी त़रफ़ सच्ची किताब उतारी अगली किताबों की तस्दीक़ फ़रमाती और उन पर मुह़ाफ़िज़ व गवाह।[12]

सूरतुल बक़रह में भी फ़रमाया :

﴿وَ لَمَّا جَآءَهُمۡ كِتٰبٌ مِّنۡ عِنۡدِ اللّٰهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمۡ ۙ وَ كَانُوۡا مِنۡ قَبۡلُ یَسۡتَفۡتِحُوۡنَ عَلَى الَّذِیۡنَ كَفَرُوۡا ۚۖ فَلَمَّا جَآءَهُمۡ مَّا عَرَفُوۡا كَفَرُوۡا بِهٖ ۫ فَلَعۡنَةُ اللّٰهِ عَلَى الۡكٰفِرِیۡنَ(۸۹)﴾

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और जब उन के पास अल्लाह की वोह किताब (क़ुरआन) आई जो उन के साथ वाली किताब (तौरेत) की तस्दीक़ फ़रमाती है और उस से पहले उसी नबी के वसीले से काफ़िरों पर फ़त्ह मांगते थे तो जब तशरीफ़ लाया उन के पास वोह जाना पहचाना उस से मुन्किर हो बैठे तो अल्लाह की लानत मुन्किरों पर।[13]

येह आयात वाज़ेह करती हैं कि क़ुरआन ने तौरात और इन्जील की अस्ल तालीमात की तस्दीक़ की लेकिन साथ ही इन बातों को वाज़ेह किया जिन्हें पहले मानते थे और बाद में उन का इन्कार कर बैठे। अहले किताब ने अपनी आस्मानी किताबों में तब्दीलियां कीं, कुछ ह़िस्से छुपाए, कुछ ग़लत़ तश्रीह़ात कीं और अपने मफ़ादात के मुत़ाबिक़ अहकाम बदल दिये। क़ुरआन ने आ कर अस्ल तौह़ीद, रिसालत और आख़िरत के अ़क़ाइद और तालीमात को दोबारा वाज़ेह किया। येह हमारे लिये भी सबक़ है कि हम क़ुरआन की ह़िफ़ाज़त करें, इस में किसी क़िस्म की तावीले फ़ासिद या तह़रीफ़ से बचें और इसे इसी त़रह आगे मुन्तक़िल करें जैसे हम तक पहुंचा है। मुआ़शरे में जब लोग क़ुरआन की तालीमात को अपनी ख़्वाहिशात के मुत़ाबिक़ ढालने की कोशिश करते हैं तो वोह दर अस्ल वोही ग़लत़ी दोहराते हैं जो अहले किताब ने की। क़ुरआन की अस्ल तालीम पर क़ाइम रहना हमारी ज़िम्मेदारी है।

---

(1) پ6، المآئدۃ: 3 (2) پ8، الانعام: 115 (3) پ19، الفرقان: 32 (4) پ12، ھود: 120 (5) پ14، النحل: 44 (6) پ1، البقرۃ: 99 (7) پ6، المآئدۃ: 15 (8) پ23، صٓ: 29 (9) پ26، محمد: 24 (10) پ5، النسآء: 82 (11) پ3، اٰل عمرٰن: 3 (12) پ6، المآئدۃ: 48 (13) پ1، البقرۃ: 89۔

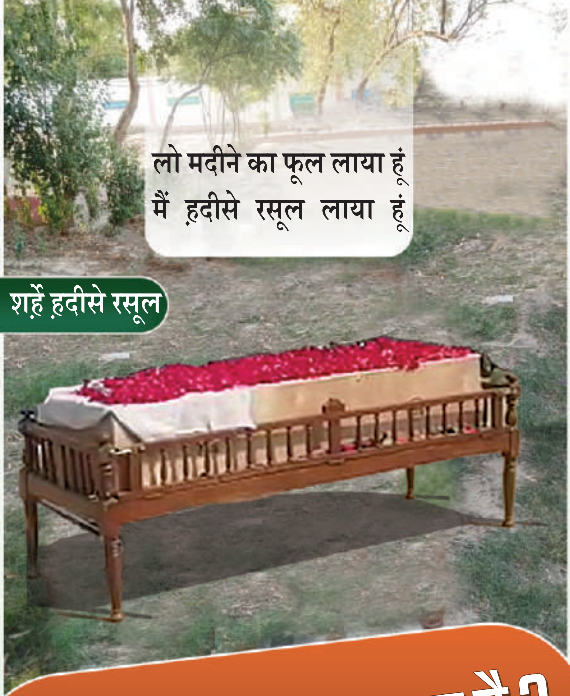

मरने वाला क्या कहता है ?
(What Does the Deceased Say?)

बुख़ारी शरीफ़ में है : अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुहम्मदे अ़रबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया :

اِذَا وُضِعَتِ الْجِنَازَةُ، فَاحْتَمَلَهَا الرِّجَالُ عَلٰى اَعْنَاقِهِمْ، فَاِنْ كَانَتْ صَالِحَةً قَالَتْ: قَدِّمُوْنِي، قَدِّمُوْنِي، وَ اِنْ كَانَتْ غَيْرَ صَالِحَةٍ قَالَتْ: يَا وَيْلَهَا، اَيْنَ يَذْهَبُوْنَ بِهَا يَسْمَعُ صَوْتَهَا كُلُّ شَيْءٍ اِلَّا الْاِنْسَانَ، وَلَوْ سَمِعَهَا الْاِنْسَانُ لَصَعِقَ

तर्जमा : जब जनाज़ा रख दिया जाए और लोग इसे अपने कन्धों पर उठा लें, अगर मरने वाला नेक इन्सान हो तो कहता है : मुझे आगे बढ़ाओ, मुझे आगे बढ़ाओ और अगर नेक न हो तो कहता है : हाय बर्बादी ! तुम इस जनाज़े को कहां ले कर जा रहे हो ? इन्सान के इ़लावा हर चीज़ उस की आवाज़ सुनती है, अगर इन्सान उसे सुन ले तो बेहोश हो जाए।[1]

अल्फ़ाज़े ह़दीस की मुख़्तसर वज़ाह़त

اِذَا وُضِعَتِ الْجِنَازَةُ : "जनाज़ा" का लफ़्ज़ मय्यित के लिये भी बोला जाता है और इस चारपाई पर भी जिस पर मय्यित (मरने वाले) को उठाया जाता है।[2] मुराद येह है कि जब मय्यित को लोगों के सामने चारपाई पर रख दिया जाए ताकि वोह अपने कन्धों पर उठा कर क़ब्रिस्तान ले जाएं।[3]

قَدِّمُوْنِي، قَدِّمُوْنِي : यानी मुझे जल्दी मेरे ठिकाने तक पहुंचाओ, क्यूंकि मय्यित जन्नत में अपने बुलन्द दर्जे देख रही होती है।[4] ज़ाहिर येही है कि मुर्दा ब ज़बाने क़ाल येह गुफ़्तगू करता है क्यूंकि उसे नज़्अ़ में ही अपने आइन्दा ह़ाल का पता चल जाता है, अब इसे यहां ठहरना वबाल मालूम होता है। इस लिये कहता है : जल्दी पहुंचाओ।[5] ह़ज़रते अ़ल्लामा मुल्ला अ़ली क़ारी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं: अल्लाह रब्बुल आ़लमीन इस बात पर क़ादिर है कि वोह मुर्दे को इस त़रह़ ज़िन्दा कर दे जिस त़रह़ क़ब्र में सुवाल जवाब के लिये ज़िन्दा करता है और सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से भी येह बात साबित है कि मुन्कर नकीर के क़ब्र में आने से पहले मुर्दा सुनता है जैसा कि ह़दीसे पाक में है : मुर्दा दफ़्न कर के जाने वालों की जूतों की आवाज़ सुनता है फिर उस के पास (मुन्कर नकीर) दो फ़रिश्ते आते हैं। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सई़द ख़ुदरी رَضِىَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि ह़ुज़ूर नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : मय्यित अपने ग़ुस्ल देने वाले, उठाने वाले, कफ़न देने वाले और क़ब्र में उतारने वाले सब को पहचानती है।[6]

يَا وَيْلَهَا : इस का मत़लब है : हाय उस जनाज़े की तबाही।[7] अस्ल येह يَا وَيْلِي होना चाहिये था यानी "हाय मेरी बर्बादी" तुम मुझे कहां ले जा रहे हो ? लेकिन यहां ज़मीरे ग़ाइब "ھا" लाई गई है क्यूंकि जब मय्यित देखती है कि वोह नेक नहीं तो गोया वोह अपने आप से नफ़रत करती है और अपनी ज़ात को जनाज़ा से अलग तसव्वुर करती है और "हलाकत" को अपनी ज़ात की त़रफ़ मन्सूब करना ना पसन्द करते हुए जनाज़े के बारे में कहती है : तुम उसे कहां ले जा रहे हो ? और मय्यित "يَا وَيْلَهَا" इस लिये कहती है कि उसे मालूम होता है कि उस ने नेकी आगे नहीं भेजी और येह कि अब वोह ऐसे अन्जाम की त़रफ़ बढ़ रही है जो उसे ना पसन्द है, इस लिये वोह इस त़रफ़ जाने को बुरा समझती है।[8]

يَسْمَعُ صَوْتَهَا كُلُّ شَيْءٍ : उस की आवाज़ हर चीज़ सुनती है ह़त्ता कि बेजान चीज़ें भी सिवाए इन्सान के, उस को येह आवाज़ नहीं सुनाई देती। येह इस बात की सरीह़ दलील है कि येह बात ह़क़ीक़तन होती है, मगर येह भी हो सकता है कि यहां "**सुनने**" से मुराद "**समझना**" हो, जैसा कि क़ुरआने करीम में है : ﴿وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : हां तुम उन की तस्बीह़ नहीं समझते।[9]

لَوْ سَمِعَهَا الْاِنْسَانُ لَصَعِقَ : यानी मरने वाला ऐसी ख़ौफ़नाक आवाज़ से चीख़ता है कि अगर कोई इन्सान उसे सुन ले तो बेहोश हो जाए या मर जाए।[10] इन्सान को येह आवाज़ न सुनवाने में ह़िक्मत येह है कि कहीं ऐसा न हो कि दुनिया का निज़ाम क़ाइम न रहे और ईमान "ग़ैब" के बजाए "मुशाहदा" बन जाए। इसी लिये कहा जाता है कि अगर दुनिया में बे ख़बर और ग़ाफ़िल लोग न हों तो दुनिया का निज़ाम टूट जाए। और येह भी कहा गया : ग़फ़्लत ही इन्सान को दुनिया से सफ़र को रोके रखती है।[11] मिरआतुल मनाजीह़ में है : "अगर मुर्दे की येह आवाज़ इन्सान सुन लें तो वोह बेहोश हो जाएं" मुर्दे की येह आवाज़ जानवर, फ़िरिश्ता, कंकर, पत्थर सब सुनते हैं इन्सान को इस लिये न सुनाई गई कि अव्वलन तो इस में इस आवाज़ की बरदाश्त की त़ाक़त नहीं। दूसरे इस पर ईमान बिल ग़ैब लाज़िम है अगर वोह आवाज़ सुन ले तो ईमान बिलग़ैब न रहे।[12]

ख़ुलासा

नेक व सालेह़ इन्सान वफ़ात के बाद अपनी आख़िरी मन्ज़िल की त़रफ़ जाने के लिये बेताब होता है जब कि गुनहगार व बदकार काफ़िर शख़्स अपने आमाल की वज्ह से हैबत व ख़ौफ़ में मुब्तला होता है।[13]

सोचने की बात

क़ारेईन ! 10, 20, 30, 40, 50, 60, या 70 साल जितनी ज़िन्दगी हम ने गुज़ारनी थी गुज़ार ली, अब मज़ीद कितने मिनट, घंटे, दिन महीने या साल जिएंगे ? येह हमारे मालिक व परवरदिगार को मालूम है। ज़रूरत इस बात की है कि लम्ह़ए मौजूद में हम अपनी गुज़श्ता ज़िन्दगी के रिकॉर्ड को क्लीन एन्ड नीट कर लें, और इस का त़रीक़ा येह है कि हम अपने गुनाहों से सच्ची तौबा कर लें और आइन्दा ज़िन्दगी को इन अह़कामात के तह़त बसर करें जो अल्लाह व रसूल صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हमें दिये हैं।

एक मिसाल

जिस को अपनी अच्छी कारकर्दगी पर इन्आ़म वुसूल करने के लिये स्टेज पर बुलाया जाए तो वोह ख़ुशी से फूले नहीं समाता और तेज़ तेज़ क़दमों से स्टेज की त़रफ़ बढ़ता है, इस के बर अ़क्स सज़ाए मौत के क़ैदी को फांसी घाट की त़रफ़ ले जाया जाए तो उस के क़दम मन मन भर के हो जाते हैं जिस की वज्ह से चलना दोभर हो जाता है, बाज़ों को तो अ़म्ले के लोग दोनों कन्धों से उठा कर फांसी घाट की त़रफ़ ले कर जाते हैं, क़ैदी की येह ह़ालत इस लिये होती है कि इसे अपना अन्जाम दिखाई दे रहा होता है।

तसव्वुर कीजिये

अपनी ज़ेहन साज़ी के लिये इस ह़दीसे पाक को अपनी ज़ात पर यूं नाफ़िज़ कर के देखिये कि एक दिन आप का भी जनाज़ा उठेगा और उस के बाद दो ऑप्शन होंगे : (1) आप ख़ुशी ख़ुशी कहेंगे मुझे मेरी क़ब्र तक जल्दी जल्दी ले चलो क्यूंकि आप को अपनी क़ब्र के ह़ालात अच्छे, बारौनक़ और राह़तों वाले दिखाई दे रहे होंगे, या (2) आप रोते बिल्बिलाते, चीख़ते चिल्लाते अपने अहले ख़ाना और जनाज़ा उठाने वालों से कहेंगे कि मुझे कहां ले जा रहे हो ? क्यूंकि आप को क़ब्र की हौलनाकियां नज़र आ रही होंगी। येह आवाज़ इतनी ख़ौफ़नाक होगी कि अगर दूसरे इन्सान सुन लें तो बेहोश हो जाएं, उन की जान भी जा सकती है, तो ख़ुद आप का क्या ह़ाल होगा ?

अब फ़ैसला आप के हाथ में है कि कौन सा ऑप्शन मुन्तख़ब करना है "**मुझे जल्दी जल्दी ले चलो**" वाला या "**मुझे कहां ले जा रहे हो**" वाला ? यक़ीनन हम में से हर एक पहले ऑप्शन को चुनेगा। इस के लिये हमें अल्लाह और उस के रसूल صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को राज़ी करना होगा और इस के लिये नेकियों को अपनाना और गुनाहों को छोड़ना होगा। इस में आसानी के लिये दीनी किताबों का मुत़ालआ़ कीजिये, नेक सोह़बत इख़्तियार कीजिये। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! दावते इस्लामी का माह़ौल इस में बहुत मुफ़ीद, ज़रूरी और मुआ़विन है, इस दीनी तन्ज़ीम को ज्वाइन कर लीजिये, اِنْ شَآءَ اللّٰہ कामयाबी आप के क़दम चूमेगी।

दुआ़ है कि अल्लाह रब्बुल आ़लमीन हम से राज़ी हो जाए और बेह़िसाबो किताब मग्फ़िरत व बख़्शिश से नवाज़ दे।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) بُخاری، 1/465، حدیث:1380 (2) عمدۃ القاری، 6/157، تحت الحدیث: 1316 (3) مرقاۃ المفاتیح، 4/133، تحت الحدیث:1647- مراٰۃ المناجیح، 2/466 ملخصاً (4) مرقاۃ المفاتیح، 4/133، تحت الحدیث : 1647 (5) مراٰۃ المناجیح، 2/466 (6) مرقاۃ المفاتیح، 4/133، تحت الحدیث : 1647 ملخصاً (7) مرقاۃ المفاتیح، 4/133، تحت الحدیث: 1647 (8) دیکھئے: عمدۃ القاری، 6/154، تحت الحدیث : 1314 (9) پ15، بنی اسرآءیل:44- مرقاۃ المفاتیح، 4/133، تحت الحدیث: 1647 (10) عمدۃ القاری، 6/154، تحت الحدیث:1314 (11) مرقاۃ المفاتیح، 4/133، تحت الحدیث:1647 (12) مراٰۃ المناجیح، 2/467 (13) فیضان ریاض الصالحین، 4/586۔

आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुहम्मदे अ़रबी की अश्कबारी

अल्लाह करीम ने इन्सान को एह़सास की नेमत से नवाज़ा है, इसी नेमत की बदौलत इन्सान ख़ुशी के मौक़अ़ पर मुस्कुराता है और ग़म के मौक़अ़ पर कभी रंजीदा हो जाता है और कभी रो पड़ता है। हंसना और रोना दोनों अल्लाह पाक की त़रफ़ से है चुनान्चे क़ुरआने करीम में है : ﴿وَ اَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَ اَبْكٰى(۴۳)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और येह कि वोह ही है जिस ने हंसाया और रुलाया।[1]

अल्लाह की करम नवाज़ी देखिये कि उस ने रोने को ग़म के वक़्त ढारस, मुसीबत के वक़्त तसल्ली और ह़ौसले को पस्त होने से बचाने का ज़रीआ़ बनाया है। अल्लाह की रह़मत देखिये कि उस ने आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मुबारक ज़ात को दीगर मुआ़मलाते ज़िन्दगी की त़रह़ ख़ुशी और ग़मी के मवाक़ेअ़ में भी हमारे लिये रहबर व रहनुमा बनाया है, हमारे करीम आक़ा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अश्कबारी फ़रमा कर इस उम्मत को तालीम दी है, आइये ! हम अपने आक़ा करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अन्दाज़े अश्कबारी से मुतअ़ल्लिक़ चन्द वाक़िआ़त का इ़ल्म ह़ासिल करते हैं :

दौराने नमाज़ अश्कबारी

1 शेरे ख़ुदा ह़ज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : बद्र के दिन ह़ज़रते मिक़्दाद رَضِیَ اللہُ عَنْہ के सिवा हम में कोई घुड़ सुवार न था। मैं ने देखा कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इ़लावा सब सोए हैं, आप एक दरख़्त के नीचे नमाज़ पढ़ रहे हैं और रो रहे हैं यहां तक कि सुब्ह़ हो गई।[2]

2 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन शख़ीर رَضِیَ اللہُ عَنْہ फ़रमाते हैं: मैं अल्लाह के रसूल صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा तो आप नमाज़ पढ़ रहे थे और रोने की वज्ह से आप के सीने से हंडिया (उबलने) जैसी आवाज़ आ रही थी।[3]

अल्लाह करे कि हमें भी इस अन्दाज़े मुस्त़फ़ा का सदक़ा नसीब हो। नमाज़ में रोते हुए चन्द बातों की एह़तियात़ लाज़िम है : 1 नमाज़ी ख़ुशूअ़ अपनाए, जहां अल्लाह के अ़द्ल का ख़ौफ़ दिल में हो वहीं उस की रह़मत से भी उम्मीद लगी रहे। 2 जहन्नम के ख़ौफ़ और जन्नत के इश्तियाक़ में बग़ैर आवाज़ के रोने में कोई ह़रज नहीं। 3 नमाज़ के दौरान रोते हुए आह, ओह, तुफ़, येह अल्फ़ाज़ दर्द या मुसीबत की वज्ह से निकले या आवाज़ से रोया और ह़र्फ़ पैदा हुए, इन सब सूरतों में नमाज़ जाती रही, नमाज़ टूटने की वज्ह येह है कि इस त़रह रोना बत़ौरे शिकायत के है और मक़्सद येह बताना है कि "मुझे तक्लीफ़ है या मुझे मुसीबत आई।" येह लोगों का कलाम है जो कि नमाज़ को फ़ासिद कर देता है। अगर येह अल्फ़ाज़ जन्नत व दोज़ख़ की याद में कहे, तो नमाज़ फ़ासिद न हुई क्यूंकि इस सूरत में येह अल्फ़ाज़े दुआ़, त़लबे रह़मत और मुआ़फ़ी मांगने के दर्जे में हैं इस वज्ह से नमाज़ नहीं टूटेगी।[4]

क़ुरआन सुनते वक़्त अश्कबारी

रसूले अकरम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللہُ عَنْہ से तिलावते क़ुरआन करने का फ़रमाया तो आप ने तअ़ज्जुब से अ़र्ज़ की : मैं (क़ुरआन की) तिलावत करूं ? ह़ालांकि

(येह क़ुरआन) उतरा आप पर है ? फ़रमाया : दूसरे से सुनना मुझे अच्छा लगता है। चुनान्चे रसूले अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सामने हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने सूरए निसा की तिलावत की, जब इस आयत पर पहुंचे : ﴿فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍۭ بِشَهِيْدٍ وَّ جِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰۤؤُلَآءِ شَهِيْدًا (۴۱)﴾ (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : तो कैसी होगी जब हम हर उम्मत से एक गवाह लाएं और ऐ महबूब तुम्हें इन सब पर गवाह और निगेहबान बना कर लाएं।)[5] तो आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अभी इतना काफ़ी है। (यानी अगली आयत मत पढ़ना क्यूंकि मैं इस आयत में ग़ौरो फ़िक्र कर रहा हूं, गिर्या व ज़ारी की कैफ़िय्यत मुझ पर त़ारी है, येह कैफ़िय्यत मज़ीद तिलावते क़ुरआन सुनने में रुकावट बनेगी।) हज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : मैं ने (तिलावते क़ुरआन से रोकने का सबब जानने के लिये) रसूले करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ तवज्जोह की तो आप की दोनों आंखों से आंसू जारी थे।[6]

क़ब्रिस्तान में अश्कबारी

हज़रते बरा बिन आ़ज़िब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : हम रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ एक जनाज़े में शरीक थे, आप क़ब्र के किनारे बैठे और इतना रोए कि (आप के आंसूओं से) मिट्टी नम हो गई। फिर फ़रमाया : يَااِخْوَانِىْ لِمِثْلِ هٰذَا فَاَعِدُّوْا यानी ऐ मेरे भाइयो ! इस जैसी (क़ब्र) के लिये (क़ब्र में साथ जाने वाली नेकियां) तय्यार रखो।[7] इस ह़दीस को पढ़ने के बाद हमारा क़ब्रिस्तान जाने का अन्दाज़ बदल जाना चाहिये।

फ़िक्रे उम्मत में अश्कबारी

हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने क़ुरआने पाक में से हज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के इस क़ौल की तिलावत फ़रमाई : ﴿رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِیْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِیْ فَاِنَّهٗ مِنِّیْ ۚ وَ مَنْ عَصَانِیْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ (۳۶)﴾ (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : ऐ मेरे रब बेशक बुतों ने बहुत लोग बहका दिये तो जिस ने मेरा साथ दिया वोह तो मेरा है और जिस ने मेरा कहा न माना तो बेशक तू बख़्शने वाला मेहरबान है।)[8] और वोह आयत तिलावत फ़रमाई जिस में हज़रते ई़सा عَلَیْہِ السَّلَام का येह क़ौल है : ﴿اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ (۱۱۸)﴾ (तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर तू इन्हें अ़ज़ाब करे तो वोह तेरे बन्दे हैं और अगर तू इन्हें बख़्श दे तो बेशक तू ही है ग़ालिब ह़िक्मत वाला)[9] तो रसूले करीम रऊफ़ुर्रहीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर गिर्या त़ारी हो गया और अपने हाथ उठा कर दुआ़ की : "ऐ अल्लाह ! मेरी उम्मत, मेरी उम्मत।" अल्लाह पाक ने हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया : "ऐ जिब्रील ! मेरे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में जाओ", तुम्हारा रब ख़ूब जानता है मगर उन से पूछो कि इन्हें क्या चीज़ रुला रही है। हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और पूछा तो उन्हें रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी अ़र्ज़ मारूज़ की ख़बर दी। अल्लाह पाक ने हज़रते जिब्रील عَلَیْہِ السَّلَام से फ़रमाया : तुम मेरे ह़बीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास जाओ और उन से कहो : اِنَّا سَنُرْضِيْكَ فِىْ اُمَّتِكَ وَلَا نَسُوْءُكَ यानी आप की उम्मत की बख़्शिश के मुआ़मले में हम आप को राज़ी कर देंगे और आप को ग़मगीन न करेंगे।[10]

मौत पर अश्कबारी

1 आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़रज़न्द हज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ की रज़ाई वालिदा का नाम हज़रते ख़ौला बिन्ते मुन्ज़िर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا है, इन के शौहर का नाम बरा बिन औस अन्सारी था वोह **"अबू सैफ़ लोहार"** कहलाते थे।[11] हज़रते अनस رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बयान करते हैं : (एक मरतबा) हम रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ अबू सैफ़ लोहार के घर गए, वोह हज़रते इब्राहीम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के रज़ाई वालिद थे। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते इब्राहीम को उठाया, उन्हें बोसा दिया और सूंघा। इस के बाद हम दोबारा गए जब कि इब्राहीम आख़िरी सांसें ले रहे थे, (उन की येह हालत देख कर) रसूलुल्लाह

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आंखों से आंसू बहने लगे । ह़ज़रते अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप भी (रो रहे हैं जब कि आप ने मुसीबत पर सब्र करने का और मय्यित पर न रोने का हुक्म दिया है) फ़रमाया : ऐ इब्ने औ़फ़ ! (येह रोना बेसब्री और नाशुक्री के लिये नहीं है बल्कि) येह रह़मत है (जो हर बाप को अपने बेटे से होती है) । फिर दोबारा आंसू निकले तो फ़रमाया : बेशक आंख आंसू बहा रही है, दिल भी ग़मज़दा है मगर हम सिर्फ़ वोही कहेंगे जिस से हमारा रब राज़ी हो और ऐ इब्राहीम ! तेरी जुदाई पर हम ग़मज़दा हैं ।[12]

2 रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपनी साह़िबज़ादी ह़ज़रते ज़ैनब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के घर तशरीफ़ लाए, ह़ज़रते सअ़्द बिन उ़बादा और ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन जबल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا भी साथ थे, रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को आप का नवासा दिया गया उस वक़्त बच्चे का सांस उखड़ रहा था । येह देख कर आप की आंखें अश्कबार हो गईं । ह़ज़रते सअ़्द बिन उ़बादा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! येह क्या है ? फ़रमाया : هٰذِهٖ رَحْمَةٌ جَعَلَهَا اللّٰهُ فِي قُلُوْبِ عِبَادِهٖ، وَاِنَّمَا يَرْحَمُ اللّٰهُ مِنْ عِبَادِهِ الرُّحَمَاءَ यानी येह वोही रह़मत है जिसे अल्लाह पाक ने अपने बन्दों के दिलों में डाला है, अल्लाह पाक अपने रह़म दिल बन्दों पर रह़म फ़रमाता है ।[13]

तालीमे अश्कबारी के नताइज व असरात

ग़ौर कीजिये कि हमारे रब ने कितनी करम नवाज़ी फ़रमाई कि हमें सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दामने करम से वाबस्ता कर दिया, सोह़बते मुस्त़फ़ा ने सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان को ख़ूब नवाज़ा, अश्के मुस्त़फ़ा से फ़ैज़ पा कर दिल को रिक़्क़त व सोज़ और शफ़्क़त व एह़सास जैसी ख़ूबियों से आरास्ता किया, सह़ाबए किराम से येह फ़ैज़ ताबेईन, अइम्मए मुज्तहिदीन, औलियाए कामिलीन और उ़लमा व सुलह़ा में मुन्तक़िल हो कर दुनिया भर में आ़म हुवा और इस्लाम की रौशन तालीमात हर त़ब्क़े तक पहुंचाने का ज़रीआ़ बना । अन्दाज़े मुस्त़फ़ा से ह़ासिल शुदा तालीमे अश्कबारी आज भी दुनिया से सफ़ाकिय्यत व बरबरिय्यत के ख़ातिमे के लिये मुअस्सिर है, एह़सासे ज़िम्मेदारी को जगाने में मुआ़विन है, इन्सान को मुस्बत फ़िक्र की तरबियत देने में मददगार है, इजतिमाई़ बेह़िसी से पैदा होने वाली हौलनाकी से निकालने का रास्ता है । यहां येह बताना ज़रूरी है कि दावते इस्लामी की तरक़्क़ी व कामयाबी के बहुत सारे अ़वामिल हैं उन में दर्सो बयान, सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त और दीगर दीनी कामों के ज़रीए अन्दाज़े मुस्त़फ़ा से ह़ासिल शुदा तालीमे अश्कबारी का किरदार बहुत बुन्यादी और निहायत अहम है, दावते इस्लामी में येह सिखाया जाता है कि

रोना मुसीबत का मत रो तू प्यारे नबी के दीवाने
कर्बो बला वाले शहज़ादों पर भी तू ने ध्यान किया

बारगाहे इलाही में यूं इल्तिजा करने की तरबियत दी जाती है :

या रब ! ग़मे ह़बीब में रोना नसीब हो
आंसू न राइगां हों ग़मे रोज़गार में

बारगाहे मुस्त़फ़ा में यूं अ़र्ज़ करने का सलीक़ा सिखाया जाता है :

रोना भी सिखा दो और सिखला दो तड़पना भी
बुलवा के शहंशाहे अबरार मदीने में

ख़ौफ़े ख़ुदा और इ़श्क़े मुस्त़फ़ा में रोने की अहमिय्यत यूं ज़ेहन नशीन करवाई जाती है :

रोने वाली आंखें मांगो रोना सब का काम नहीं
ज़िक्रे मह़ब्बत आ़म है लेकिन सोज़े मह़ब्बत आ़म नहीं

ख़ौफ़े ख़ुदा, इ़श्क़े मुस्त़फ़ा, फ़िक्रे आख़िरत में रोने वाली आंखें जिसे मिल जाती हैं और फिर वोह अपनी और सारी दुनिया के लोगों की इस्लाह़ का जज़्बा ले कर मैदाने अ़मल में उतरता है तो अल्लाह करीम के करम से तरक़्क़ी व कामयाबी उस का इस्तिक़बाल करती है ।

---

(1)پ27، النجم:43(2)مسند احمد، 2/299، حدیث:1023(3)ابو داؤد، 1/342، حدیث:904(4)شرح ابوداؤد للعینی، 4/126، تحت الحدیث: 881، مرقاۃ المفاتیح، 3/82، تحت الحدیث:1000، بہارشریعت، 1/608(5)پ5، النسآء:41(6)بخاری، 3/416، حدیث:5050، مرقاۃ المفاتیح، 4/694، تحت الحدیث: 2195، دلیل الفالحین، 2/361، تحت الحدیث:446(7)ابن ماجہ، 4/466، حدیث: 4195 (8)پ13، ابراھیم:36(9)پ7، المآئدۃ:118 (10) مسلم، ص109، حدیث: 499(11)اللامع الصبیح، 5/215ماخوذاً(12)بخاری، 1/441، حدیث:1303، منحۃ الباری، 3/377، تحت الحدیث:1303(13)بخاری، 4/532، حدیث:7377۔

मदनी मुज़ाकरे के सुवाल जवाब

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुहम्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी** دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मदनी मुज़ाकरों में अ़क़ाइद, इ़बादात और मुआ़मलात के मुतअ़ल्लिक़ किये जाने वाले सुवालात के जवाबात अ़त़ा फ़रमाते हैं, उन में से 14 सुवालात व जवाबात काफ़ी तरमीम के साथ यहां दर्ज किये जा रहे हैं।

1 शबे बराअत को क़ब्रिस्तान जाना

सुवाल : क्या शबे बराअत ही में क़ब्रिस्तान जाना ज़रूरी है ?

जवाब : शबे बराअत में क़ब्रिस्तान जाना प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से साबित है। ह़ज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने शबे बराअत में क़ब्रिस्तान जाना सुन्नत लिखा है। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/290) सारा साल रात दिन जब भी क़ब्रिस्तान जाएं मना नहीं है।

2 रोज़ेदार का अपना थूक ह़ल्क़ में उतारना कैसा ?

सुवाल : क्या रोज़े की ह़ालत में अपना थूक निगलने से रोज़ा टूट जाता है ?

जवाब : अपना थूक ख़ुद ही ह़ल्क़ में उतर जाए या जान बूझ कर उतार ले रोज़ा नहीं टूटता। हां ! थूक हथेली पर लिया और अब निगल लिया तो रोज़ा गया।

3 वित्र की दूसरी रक्अ़त में दुआ़ए क़ुनूत पढ़ ली तो ...

सुवाल : रमज़ानुल मुबारक में कोई शख़्स वित्र की दूसरी रक्अ़त में शामिल हुवा और तीसरी रक्अ़त में इमाम के साथ दुआ़ए क़ुनूत पढ़ ली तो क्या वोह अपनी तीसरी रक्अ़त में दोबारा दुआ़ए क़ुनूत पढ़ेगा ?

जवाब : दूसरी रक्अ़त में दुआ़ए क़ुनूत पढ़ ली तो तीसरी रक्अ़त में दोबारा पढ़ने की ह़ाजत नहीं, तीसरी रक्अ़त में सूरतुल फ़ातिह़ा और कोई सूरत मिला कर नमाज़ मुकम्मल कर ले।
(دیکھئے: غنیۃ المتملی، ص421)

4 रोज़े की ह़ालत में भाप लेना कैसा ?

सुवाल : क्या रोज़े की ह़ालत में स्टीम यानी भाप ले सकते हैं ?

जवाब : जी नहीं ! रोज़े की ह़ालत में भाप लेने से रोज़ा टूट जाएगा।

5 फूफी को ज़कात देना कैसा ?

सुवाल : क्या फूफी को ज़कात दे सकते हैं ?

जवाब : अगर ज़कात की मुस्तह़िक़ हैं तो दे सकते हैं।

6 सलातुत्तस्बीह़ में सज्दए सहव वाजिब हो जाए तो क्या करें ?

सुवाल : सलातुत्तस्बीह़ में अगर सज्दए सहव वाजिब हो जाए तो क्या इन सज्दों में भी तस्बीह़ पढ़ें ?

जवाब : बहारे शरीअ़त में है : (सलातुत्तस्बीह़ में) अगर सज्दए सहव वाजिब हो और सज्दा करे तो उन दोनों में तस्बीह़ात न पढ़ी जाएं। (बहारे शरीअ़त, 1/684)

7 मर्ह़ूमीन पर फ़ित़रा वाजिब नहीं होता

सुवाल : क्या मर्ह़ूमीन का फ़ित़रा भी दिया जा सकता है ?

जवाब : मर्ह़ूमीन पर फ़ित़रा वाजिब नहीं होता। हां अगर उन की ज़िन्दगी में उन पर फ़ित़रा वाजिब था और उन्हों ने अदा नहीं किया तो अब अगर औलाद उन की त़रफ़ से अदा कर दे तो अल्लाह पाक की रह़मत से क़बूलिय्यत की उम्मीद की जा सकती है।

8 क़ुरआने पाक को शहीद कहना कैसा ?

सुवाल : जब किसी आ़म किताब का सफ़ह़ा अलग होता है तो उसे फटना कहते हैं और जब क़ुरआने पाक का कोई सफ़ह़ा अलग होता है तो उसे शहीद हो जाना कहा जाता है। क्या ऐसा कहना दुरुस्त है ?

जवाब : बेशक येह अदब की बात है और येही मुनासिब। जब कोई इमारत गिराई जाती है या ख़ुद ही ज़मीन बोस हो जाती है तो उसे मुन्हदिम हो जाना या गिर जाना कहा जाता है और जब येही बात किसी मस्जिद के लिये आती है तो अदबन उसे शहीद हो जाना कहते हैं, बा अदब बा नसीब। शहीद अदब वाला लफ़्ज़ है और उसे हम बचपन से सुनते आ रहे हैं।

9 किसी पीर से त़ालिब होते वक़्त लफ़्ज़ "त़ालिब" बोलना भूल गए तो ?

सुवाल : अपने पीर साह़िब के इ़लावा किसी और से त़ालिब होते वक़्त अगर कोई येह कहना भूल गया कि "त़ालिब होता हूं मैं !" तो क्या पहली बैअ़त टूट जाएगी ?

जवाब : जी नहीं ! बल्कि पहले पीर साह़िब ही का मुरीद रहेगा, क्यूंकि बैअ़त तोड़ने की निय्यत नहीं थी।

10 वली बनने की दुआ़ करना कैसा ?

सुवाल : अपने बेटे को अल्लाह का वली बनाने का क्या त़रीक़ा है ?

जवाब : वली, अल्लाह पाक की अ़त़ा से बनता है, कोशिश से नहीं बनता कि "मैं कोशिश करूं और येह येह कर लूं ताकि वली बन जाऊं।" विलायत वहबी यानी अ़त़ाई है, कसबी नहीं है, (देखिये : फ़तावा रज़विय्या, 21 / 606) यानी कोशिश से नहीं मिलती। अलबत्ता येह दुआ़ कर सकते हैं कि "मेरा बेटा वली बन जाए।" अगर आप को वली बनने का शौक़ है तो अपने लिये भी दुआ़ कर लें कि "हम बाप बेटे वली बन जाएं, बल्कि हमारा सारा ख़ानदान वली बन जाए।" येह दुआ़ करने में ह़रज नहीं है।

11 औ़रतों का इशराक़ व चाश्त के नवाफ़िल पढ़ना

सुवाल : क्या औ़रतें इशराक़ व चाश्त के नवाफ़िल अदा कर सकती हैं ?

जवाब : जी बिल्कुल अदा कर सकती हैं।

12 जाए नमाज़ को पांव से फ़ोल्ड करना कैसा ?

सुवाल : जाए नमाज़ को पांव से फ़ोल्ड करना कैसा है ?

जवाब : नमाज़ पढ़ने के बाद जाए नमाज़ को पांव से फ़ोल्ड करना मुनासिब नहीं है, अगर कोई मजबूरी न हो तो झुक कर फ़ोल्ड करना चाहिये, वैसे भी झुकना एक त़रह़ की एक्सरसाइज़ है जो बन्दे के लिये मुफ़ीद है। जब आप ने नमाज़ पढ़ते हुए सज्दा किया है तो थोड़ा झुक कर जाए नमाज़ भी फ़ोल्ड कर दीजिये।

13 बच्चे के पैदाइशी बाल न कटवाना कैसा ?

सुवाल : क्या बच्चे की पैदाइश के बाद उस के बाल न कटवाने से गुनाह मिलता है ?

जवाब : बच्चे के पैदाइशी बाल कटवाना सुन्नते मुस्तह़ब्बा और सवाब का काम है, (देखिये : बहारे शरीअ़त, 3 / 355) अगर न कटवाए तो कोई गुनाह नहीं है।

14 क्या घर में मकड़ी के जाले लड़ाई का सबब होते हैं ?

सुवाल : लोग कहते हैं : "घरों की दीवारों पर लगे मकड़ी के जाले घरों में लड़ाई का सबब बनते हैं", क्या येह बात दुरुस्त है ?

जवाब : इस बारे में अल्लाह पाक ही बेहतर जानता है, मैं ने ऐसा कहीं नहीं पढ़ा। याद रहे ! घरों की दीवारों पर लगे जालों को साफ़ न करना गुनाह नहीं, मगर साफ़ कर देने चाहियें वरना घर में तंगदस्ती व ग़ुर्बत आती है। (تعلیم المتعلم، ص125)

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत

दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत (दावते इस्लामी) मुसलमानों की शरई राहनुमाई में मसरूफ़े अ़मल है, तह़रीरी, ज़बानी, फ़ोन और दीगर ज़राएअ़ से हज़ारहा मुसलमान शरई मसाइल दरयाफ़्त करते हैं, जिन में से चार मुन्तख़ब फ़तावा ज़ैल में दर्ज किये जा रहे हैं।

1 तक्बीरे क़ुनूत में हाथ न उठाने का हुक्म / क़ुनूते नाज़िला की वज़ाह़त

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि 1 अगर नमाज़ी वित्र की तीसरी रक्अ़त में तक्बीरे क़ुनूत कहते वक़्त हाथ न उठाए तो क्या इस के वित्र दुरुस्त हो जाएंगे, या इस पर वित्र दोहराना.. या.. सज्दए सहव करना लाज़िम होगा ?

2 नीज़ क़ुनूते नाज़िला क्या है ? और क्या इस में भी तक्बीरे क़ुनूत कहते वक़्त हाथों को उठाएंगे ? इस ह़वाले से भी रहनुमाई फ़रमाएं ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

1 वित्र की तीसरी रक्अ़त में दुआए क़ुनूत से पहले तक्बीरे क़ुनूत कहते हुए हाथों को उठाना वाजिब नहीं बल्कि सुन्नते मुअक्कदा है। और सज्दए सहव, नमाज़ का कोई वाजिब सहवन (भूले से) तर्क हो जाने की सूरत में वाजिब होता है जब कि नमाज़ का इआ़दा (दोहराना) जान बूझ कर वाजिब तर्क करने या सज्दए सहव वाजिब होने के बावुजूद न करने की सूरत में वाजिब होता है, नमाज़ की किसी सुन्नत के तर्क पर न तो सज्दए सहव वाजिब होता है और न नमाज़ का इआ़दा वाजिब होता है, अलबत्ता तर्के सुन्नत की वज्ह से नमाज़ का इआ़दा मुस्तह़ब होता है चाहे सुन्नत सहवन तर्क की हो या क़स्दन। याद रहे ! कि बिला उ़ज़्रे शरई जान बूझ कर सुन्नते मुअक्कदा तर्क करना इसाअत (बुरा अ़मल) है और इस के तर्क की आ़दत बना लेना नाजाइज़ व गुनाह है।

नीज़ येह भी ज़ेहन नशीं रहे कि वित्र की क़ज़ा पढ़ते हुए लोगों के सामने तक्बीरे क़ुनूत कहते वक़्त हाथों को नहीं उठाया जाएगा कि इस में गुनाह (यानी वित्र क़ज़ा करने) का इज़्हार है और गुनाह का इज़्हार भी गुनाह है, जिस से बचना शरअ़न लाज़िम व ज़रूरी है।

2 जब मुसलमानों पर कोई बड़ा आ़म ह़ादिसा आ जाए तो फ़ज्र की दूसरी रक्अ़त में रुकूअ़ से पहले दुआए क़ुनूत पढ़ने को **"क़ुनूते नाज़िला"** कहते हैं। अह़नाफ़ के नज़दीक किसी ख़ास मुसीबत के मौक़अ़ पर ही फ़ज्र की दूसरी रक्अ़त में रुकूअ़ से पहले क़ुनूते नाज़िला पढ़ने की इजाज़त है, उ़मूमी ह़ालात में वित्र के इ़लावा किसी भी नमाज़ में क़ुनूत नहीं पढ़ सकते। नीज़ क़ुनूते नाज़िला के लिये कोई मख़्सूस दुआ़ नहीं है, बल्कि आ़म मुसीबत वाक़ेअ़ होने पर जो दुआ़ की जाती है वोही दुआ़ की जाएगी। मसलन त़ाऊ़न आने पर त़ाऊ़न से नजात की दुआ़ की जाएगी और कोई दूसरी वबा आने पर इस वबा से नजात की दुआ़ की जाएगी। नीज़ इस (यानी क़ुनूते नाज़िला) में भी तक्बीरे क़ुनूत कहते वक़्त हाथों को उठाएंगे और इमाम व मुक़्तदी सब आहिस्ता क़ुनूत पढ़ेंगे, जिस मुक़्तदी को क़ुनूत याद न हो वोह आहिस्ता आहिस्ता आमीन कहता रहे।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 अपनी ज़ात के लिये मस्जिद में सुवाल करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मस्जिद में अपनी ज़ात के लिये सुवाल करना शरअ़न जाइज़ है या नहीं ? क्या मस्जिद में अपनी ज़ात के लिये मांगने वाले को देना जाइज़ है या नहीं ? अगर कोई और शख़्स या इमाम साहिब किसी फ़क़ीर को देने की तरग़ीब दें और वोह फ़क़ीर मस्जिद में ही हो तो क्या उन का किसी के लिये मस्जिद में मांगना जाइज़ है या नहीं ? और उन के तरग़ीब दिलाने पर हाजतमन्द को देना शरअ़न जाइज़ है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

मस्जिद में गिड़गिड़ा कर या नमाज़ियों के आगे से गुज़र कर या गर्दनें फलांग कर सुवाल करना अपने लिये या दूसरे के लिये दोनों सूरतों में नाजाइज़ो ह़राम है और अगर येह बातें न हों, तब भी अपनी ज़ात के लिये सुवाल करना मस्जिद में मना है, क्यूंकि जिन कामों के लिये मस्जिद नहीं बनाई जाती, वोह काम मस्जिद में करना मम्नूअ़ होते हैं, जैसे नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिद में गुमशुदा चीज़ का एलान करने से मना करते हुए फ़रमाया कि मस्जिदें इन कामों के लिये नहीं बनाई गई और ऐसे साइल को देना भी मना है, क्यूंकि ऐसे साइल को देने में एक ह़राम या मम्नूअ़ काम पर मदद करना है और मम्नूअ़ काम पर मदद करना भी मम्नूअ़ है, हां अगर किसी शख़्स ने अपनी ज़ात के लिये न मांगा, बल्कि किसी ह़ाजतमन्द की मदद के लिये तरग़ीब दिलाई, अगर्चे ऐसा मस्जिद में ही हुवा हो, जैसे इमाम साहिब का किसी ह़ाजतमन्द की मदद के लिये एलान करना, तो येह न सिर्फ़ जाइज़, बल्कि सुन्नत से साबित है और देना भी सवाब है।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰلهٖ وسلَّم

3 सुन्नते एतिकाफ़ बिला रोज़ा अदा नहीं होता

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए़ मतीन इस मस्अले के बारे में कि जो शख़्स किसी उ़ज़्र की वज्ह से रोज़ा नहीं रख सकता, बग़ैर रोज़ा रखे उस के एतिकाफ़ में बैठने से रमज़ान के आख़िरी अ़शरे का सुन्नत एतिकाफ़ अदा हो जाएगा या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

रमज़ान शरीफ़ के आख़िरी दस दिनों का एतिकाफ़ सुन्नते मुअक्कदा किफ़ाया है कि पूरे अ़लाक़े में किसी ने नहीं किया तो सब सुन्नते मुअक्कदा छोड़ने वाले और इसाअत के मुर्तकिब होंगे और अगर एक शख़्स ने भी कर लिया तो सब बरियुज़्ज़िम्मा हो जाएंगे और इस एतिकाफ़ के दुरुस्त होने के लिये रोज़ा शर्त़ है लिहाज़ा जो शख़्स रोज़ा नहीं रख सकता, उस के बैठने से सुन्नते एतिकाफ़ अदा नहीं होगा।

नोट : एतिकाफ़ की तीन क़िस्में हैं। (1) वाजिब यानी मन्नत का एतिकाफ़। (2) सुन्नते मुअक्कदा किफ़ाया यानी रमज़ान के आख़िरी दस दिनों का एतिकाफ़। इन दोनों के लिये रोज़ा शर्त़ है। (3) नफ़्ल एतिकाफ़ कि जो इन दो के इ़लावा हो, इस में रोज़ा शर्त़ नहीं और इस में वक़्त की भी कोई क़ैद नहीं लिहाज़ा जो किसी उ़ज़्र की वज्ह से रोज़ा नहीं रख सकते लेकिन मस्जिद के आदाब का लिहाज़ रखते हुए एतिकाफ़ कर सकते हैं तो उन्हें चाहिये कि जितना वक़्त मुयस्सर हो मस्जिद में नफ़्ल एतिकाफ़ की निय्यत से बैठ जाएं कि येह भी एक उ़म्दा नेकी है।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰلهٖ وسلَّم

4 मोतकिफ़ का फ़िनाए मस्जिद में साबुन व टूथ पेस्ट इस्तिमाल करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि सुन्नते एतिकाफ़ के दौरान मोतकिफ़ मस्जिद के वुज़ू ख़ाने में साबुन और टूथ पेस्ट इस्तिमाल कर सकता है या नहीं ? जब कि येह वुज़ू ख़ाना फ़िनाए मस्जिद में है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

मोतकिफ़ अगर फ़िनाए मस्जिद में बिला ह़ाजत भी जाए तो एतिकाफ़ नहीं टूटता क्यूंकि फ़िनाए मस्जिद इस मुआ़मले में हुक्मे मस्जिद में है, लिहाज़ा फ़िनाए मस्जिद में मोतकिफ़ ने टूथ पेस्ट किया, हाथ, चेहरा वग़ैरा धोने के लिये साबुन इस्तिमाल किया तो उस से एतिकाफ़ नहीं टूटेगा।

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَرَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰلهٖ وسلَّم

(क़िस्त : 02)

इस्लामी मुआ़शरा ही मिसाली मुआ़शरा है

अल्लाह पाक ने इस्लामी तालीमात में वोह जामेइय्यत रखी है कि सदियां गुज़र जाने के बाद भी मुसलमान इस के मोहताज हैं। साढ़े चौदह सौ साल पहले ज़मीन पर रहने वाले अफ़राद की रहनुमाई से ले कर आज के तरक़्क़ी याफ़्ता कहलाने वाले ज़माने तक इस्लामी तालीमात कामिल व अक्मल त़ौर पर रहबर व रहनुमा हैं। हमारे प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तालीमात जिस त़रह सदियों पहले तिरयाक़ का काम किया करती थीं आज भी उसी त़रह पुर असर और शिफ़ा बख़्श हैं। लोग जैसे जैसे ज़मानए नुबुव्वत से दूर और क़ियामत के क़रीब होते जा रहे हैं मुआ़शरे में झूट, ग़ीबत, चुग़ली, दोग़ला पन, लान त़ान करना, गालम गलोच, बिला वज्ह सताना, दिल दुखाना, बुग़्ज़ो इनाद, ह़सद, बिला वज्ह एक दूसरे की टोह में पड़ना, मुसलमानों को ह़क़ीर समझना, ख़ुद ग़रज़ी, बे राहरवी, मिलावट, धोका, फ़साद, लड़ाई, मार कटाई जैसी ख़राबियां परवान चढ़ती चली जा रही हैं। इन ख़राबियों में बाज़ का तअ़ल्लुक़ अगर्चे फ़र्दे वाहिद के साथ है लेकिन उन में बहुत सी वोह हैं कि जो मुआ़शरे के सुकून, इत़मीनान, चैन, क़रार और अम्नो सलामती को तबाहो बरबाद कर रही हैं। ऐसे में ज़रूरत इस बात की है कि हम अपने प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم और अपने प्यारे दीने इस्लाम की त़रफ़ रुजूअ़ करें, इस्लामी तालीमात को मुआ़शरे में आ़म करें, अपने ख़ालिक़ो मालिक के भेजे हुए आफ़ाक़ी उसूलों को अपनाएं, अपने प्यारे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के त़रीक़ों को ह़िर्ज़े जां बनाएं तो हमारा मुआ़शरा भी ह़क़ीक़ी मदनी मुआ़शरे की तस्वीर बन सकता है। इस लिये कि इस्लाम जिस मुआ़शरे को पसन्द करता और जिस की तालीम देता है वोह ऐसा मिसाली मुआ़शरा है कि जिस में अ़द्लो इन्साफ़ क़ाइम हो, लोग एक दूसरे के ह़ुक़ूक़ का एह़तिराम करें, सच्चाई, अमानत, दियानत और तह़म्मुल व बरदाश्त आ़म हो, कमज़ोरों की मदद को दीनी व अख़्लाक़ी फ़रीज़ा समझा जाए, इख़्तिलाफ़े राय का पूरी फ़राख़ दिली के साथ एह़तिराम किया जाए, बड़ों का अदब और छोटों पर शफ़क़त का मामूल हो, दीनी तालीम का रिवाज हो, इस्लामी तहज़ीब को शिआ़र बनाया जाए, सफ़ाई, नज़्मो ज़ब्त़ और क़ानून की पासदारी मामूल हो, ख़ानदानी निज़ाम मज़बूत़ हो और बाहमी तआ़वुन के मवाक़ेअ़ भी पैदा किये जाएं। हर फ़र्द अपने किरदार, अख़्लाक़ और ज़िम्मेदारियों में संजीदा हो कर पूरे मुआ़शरे की भलाई में अपना किरदार अदा करे। नमूने के त़ौर पर यहां सिर्फ़ चन्द तालीमात ज़िक्र की जाती हैं ताकि हमें इन की अहमिय्यत का एह़सास हो और हम उन्हें अ़मली त़ौर पर अपनाने वाले बन जाएं।

भला करें मुसलमानों का मुसलमानों के काम आना, किसी की मुश्किल आसान करना, किसी की जाइज़ सिफ़ारिश करना, किसी को क़र्ज़ देना, किसी के घर का सामान ला देना, पोशीदा त़ौर पर किसी की मदद करना वग़ैरा ऐसी नेकियां हैं जिन पर अज्रो सवाब भी है और इन में मुआशरे का हुस्न व ख़ूबसूरती भी पोशीदा है। रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो अपने भाई की मदद करने की त़ाक़त रखता हो और वोह इस की पोशीदा मदद करे तो अल्लाह करीम दुनिया व आख़िरत में उस की मदद फ़रमाएगा।[(1)] किसी मुसाफ़िर को लिफ़्ट दे कर उस के लिये आसानी कर देना, पेट्रोल ख़त्म हो जाने वाले बाइक सुवार को टो (Tow) कर के पेट्रोल पम्प तक पहुंचा देना, नाबीना, बुज़ुर्ग या बच्चे को सड़क पार करवा देना येह तो सिर्फ़ चन्द मिसालें हैं वरना ऐसी बेशुमार नेकियां हैं कि जिन्हें कर के हम न सिर्फ़ सवाब कमा सकते हैं बल्कि अपने मुआशरे को अम्न सलामती भाई चारे और ख़ैर ख़्वाही का मिसाली और क़ाबिले तक़्लीद नमूना बना सकते हैं।

जाइज़ सिफ़ारिश पर सवाब इस्लाम तुझ पर हमारी जान क़ुरबान ! क्या पाकीज़ा तालीम है, एक मुसलमान दूसरे का ख़ैर ख़्वाह हो, उस का भला चाहे, दूसरों के काम आए, किसी के काम को बनाने के लिये या किसी को जाइज़ नौकरी पर लगवाने के लिये, किसी की जान बचाने के लिये जाइज़ सिफ़ारिश करे तो उस पर भी अज्र पाए जैसा कि ह़ज़रते समुरह बिन जुन्दब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : सब से अफ़्ज़ल सदक़ा ज़बान का सदक़ा है। सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ज़बान का सदक़ा क्या है ? फ़रमाया : तुम्हारी वोह सिफ़ारिश जिस से किसी क़ैदी को रिहाई दिला दो, किसी का ख़ून गिरने से बचा लो और कोई भलाई अपने भाई की त़रफ़ बढ़ा दो और उस से कोई मुसीबत दूर कर दो।[(2)]

मुसलमान फ़ाइदे में है क्या बात है इस्लाम की प्यारी तालीमात की ! एक मुसलमान अपने दूसरे मुसलमान भाई के काम आने के लिये घर से निकल पड़ा यहीं से येह सवाब कमाने वाला हो गया, अब काम बना दे तो भी फ़ायदा ही फ़ायदा और अगर अपने मुसलमान भाई का काम तो न कर सका अलबत्ता कोशिश ज़रूर की है तो येह भी रायगां नहीं जाएगा इस लिये कि हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स किसी मुसलमान भाई की ह़ाजत रवाई के लिये चलता है अल्लाह पाक हर क़दम के बदले इस के नामए आमाल में सत्तर नेकियां लिख देता है, इस के सत्तर गुनाह मुआफ़ कर देता है, अगर वोह ह़ाजत उस के हाथों पूरी हो जाए तो वोह गुनाहों से ऐसे पाक हो जाता है जैसे अभी पैदा हुवा हो और अगर वोह इसी दरमियान फ़ौत हो जाए तो बिला ह़िसाब जन्नत में जाएगा।[(3)]

अल्लाह को सब से ज़ियादा पसन्दीदा आमाल मुआशरे में उख़ुव्वत, भाईचारा, सुकून, चैन, इत़मीनान लाने वाले काम अल्लाह और रसूल को किस क़दर पसन्द हैं इस रिवायत से बख़ूबी समझा जा सकता है : ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है कि एक आदमी नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अ़र्ज़ की : या रसूलल्लाह ! اَیُّ النَّاسِ اَحَبُّ اِلَی اللہِ، وَاَیُّ الْاَعْمَالِ اَحَبُّ اِلَی اللہِ؟ यानी अल्लाह करीम को कौन से लोग सब से ज़ियादा मह़बूब हैं ? और कौन सा अ़मल अल्लाह पाक को सब से ज़ियादा पसन्द है ? नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : اَحَبُّ النَّاسِ اِلَی اللہِ اَنْفَعُهُمْ لِلنَّاسِ यानी अल्लाह करीम को सब से मह़बूब वोह आदमी है जो लोगों को सब से ज़ियादा फ़ायदा पहुंचाए। وَاَحَبُّ الْاَعْمَالِ اِلَی اللہِ और अल्लाह पाक के नज़्दीक सब से पसन्दीदा अ़मल येह है कि سُرُوْرٌ تُدْخِلُهٗ عَلٰی مُسْلِمٍ यानी तू किसी मुसलमान को ख़ुशी पहुंचाए, اَوْ تَكْشِفُ عَنْهُ كُرْبَةً या उस की

तक्लीफ़ दूर कर दे, اَوْ تَقْضِی عَنْهُ دَیْنًا या उस का क़र्ज़ अदा कर दे, اَوْتَطْرُدُعَنْهُ جُوعًا या उस की भूक दूर कर दे, وَلَإِنْ اَمْشِی مَعَ اَخٍ لِی فِی حَاجَةٍ اَحَبُّ اِلَیَّ مِنْ اَنْ اَعْتَكِفَ فِی هَذَا الْمَسْجِدِ شَهْرًا فِی مَسْجِدِ الْمَدِینَةِ और अगर मैं अपने मुसलमान भाई के साथ उस की ज़रूरत पूरी करने के लिये चलूं तो येह मुझे इस बात से ज़ियादा पसन्द है कि मैं मदीनए तय्यिबा की मस्जिद में एक महीना एतिकाफ़ करूं, وَمَنْ كَفَّ غَضَبَهُ سَتَرَاللّٰهُ عَوْرَتَهُ और जो आदमी अपना ग़ुस्सा रोक ले अल्लाह पाक उस की पर्दा पोशी फ़रमाता है, وَمَنْ كَظَمَ غَيْظَهُ وَلَوْ شَاءَ اَنْ يُمْضِيَهُ اَمْضَاهُ؛ مَلَأَ اللّٰهُ قَلْبَهُ رَجَاءً يَوْمَ الْقِيَامَةِ और जो कोई अपने ग़ुस्से को पी ले जब कि उसे नाफ़िज़ कर सकता था तो अल्लाह पाक क़ियामत के दिन उस का दिल उम्मीद से भर देगा, وَمَنْ مَشٰى مَعَ اَخِيهِ فِی حَاجَةٍ حَتّٰى يُثَبِّتَهَا لَهُ ثَبَّتَ اللّٰهُ قَدَمَهُ يَوْمَ تَزُوْلُ الْاَقْدَامُ और जो कोई अपने मुसलमान भाई की ज़रूरत पूरी करने उस के साथ चला यहां तक कि उस का काम पूरा कर दिया, तो क़ियामत के दिन जब क़दम डगमगा जाएंगे अल्लाह पाक उस के क़दमों को मज़बूती अ़ता फ़रमाएगा।[4]

क्या हर काम में मदद करें ? इस्लामी तालीमात में एक दूसरे की मदद करने के अज्रो सवाब को जान कर ज़ेहन बनता है कि मुसलमानों की मदद की जाए ताकि मुआ़शरे में बाहमी उल्फ़तो मह़ब्बत की फ़ज़ा क़ाइम हो, लेकिन क्या हर काम में हर किसी की मदद करनी चाहिये ? येह जानना बेहद ज़रूरी है कहां मदद करनी है और किस काम में मददगार नहीं बनना इस तक़्सीम को अल्लाह करीम यूं बयान फ़रमाता है : ﴿وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इरफ़ान : और नेकी और परहेज़गारी पर एक दूसरे की मदद करो और गुनाह और ज़ियादती पर बाहम मदद न करो।[5] سُبْحٰنَ اللّٰه ! येह आयते करीमा अपनी मानवी वुस्अ़त और जामेइय्यत में अपनी मिसाल आप है, क्यूंकि इस में तआ़वुन करने और न करने का एक मेयार मुक़र्रर कर दिया गया है। पहले हिस्से में "नेकी और परहेज़गारी" के कामों में बाहमी मदद करने की तरग़ीब है इस तआ़वुन का दाइरएकार बहुत वसीअ़ है जिस में इल्मे दीन की इशाअ़त, दीन की तालीमो तरबियत, दावते इस्लाम की तरवीज, ख़ैर के कामों में माली और अ़मली मदद, इस्लाहे मुआ़शरा की कोशिशें और फ़लाहे आ़म्मा की सरगर्मियां सब शामिल हैं। इल्मे दीन की ख़िदमत, दर्सो तदरीस, दीनी किताबत और इस्लामी तालीमात को दुनिया तक पहुंचाने के लिये बाहमी तआ़वुन इसी क़ुरआनी हुक्म पर अ़मल की बेहतरीन मिसालें हैं। इसी तरह नेकी का हुक्म देना, बुराई से रोकना, अख़्लाक़ी व फ़िक्री बिगाड़ की इस्लाह़ की कोशिश करना और मुआ़शरती फ़लाह़ के मन्सूबों में शिर्कत करना सब "**नेकी और परहेज़गारी में तआ़वुन**" के रौशन नमूने हैं।

आयत के दूसरे हिस्से में "**गुनाह और ज़ियादती**" के कामों में बाहमी तआ़वुन को बिल्कुल मम्नूअ़ क़रार दिया गया है। हर वोह काम जिस में गुनाह और ज़ुल्मो ज़ियादती का पहलू पाया जाए उस में मददगार बनना, तआ़वुन करना अपने आप को जहन्नम में झोंकने के मुतरादिफ़ है, इसी मुमानअ़त में हर वोह चीज़ आती है जो ज़ुल्म, फ़साद, धोका, फ़रेब, हक़ तल्फ़ी, रिश्वत ले कर फ़ैसले बदल देना, झूटी गवाहियां देना, किसी बे क़ुसूर को ज़ुल्म का निशाना बनाना, ज़ालिमों की मदद करना, नाजाइज़ो ह़राम कारोबार का हिस्सा बनना, बुराई के मराकिज़ में मुलाज़मत इख़्तियार करना या ऐसी सरगर्मियों का हिस्सा बनना जिन से दीन और मुआ़शरे को नुक़्सान पहुंचे, लिहाज़ा ज़रूरी है कि मुसलमान क़ुरआन के इस बुन्यादी उसूल को अपना शिआ़र बनाएं, नेकी और तक़्वा में बाहमी तआ़वुन को मज़बूत करें और गुनाह और ज़ियादती के हर रास्ते से दूर रहें। येही वोह उसूल है जो फ़र्द को सालेह़, मुआ़शरे को मज़बूत और उम्मत को बा वक़ार बनाता है। इस लिये हर मुसलमान को चाहिये कि इस्लामी तालीमात पर अ़मल पैरा हो कि इसी में दुनिया की तरक़्क़ी, भलाई और सुकूनो इत़मीनान पोशीदा है और इसी में आख़िरत की कामयाबी का राज़ है।

---

(1)مجمع الزوائد،7/527، حدیث:12139(2)شعب الایمان، 6/124، حدیث:7683(3)الترغیب والترہیب، 3/317،حدیث:4022(4) معجم صغیر، 2/106،حدیث:861(5)پ6،المآئدۃ:2۔

रोज़ा तक़्वा की तरबियत का अ़मली मौक़अ़

अल्लाह पाक ने इन्सान को अपनी इ़बादत के लिये पैदा फ़रमाया है। इन्सान पर जो भी इ़बादात लाज़िम फ़रमाई गई हैं उन्हें बजा लाने और जिन चीज़ों से मना किया है उन से ख़ुद को बचाने में इन्सान का अपना ही फ़ायदा और भला है। अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿اِنْ اَحْسَنْتُمْ اَحْسَنْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ وَ اِنْ اَسَاْتُمْ فَلَهَا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : अगर तुम भलाई करोगे अपना भला करोगे और बुरा करोगे तो अपना।[1] एक और मक़ाम पर इरशाद फ़रमाया : ﴿وَ مَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا یُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِیٌّ عَنِ الْعٰلَمِیْنَ(۶)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "और जो अल्लाह की राह में कोशिश करे तो अपने ही भले को कोशिश करता है बेशक अल्लाह बे परवाह है सारे जहान से।"[2]

अल्लाह पाक हमारी इ़बादात से बेनियाज़ है, कोई इ़बादत करे या न करे उस की शान में कोई कमी नहीं आती। हम इ़बादात के मोह़ताज हैं कि इन के ज़रीए़ हमें अल्लाह पाक की रिज़ा और तक़्वा व परहेज़गारी ह़ासिल होती है। अल्लाह पाक इरशाद फ़रमाता है : ﴿یٰۤاَیُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ وَ الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ(۲۱)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ लोगो ! अपने रब को पूजो जिस ने तुम्हें और तुम से अगलों को पैदा किया येह उम्मीद करते हुए कि तुम्हें परहेज़गारी मिले।"[3]

याद रखिये ! रोज़ा मह़ज़ भूक और प्यास का नाम नहीं बल्कि येह तक़्वा की अ़मली तरबियत का सुनहरी मौक़अ़ फ़राहम करता है। रमज़ान में बन्दा अपनी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पा कर अपने नफ़्स को अल्लाह पाक के अह़कामात पर अ़मल की मश्क़ करवाता है। और मुसल्सल येह कोशिश उस के अन्दर तक़्वा, सब्र और परहेज़गारी के जज़्बात को मज़बूत़ करती है। यूं रोज़ा इन्सान को अ़मली त़ौर पर तक़्वा की ह़क़ीक़ी रूह समझने और उसे अपनी ज़िन्दगी में नाफ़िज़ करने का मौक़अ़ देता है।

रोज़े की फ़र्ज़िय्यत के साथ साथ उस के मक़्सद के बारे में बत़ौरे ख़ास इरशाद फ़रमाया : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَیْكُمُ الصِّیَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ(۱۸۳)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : "ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे अगलों पर फ़र्ज़ हुए थे कि कहीं तुम्हें परहेज़गारी मिले।"[4]

इस आयते करीमा के तह़त तफ़्सीरे सिरात़ुल जिनान में है : रोज़े का मक़्सद तक़्वा व परहेज़गारी का ह़ुसूल है। रोज़े में चूंकि नफ़्स पर सख़्ती की जाती है और खाने पीने की ह़लाल चीज़ों से भी रोक दिया जाता है तो इस से अपनी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पाने की मश्क़ होती है, जिस से ज़ब्ते नफ़्स और ह़राम से बचने पर क़ुव्वत ह़ासिल होती है और येही ज़ब्ते नफ़्स और ख़्वाहिशात पर क़ाबू वोह बुन्यादी चीज़ है जिस के ज़रीए़ आदमी गुनाहों से रुकता है।[5] येही वज्ह है कि निकाह़ की इस्तित़ाअ़त न रखने वालों को रोज़ा रखने का ह़ुक्म दिया गया ताकि वोह अपनी ख़्वाहिशात पर क़ाबू पा कर गुनाहों से बचे रहें। चुनान्चे रसूले करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ऐ

जवानो ! तुम में जो कोई निकाह़ की इस्तित़ाअ़त रखता है वोह निकाह़ करे कि येह अजनबी ़औरत की त़रफ़ नज़र करने से निगाह को रोकने वाला है और शर्मगाह की ह़िफ़ाज़त करने वाला है और जिस में निकाह़ की इस्तित़ाअ़त नहीं वोह रोज़े रखे कि रोज़ा शहवत को तोड़ने वाला है।[6]

रोज़ा अ़मली त़ौर पर रोज़ादार की तरबियत का सामान करता है, रोज़ादार को भूक और प्यास की शिद्दत मह़सूस होती है, इस के सामने त़रह़ त़रह़ की खाने पीने की लज़ीज़ चीज़ें, ठन्डे और मीठे मशरूबात मौजूद होते हैं मगर वोह तन्हाई में छुप कर भी इन चीज़ों की त़रफ़ हाथ नहीं बढ़ाता क्यूंकि वोह जानता है कि उस की येह ह़रकत मख़्लूक़ से तो छुप सकती है मगर ख़ालिक़ से नहीं छुप सकती, तो येह ख़ौफ़े ख़ुदा और तक़्वा व परहेज़गारी की तरबियत का अ़मली मौक़अ़ रोज़े ही की बरकत से ह़ासिल होता है। फिर इस तरबियत का असर येह ज़ाहिर होता है कि इन्सान की जल्वत और ख़ल्वत एक जैसी हो जाती है, इन्सान जिस त़रह़ लोगों के सामने गुनाहों से रुका रहता है इसी त़रह़ तन्हाई में भी गुनाहों से बचा रहता है। इस ज़िम्न में एक रिवायत मुलाह़ज़ा कीजिये :

चुनान्चे ह़ज़रते नाफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ फ़रमाते हैं: ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا अपने बाज़ साथियों के साथ एक सफ़र में थे रास्ते में एक जगह ठहरे और खाने के लिये दस्तरख़्वान बिछाया, इतने में एक चरवाहा (यानी बकरियां चराने वाला) वहां आ गया, आप ने फ़रमाया : आइये ! दस्तरख़्वान से कुछ ले लीजिये ! उस ने अ़र्ज़ की : मेरा रोज़ा है । ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने फ़रमाया : क्या तुम इस सख़्त गर्मी के दिन में (नफ़्ल) रोज़ा रखे हुए हो जब कि तुम इन पहाड़ों में बकरियां चरा रहे हो ! उस ने कहा : अल्लाह की क़सम ! मैं येह इस लिये कर रहा हूं कि ज़िन्दगी के गुज़रे हुए दिनों की तलाफ़ी (यानी बदला अदा) कर सकूं । आप ने उस की परहेज़गारी का इम्तिह़ान लेने के इरादे से फ़रमाया : क्या तुम अपनी बकरियों में से एक बकरी हमें बेचोगे ? उस की क़ीमत और गोश्त भी तुम्हें देंगे ताकि तुम इस से रोज़ा इफ़्त़ार कर सको, उस ने जवाब दिया : येह बकरियां मेरी नहीं हैं, मेरे मालिक की हैं। अ़ब्दुल्लाह बिन ड़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُمَا ने आज़माने के लिये फ़रमाया : मालिक से कह देना कि भेड़िया (Wolf) इन में से एक को ले गया है। ग़ुलाम ने कहा : तो फिर अल्लाह पाक कहां है ? (यानी अल्लाह पाक तो देख रहा है, वोह इस पर मेरी पकड़ फ़रमाएगा) जब आप मदीने वापस तशरीफ़ लाए तो उस के मालिक से ग़ुलाम और सारी बकरियां ख़रीद लीं फिर चरवाहे को आज़ाद कर दिया और बकरियां भी उसे तोह़फ़े में दे दीं।[7]

रोज़ा इन्सान की तक़्वा व परहेज़गारी और गुनाहों से बेज़ारी की तरबियत करते हुए यूं भी एह़सास दिलाता है कि खाने पीने की चीज़ें जो रोज़े के ड़लावा जाइज़ थीं मगर रोज़े की ह़ालत में इन से भी मना कर दिया गया तो वोह चीज़ें जो रोज़े के ड़लावा भी हमेशा मना हैं (मसलन झूट, ग़ीबत, चुग़ली, गालम गलोच, फ़िल्मे ड्रामे, गाने बाजे और बद निगाही वग़ैरा) इन का इर्तिकाब कैसे किया जा सकता है ! तो यूं इन्सान रोज़े की बरकत से खाने पीने वग़ैरा से बचने के साथ साथ दीगर गुनाहों से भी ख़ुद को बचाने में कामयाब हो जाता है।

यूंही रोज़ा येह एह़सास भी दिलाता है कि जिस त़रह़ रोज़ादार खाने पीने की चीज़ों पर क़ुदरत रखने के बावुजूद सिर्फ़ अपने रब के ख़ौफ़ से उन्हें छोड़ देता है इसी त़रह़ गुनाह के अस्बाब मौजूद होने के बावुजूद इन्सान अपने रब के ख़ौफ़ से गुनाह छोड़ दे कि येही ह़क़ीक़ी तक़्वा है और इस की बड़ी फ़ज़ीलत बयान हुई है। चुनान्चे रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो शख़्स किसी ह़राम काम पर क़ादिर हो फिर उसे सिर्फ़ अल्लाह पाक के ख़ौफ़ की वज्ह से छोड़ दे तो अल्लाह पाक आख़िरत से पहले दुनिया ही में जल्द उस का ऐसा बदल अ़त़ा फ़रमाता है जो उस ह़राम काम से बेहतर हो।[8]

अलग़रज़ रोज़ा एक ऐसी ह़ालत है जिस में इन्सान हर वक़्त ड़बादत में रहता है, रोज़ादार का सह़री करना ड़बादत, इफ़्त़ार करना ड़बादत यहां तक कि उस का सोना भी ड़बादत में शुमार होता है। ह़दीसे पाक में है : रोज़ादार का सोना ड़बादत, उस की ख़ामोशी तस्बीह़ करना, उस की दुआ़ क़बूल और उस का अ़मल मक़बूल होता है।[9] यूं इन्सान के मुत्तक़ी और परहेज़गार बनने में रोज़े का नुमायां किरदार होता है।

---

(1)پ15،بنی اسرائیل:7(2)پ20،العنکبوت:6(3)پ1،البقرۃ:21(4)پ2، البقرۃ:183(5)صراط الجنان،1/290 (6)بخاری، 3/422، حدیث: 5066 (7)شعب الایمان، 4/329،حدیث:5291(8)جامع الاحادیث،9/43، حدیث: 27052(9)شعب الایمان،3/415،حدیث:3938۔

एतिकाफ़ की रूहानिय्यत में रुकावटें और उन का ह़ल

अल्लाह पाक ने रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे में एतिकाफ़ की सुन्नते मुबारका को उम्मते मुहम्मदिया के लिये ख़ास तोह़फ़ा बनाया है। येह वोह मुबारक अय्याम हैं जब बन्दा दुनिया की हर मसरूफ़िय्यत से अलग हो कर अपने रब्बे करीम के घर में क़ियाम करता है, उस की रिज़ा की तलाश में रातें गुज़ारता है और अपने गुनाहों से तौबा कर के नया इन्सान बन कर निकलता है। एतिकाफ़ मह़ज़ मस्जिद में बैठने का नाम नहीं बल्कि येह रूहानी तरबियत का एक अ़मली मरह़ला है, येह नफ़्स की इस्लाह़ का ज़रीआ़ है और येह अल्लाह पाक से तअ़ल्लुक़ मज़बूत करने का सुनहरी मौक़अ़ है।

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हर साल एतिकाफ़ फ़रमाया और उस की फ़ज़ीलतो अ़ज़मत को वाज़ेह फ़रमाया। सहाबए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن एतिकाफ़ को इतनी अहमिय्यत देते थे कि सारा साल उस का इन्तिज़ार करते रहते थे। येह वोह मुबारक अय्याम हैं जिन में शबे क़द्र की तलाश की जाती है, जो हज़ार महीनों से बेहतर है।

एतिकाफ़ के मक़ासिद 1 एतिकाफ़ का एक मक़्सद येह है कि बन्दा अपने ख़ालिक़े ह़क़ीक़ी से अपना टूटा हुवा तअ़ल्लुक़ दोबारा मज़बूत करे। सारा साल हम दुनिया की भाग दौड़ में इतने मसरूफ़ रहते हैं कि अल्लाह पाक की याद से ग़ाफ़िल हो जाते हैं। नमाज़ भी अदा करते हैं तो दिल कहीं और लगा होता है। क़ुरआने पाक की तिलावत भी करते हैं तो सिर्फ़ ज़बान ह़रकत कर रही होती है, दिल उस में कम ही शामिल होता है।

2 एतिकाफ़ में जब बन्दा दस दिन के लिये दुनिया से कट जाता है तो उसे अपने रब को पुकारने का मौक़अ़ मिलता है। तहज्जुद की नमाज़ में अल्लाह पाक के हुज़ूर गिर्या व ज़ारी का मौक़अ़ मिलता है। क़ुरआने पाक की तिलावत करते हुए उस के मआ़नी पर ग़ौर करने का वक़्त मिलता है। ज़िक्र अज़्कार में मश्ग़ूल हो कर दिल को पाकीज़गी मिलती है।

3 एतिकाफ़ नफ़्स की तरबियत का सुनहरी मौक़अ़ है। जब इन्सान दस दिन के लिये दुनियावी आसाइशों से दूर हो जाता है, आराम देह बिस्तर छोड़ कर मस्जिद के फ़र्श पर सोने लगता है, सादा खाने पर क़नाअ़त करता है तो उस का नफ़्स तरबियत पाता है। नफ़्स को समझ आ जाती है कि अस्ल ज़िन्दगी तो आख़िरत की ज़िन्दगी है और येह दुनिया तो चन्द रोज़ा है।

4 एतिकाफ़ में बन्दा अपनी ख़्वाहिशात को क़ाबू में रखना सीखता है। फ़ुज़ूल बातों से बचना सीखता है। ग़ीबत, चुग़ली, झूट और ज़बान के दीगर गुनाहों से मह़फ़ूज़ रहने की मश्क़ करता है। आंखों को ना मह़रम से बचाने की आ़दत पड़ती है। येह दस दिन नफ़्स की ऐसी तरबियत के हैं कि अगर सह़ीह़ त़रीक़े से गुज़ारे जाएं तो इन्सान नया इन्सान बन कर निकलता है।

5 रमज़ानुल मुबारक गुनाहों की मुआ़फ़ी का महीना भी है और एतिकाफ़ इस मुआ़फ़ी को ह़ासिल करने का ख़ास ज़रीआ़ है। जब

बन्दा मस्जिद में बैठ कर अपने गुनाहों का मुहासबा करता है, अपनी ग़लतियों को याद करता है और सच्चे दिल से तौबा करता है तो अल्लाह पाक उस के गुनाहों को मुआफ़ फ़रमा देता है।

6 एतिकाफ़ में इन्सान को येह मौक़अ़ मिलता है कि वोह अपनी ज़िन्दगी का जाइज़ा ले। देखे कि किन किन गुनाहों में मुब्तला रहा है। किन लोगों के हुक़ूक़ ग़स्ब किये हैं। किन से मुआफ़ी मांगनी है। और आइन्दा की ज़िन्दगी को कैसे बेहतर बनाना है। येह ख़ल्वत नशीनी और तन्हाई इन्सान को अपनी इस्लाह का मौक़अ़ फ़राहम करती है।

7 एतिकाफ़ का एक अहम मक़्सद शबे क़द्र की तलाश है। येह वोह रात है जिस की इबादत हज़ार महीनों की इबादत से बेहतर है। हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि इस रात को रमज़ान के आख़िरी अ़शरे की ताक़ रातों में तलाश करो।

(بخاری،1/661،حدیث:2018)

अफ़सोसनाक हक़ीक़त : मक़ासिद का हुसूल क्यूं नहीं होता ?

अफ़सोस कि आज बहुत से लोग एतिकाफ़ तो करते हैं लेकिन एतिकाफ़ के अस्ल मक़ासिद हासिल नहीं कर पाते। दस दिन मस्जिद में गुज़ार देते हैं लेकिन दिल में कोई तब्दीली नहीं आती। ज़िन्दगी में कोई इस्लाह नहीं होती। एतिकाफ़ से पहले जैसे थे एतिकाफ़ के बाद भी वैसे ही रहते हैं इस की क्या वुजूहात हैं ? आइये तफ़्सील से जाइज़ा लेते हैं :

मोबाइल फ़ोन का बे दरेग़ इस्तिमाल : आज के दौर की सब से बड़ी आफ़त मोबाइल फ़ोन का बे ज़रूरत व बिला जवाज़ इस्तिमाल है। येह ऐसी चीज़ है जिस ने इन्सान को अल्लाह पाक से दूर कर दिया है। एतिकाफ़ में भी अक्सर लोग अपना मोबाइल साथ रखते हैं और वक़्तन फ़ वक़्तन उसे इस्तिमाल करते रहते हैं। कोई हर थोड़ी देर बाद वॉट्सएप चेक कर रहा है। कोई फ़ेसबुक स्क्रोल कर रहा है। कोई यूट्यूब पर वीडियोज़ देख रहा है।

मोबाइल फ़ोन की वजह से एतिकाफ़ के क़ीमती लम्हात ज़ाएअ़ हो जाते हैं। जो वक़्त क़ुरआने पाक की तिलावत में गुज़रना चाहिये वोह मोबाइल पर फ़ुज़ूल बातें करने में गुज़र जाता है। जो वक़्त ज़िक्रो अज़्कार में गुज़रना चाहिये वोह सोशल मीडिया पर ज़ाएअ़ हो जाता है।

दोस्तों से ख़ुश गप्पियां और फ़ुज़ूल बातें : एतिकाफ़ में कई लोग मुलाक़ात के लिये आने वाले अपने दोस्तों या रिश्तेदारों के साथ ग्रूप बना कर बैठते हैं। और फिर सारा वक़्त फ़ुज़ूल बातों में गुज़र जाता है। दुनिया भर की बातें, सियासत की बातें, कारोबार की बातें, क्रिकेट की बातें। जैसे कोई पार्टी में बैठे हैं। येह मुलाक़ातें मोतकिफ़ के क़ीमती वक़्त को ज़ाएअ़ करती हैं और इस की तवज्जोह इबादत से हटा देती हैं। येह लोग भूल जाते हैं कि एतिकाफ़ में हर बात का हिसाब होगा। मस्जिद में दुनिया की बातें करना गुनाह है। आला हज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं कि जो मस्जिद में दुनिया की बात करे, अल्लाह पाक उस के 40 बरस के अ़मल अकारत फ़रमा दे।

(फ़तावा रज़विय्या, 16/311)

खानों की फ़िक्र और मन्सूबे : बाज़ लोगों की पूरी तवज्जोह खानों पर रहती है। सहरी मे क्या खाया जाए, इफ़्तार में क्या खाया जाए। दोस्त बाहर से कबाब समोसे ले आते हैं तो खाने में मसरूफ़ हो जाते हैं। गोया एतिकाफ़ में आने का मक़्सद ही खाना पीना है। एतिकाफ़ में तो खाने की तरफ़ कम तवज्जोह देनी चाहिये। जो कुछ मिल जाए उसी पर क़नाअ़त करनी चाहिये। नफ़्स को तरबियत देनी चाहिये कि दुनिया की लज़्ज़तों की ज़रूरत नहीं।

घर वालों से राबिते और मुतालबे : बाज़ लोग एतिकाफ़ में तो बैठे होते हैं लेकिन घर वालों से हर वक़्त ग़ैर ज़रूरी राबिते में रहते हैं। दिन में कई बार फ़ोन करते हैं। घर के मुआमलात में हिदायात देते रहते हैं। अहले ख़ाना को काम बताते रहते हैं। बाज़ तो घर वालों से मुतालबे भी करते रहते हैं। येह चीज़ ले आओ, वोह चीज़ ले आओ। फ़ुलां खाना भिजवा दो, फ़ुलां कपड़े भिजवा दो। एतिकाफ़ में बैठे हैं लेकिन ज़ेहन पूरी तरह घर में लगा हुवा है। एतिकाफ़ का मक़्सद ही येह है कि दुनियावी मुआमलात से अलग हो जाएं और सिर्फ़ अल्लाह पाक की तरफ़ मुतवज्जेह हों। लेकिन जब घर वालों से ग़ैर

ज़रूरी राबिते में रहेंगे तो येह मक़्सद कैसे ह़ासिल होगा ?

नींद और सुस्ती का ग़लबा : बाज़ लोग एतिकाफ़ में सारा दिन भी सोते रहते हैं। रात को तहज्जुद के वक़्त भी नहीं उठते। नमाज़ के बाद फ़ौरन सो जाते हैं। गोया एतिकाफ़ उन के लिये आराम और नींद का मौक़अ़ बन गया है। येह एतिकाफ़ के मक़्सद के बिल्कुल ख़िलाफ़ है। एतिकाफ़ में तो रात को ज़ियादा इ़बादत करनी चाहिये और दिन में भी इ़बादत, ज़िक्र, तिलावत में मसरूफ़ रहना चाहिये। ज़रूरत के मुताबिक़ नींद ली जा सकती है लेकिन ज़ियादा तर वक़्त इ़बादत में गुज़रना चाहिये।

एतिकाफ़ के रूह़ानी फ़वाइद कैसे ह़ासिल करें ?

अब सुवाल येह है कि उन रुकावटों को कैसे दूर करें और एतिकाफ़ के ह़क़ीक़ी फ़वाइद कैसे ह़ासिल करें ? आइये अ़मली तजावीज़ पर नज़र डालते हैं :

- एतिकाफ़ में दाख़िल होते वक़्त येह अ़हद कर लें कि दस दिन मोबाइल इस्तिमाल नहीं करेंगे। अगर किसी इन्तिहाई ज़रूरी बात के लिये घर वालों से राबिता करना ज़रूरी हो तो कर लें लेकिन सिर्फ़ ज़रूरत की ह़द तक ही करें।

- एतिकाफ़ में दोस्तों के ग्रूप से अलग रहें। फ़ुज़ूल बातों से परहेज़ करें। जब भी बात करनी हो तो ज़रूरत की बात करें और वोह भी आहिस्ता आवाज़ में।

- एतिकाफ़ से पहले एक हदफ़ बना लें कि दस दिन में क्या करना है। कितनी बार क़ुरआन ख़त्म करना है ? कौन कौन सी दुआ़एं याद करनी हैं ? कौन सी किताब पढ़नी है ? कितने नवाफ़िल पढ़ने हैं ?

- येह हदफ़ लिख लें और हर रोज़ इस पर अ़मल करें। रात को सोने से पहले देखें कि आज का मन्सूबा कितना पूरा हुवा। कल क्या करना है। इस त़रह़ वक़्त का सह़ीह़ इस्तिमाल होगा और बरकत नसीब होगी।

- दावते इस्लामी के एतिकाफ़ में जो भी मदनी मुज़ाकरा, दर्स या बयान हो उस में ज़रूर शिर्कत करें। बल्कि पहली सफ़ में बैठ कर तवज्जोह से सुनें। नोट्स बनाएं। जो बातें समझ में न आईं बाद में पूछ लें।

- एतिकाफ़ की बरकत रात की इ़बादत में भी है। ख़ास त़ौर पर तहज्जुद की नमाज़ का बहुत ज़ियादा एहतिमाम करें। हर रात तहज्जुद के लिये ज़रूर उठें। क़ुरआने पाक की तिलावत करें। दुआ़एं मांगें।

- आख़िरी अ़शरे की त़ाक़ रातों में तो पूरी रात जागें। येह समझ कर इ़बादत करें कि शायद येही शबे क़द्र हो। अगर वाक़ेई शबे क़द्र मिल गई तो पूरी ज़िन्दगी कामयाब हो जाएगी।

- एतिकाफ़ में येह भी सोचें कि एतिकाफ़ के बाद की ज़िन्दगी कैसे गुज़ारनी है। अपने अख़्लाक़ कैसे बेहतर बनाने हैं। येह सब लिख लें और अ़हद करें कि एतिकाफ़ के बाद उस पर अ़मल करेंगे।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! एतिकाफ़ मह़ज़ मस्जिद में बैठने का नाम नहीं बल्कि येह रूह़ानी तरबियत का एक मुकम्मल और जामेअ़ निज़ाम है, और दावते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम होने वाले इजतिमाई एतिकाफ़ में इसी जामेअ़ तरबियत का भरपूर एहतिमाम किया जाता है। इस मुबारक एतिकाफ़ में बाक़ाइ़दा जदवले वक़्त के मुताबिक़ तहज्जुद के लिये बेदारी का एहतिमाम होता है, नमाज़ों में सुन्नतों और नवाफ़िल की पाबन्दी का ज़ेहन दिया जाता है, तिलावते क़ुरआने पाक की तालीम दी जाती है, नमाज़, त़हारत, रोज़ा और दीगर ज़रूरी शरई मसाइल की तालीम फ़राहम की जाती है, अख़्लाक़िय्यात और दीगर कई अहम इस्लामी पहलूओं पर बयानात और मदनी ह़ल्क़े मुनअ़क़िद होते हैं, और ख़ास त़ौर पर रोज़ाना बादे अ़स्र और बादे तरावीह़ शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का मदनी मुज़ाकरा होता है जिस में मुख़्तलिफ़ दीनी सुवालात के शाफ़ी जावाबत मिलते हैं। लिहाज़ा आप भी दावते इस्लामी के इजतिमाई एतिकाफ़ में शिर्कत करें और अपनी दीनी व रूह़ानी ज़िन्दगी को संवारने का येह सुनहरी मौक़अ़ हाथ से न जाने दें। अल्लाह पाक हम सब को एतिकाफ़ की सह़ीह़ मानों में सआ़दत नसीब फ़रमाए और हमें इस के तमाम फ़वाइदो बरकात से मालामाल फ़रमाए। आमीन !

पूछ कर देख लीजिये

बैरूने मुल्क मुक़ीम एक शख़्स ने बताया कि मैं मुंह अन्धेरे चलने वाली ट्रेन से अपनी नौकरी पर जाया करता था। ट्रेन में सुब्ह सुब्ह तमाम मुसाफ़िरों को एक एक कप चाय पेश की जाती थी। एक दिन मुझे चाय की मज़ीद त़लब हुई तो मैं ने साथ बैठे आदमी से पूछा : क्या आप और चाय पिएंगे ? इस का जवाब था कि आप का दिमाग़ ख़राब हो गया है, ट्रेन वाले हर मुसाफ़िर को एक ही कप चाय का देते हैं। उस के जारिह़ाना जवाब से मैं बदमज़ा तो हुवा लेकिन मैं ने पूछ कर देखने का फ़ैसला किया और वेटर को बुला कर पूछा : एक कप चाय और मिल सकती है ? उस ने कहा : क्यूं नहीं ! और मेरे लिये गर्मा गर्म चाय ले आया। अब मैं ने साथ वाले आदमी को दोबारा चाय की दावत दी तो वोह शर्मिन्दा सा हो कर बोला : नहीं ! मेरा मूड नहीं है।

इस दुनिया में हमारे बहुत से काम एक दूसरे पर मौक़ूफ़ होते हैं जैसे स्टूडन्ट और टीचर, औलाद और वालिदैन, दुकानदार और ख़रीदार, अफ़्सर और मुलाज़िम वग़ैरा को एक दूसरे से काम पड़ता रहता है। जब हमें किसी से काम पड़ता है तो तीन क़िस्म के ख़यालात हमारे ज़ेहन में होते हैं : 1 येह हमारा काम कर देगा यानी 100 फ़ीसद चांस 2 पता नहीं कि येह हमारा काम करेगा या नहीं ? फ़िफ़्टी फ़िफ़्टी चांस 3 येह कभी हमारा काम नहीं करेगा (ज़ीरो चांस)। तीसरी सूरत में हम ऐसे शख़्स को काम ही नहीं कहते ह़ालांकि पूछ लेने में ह़रज नहीं कि क्या आप मेरा येह काम करे देंगे ? या येह काम हो सकता है ? याद रखिये येह इम्कानात की दुनिया है, हो सकता है कि आप का काम हो जाए।

चन्द मिसालें स्टूडन्ट को क्लास में सबक़ समझ न आए तो अपना येह ज़ेहन न बनाए कि मेरे टीचर बहुत मसरूफ़ शख़्स हैं, येह कहां मुझे अलग से सबक़ समझाएंगे, बल्कि पूछ कर देख ले, ऐन मुम्किन है कि बिज़ी होने के बावुजूद टीचर इस पर शफ़क़त करें और अलग से सबक़ समझा दें। बच्चे को दोस्तों के साथ किसी जगह जाना हो, कुछ स्पेशल खाना हो या रूटीन से हट कर कोई चीज़ ख़रीदनी हो तो वोह अपने अब्बू या अम्मी से इजाज़त लेने से येह सोच कर घबराता है कि मेरे वालिदैन बहुत सख़्त हैं वोह कभी इजाज़त नहीं देंगे तो वालिदैन से मुहज़्ज़ब अन्दाज़ में पूछ कर देख ले, हो सकता है कि वालिदैन लचक का मुज़ाहरा करते हुए उसे मत़लूबा काम की इजाज़त दे दें। दुकानदार जब ख़रीदार को किसी चीज़ की क़ीमत बता कर कहता है कि येह फ़ाइनल रेट है तो ख़रीदार उस चीज़ को ख़रीदने का इरादा ही तर्क कर देता है ह़ालांकि उसे चाहिये कि पूछ कर देख ले कि कुछ गुन्जाइश निकल सकती है ? तो अक्सर गुन्जाइश निकल ही आती है। इसी त़रह़ हम कुझ लोगों को नमाज़े बा जमाअ़त पढ़ने, रोज़ा रखने, दावते इस्लामी के क़ाफ़िलों में सफ़र करने, इजतिमाआ़त में शरीक होने की दावत देने से येह सोच कर कतरा जाते हैं कि येह कहां हमारी बात मानेगा ? लेकिन ऐसे सैंकड़ों बल्कि हज़ारों वाक़िआ़त रिकॉर्ड पर हैं कि जब मुबल्लिग़ीने दावते इस्लामी ने ऐसों को नर्मी से दावत दी तो उन्हों ने इस पर लब्बैक कहा और बतदरीज दावते इस्लामी के दीनी माह़ौल में शामिल हो गए। बहरे ह़ाल ! इस त़रह़ की सैंकड़ों मिसालें मुआ़मलाते ह़यात में तलाश की जा सकती हैं।

इस्लाम का निज़ामे मुवाख़ात

(दूसरी और आख़िरी क़िस्त)

इस्लाम हमें इबादत के साथ साथ एक मिसाली मुआशरा क़ाइम करने का भी दर्स देता है। इस्लामी भाईचारा एक ऐसी नेमत है जो इन्फ़िरादी और इजतिमाई दोनों सत़हों पर ख़ुशगवार असरात मुरत्तब करती है। आइये ! इस्लामी भाईचारे के चन्द फ़वाइद मुलाहज़ा कीजिये :

1 मह़ब्बत पैदा होती है इस्लामी भाईचारे से मुसलमानों के दिलों में एक दूसरे के लिये मह़ब्बत पैदा होती है। ह़दीसे पाक में है कि तुम उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि एक दूसरे से मह़ब्बत न करो।[1]

2 मुआशरती हम आहंगी भाईचारे के क़ियाम से मुआशरे में इत्तिह़ाद, इत्तिफ़ाक़ और हम आहंगी पैदा होती है जो एक पुरअम्न मुआशरे की बुन्याद है। आप ने मोटे मोटे रस्से देखे होंगे जो बारीक बारीक कमज़ोर धागों के इत्तिह़ाद का नतीजा होते हैं, एक अकेला धागा इतना कमज़ोर होता है कि छोटा सा बच्चा भी उसे बा आसानी तोड़ सकता है, मगर जब कई कमज़ोर धागे आपस में मुत्तह़िद हो जाते हैं तो एक मज़बूत रस्से की सूरत इख़्तियार कर लेते हैं जो बड़े बड़े बह़री जहाज़ों को पानी के शदीद ज़ोर में भी रोक सकता है।

3 मदद व तआवुन का जज़्बा भाईचारे से दूसरों की मदद और ईसार का जज़्बा पैदा होता है। एक मुसलमान भाई किसी मुश्किल में है तो उस का दूसरा इस्लामी भाई अपनी इस्तिताअत के मुत़ाबिक़ मदद करता है और इस में अल्लाह पाक की मदद शामिले ह़ाल होती है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह पाक बन्दे की मदद करता रहता है जब तक बन्दा अपने भाई की मदद में लगा रहता है।[2]

4 नफ़रत और अ़दावत का ख़ातिमा भाईचारे की बरकत से वोह चीज़ें जिन से नफ़रत और दुश्मनी पैदा होती है मसलन ह़सद, बुग़्ज़, ग़ीबत वग़ैरा बुराइयों का ख़ातिमा होता है और नफ़रत ख़त्म होती है नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस की तरग़ीब दिलाते हुए इरशाद फ़रमाया : आपस में ह़सद न करो, आपस में बुग़्ज़ो अ़दावत न रखो, पीठ पीछे एक दूसरे की बुराई बयान न करो और ऐ अल्लाह पाक के बन्दो ! भाई भाई हो जाओ।[3]

5 अल्लाह की मह़ब्बत और रह़मत का ज़रीआ भाईचारा क़ाइम करने वालों के लिये अल्लाह पाक की रिज़ा का ह़ुसूल और उस की ख़ास रह़मत के नुज़ूल का ह़क़ ह़ासिल होता है। नबिय्ये पाक صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने अपने रब का फ़रमान बयान फ़रमाया : मेरी मह़ब्बत उन लोगों के लिये साबित हो गई जो मेरे लिये एक दूसरे से मह़ब्बत करते, एक दूसरे पर ख़र्च करते और एक दूसरे से मुलाक़ात करते हैं।[4]

6 आख़िरत में मक़ाम बुलन्द होगा क़ियामत के दिन ऐसे लोग जो भाईचारे, मह़ब्बत और ख़ुलूस के साथ ज़िन्दगी गुज़ारेंगे,

उन्हें ख़ास मक़ाम अ़ता किया जाएगा। ह़दीसे पाक में है : अल्लाह तआ़ला क़ियामत के दिन फ़रमाएगा : मेरी अ़ज़मत की ख़ातिर एक दूसरे से मह़ब्बत करने वाले आज कहां हैं ? मैं उन्हें अपने साए में जगह दूं, क्यूंकि आज मेरे साए के इलावा कोई और साया नहीं है।[5]

7 हुब्बे माल की जगह ईसार की नेमत मिलती है भाईचारे की बरकत से दिलों से माल की मह़ब्बत ख़त्म हो जाती है और इस की जगह ईसार की अ़ज़ीम दौलत नसीब होती है। येह मह़ज़ एक समाजी रिश्ता नहीं, बल्कि ईमान की बुन्याद पर क़ाइम ऐसा तअ़ल्लुक़ है जो इन्सान को अपनी ज़रूरिय्यात पर दूसरे को तरजीह़ देने का ह़ौसला अ़ता करता है। येही जज़्बा एक मिसाली, बाहमी हमदर्दी और क़ुरबानी पर मब्नी मुआ़शरा तश्कील देता है, जहां अफ़राद ख़ुद ग़रज़ी से बाला तर हो कर दूसरों की ख़ुशी को अपनी ख़ुशी समझते हैं।

अल्लाह के लिये मह़ब्बत का इन्आ़म (ह़िकायत)

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم है : एक शख़्स अपने भाई से मिलने के लिये दूसरी बस्ती में गया। अल्लाह करीम ने उस के रास्ते में एक फ़िरिश्ता भेजा जिस ने उस से पूछा : कहां का इरादा है ? जवाब दिया : उस बस्ती में मेरा एक भाई है, उस से मिलने जा रहा हूं। फ़िरिश्ते ने दरयाफ़्त किया : क्या तुम ने इस पर कोई एह़सान किया है जिसे वुसूल करना चाहते हो ? उस ने कहा : इस के सिवा और कोई बात नहीं कि मैं अल्लाह के लिये इस से मह़ब्बत करता हूं। फ़िरिश्ते ने कहा : मैं तुम्हारे पास अल्लाह का येह पैग़ाम लाया हूं कि जिस त़रह़ तुम इस से मह़ब्बत करते हो, अल्लाह तआ़ला भी तुम से मह़ब्बत फ़रमाता है।[6]

ईसार की इन्तिहा

सूफ़िया की एक जमाअ़त को किसी ख़लीफ़ा के सामने पेश किया गया तो उस ने उनकी गर्दनें उड़ाने का हुक्म जारी कर दिया, उन में ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुसैन अह़मद बिन मुह़म्मद नूरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ भी थे। आप फ़ौरन जल्लाद की त़रफ़ लपके ताकि सब से पहले क़त्ल किये जाएं। आप से इस का सबब पूछा गया तो फ़रमाया : "मैं पसन्द करता हूं कि इस घड़ी अपने भाइयों की ज़िन्दगी को ख़ुद पर तरजीह़ दूं।" आप का येह फ़रमाना सब की नजात का सबब बन गया।[7]

बकरी का सर सात घरों का मेहमान

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا ने फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अस्ह़ाब में से किसी को बकरी का सर हदिया दिया गया तो उन्हों ने येह कर कर कि "मेरा फ़ुलां भाई इस का मुझ से ज़ियादा ज़रूरतमन्द है" वोह सिरी उन की त़रफ़ भेज दी, उन्हों ने भी येही ख़याल कर के आगे भेज दी, इस त़रह़ वोह सर एक से दूसरे को भेजा जाता रहा ह़त्ता कि सात हाथों से गुज़र कर वापस पहले सह़ाबी की त़रफ़ लौट आया।[8]

आज के दौर में मुवाख़ात की ज़रूरत

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुहाजिरीन और अन्सार के दरमियान जो "मुवाख़ात" क़ाइम की वोह इस्लामी मुआ़शरत की एक अ़ज़ीम मिसाल है। इस मुवाख़ात का मक़्सद मह़ज़ मुहाजिरीन की रिहाइश या इन की माली मदद नहीं था बल्कि आपस में उन के दिलों को जोड़ना और एक दूसरे का सच्चा ख़ैर ख़्वाह बनाना था। मगर अफ़सोस आज हम ने इस अ़ज़ीम ज़रूरत व मक़्सद को फ़रामोश कर दिया है।

आज हमारे मुआ़शरे का ह़ाल येह है कि घर घर झगड़े, भाई भाई से नाराज़ और रिश्तेदार एक दूसरे का चेहरा देखना तक गवारा नहीं करते। मामूली बातों पर बर्सों पुरानी दोस्तियां टूट जाती हैं। एक ही इदारे, शोबे या घर में रह कर भी हम एक दूसरे के दुख दर्द का एह़सास नहीं करते। हमारे दिल बुग़्ज़, ह़सद और नफ़रत से भरे हुए हैं। हम दूसरों से रह़म, इ़ज़्ज़त और शफ़क़त की तवक़्क़ोअ़ तो रखते हैं लेकिन ख़ुद छोटी छोटी रंजिशों पर तअ़ल्लुक़ात ख़त्म कर देते हैं। येही वज्ह है कि मुसलमान आज कमज़ोर, मुन्तशिर और अग़यार के ज़ुल्मो सितम का शिकार हैं। अगर हम उख़ुव्वत व भाईचारे को फ़रोग़ देते, एक दूसरे की ख़ैर ख़्वाही करते और मफ़ाद परस्ती छोड़ कर ख़ुलूसे दिल से मह़ब्बत करते तो शायद हमारी ह़ालत मुख़्तलिफ़ होती। अफ़सोस कि आज मह़ब्बत भी मफ़ाद से मशरूत़ हो चुकी है।

ज़ैल में ऐसे ही चन्द इस्लामी उसूल और त़रीक़े बयान किये जा रहे हैं, जो न सिर्फ़ मुसलमानों के दरमियान मह़ब्बत और उल्फ़त पैदा करते हैं, बल्कि भाईचारे को भी फ़रोग़ देते हैं जो एक मज़बूत उम्मत की बुन्याद है।

1 सलाम को आम करना भाईचारे और मह़ब्बत बढ़ाने का एक त़रीक़ा एक दूसरे को कसरत से सलाम करना भी है, चाहे हम इसे जानते हों या न जानते हों ह़दीसे पाक में है : तुम जन्नत में दाख़िल न होगे जब तक ईमान न लाओ, और तुम मोमिन न बनोगे जब तक एक दूसरे से मह़ब्बत न करो। क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज़ न बताऊं कि अगर तुम उसे करो तो आपस में मह़ब्बत पैदा हो जाए ? (वोह है) सलाम को आम करना।[9]

2 आपस में तोह़फ़े देना भाईचारा और मह़ब्बत को फ़रोग़ देने के लिये तोह़फ़े का लेन देन रखिये कि इस से दिल साफ़ होता है ह़दीसे पाक में है : تَهَادَوْا تَحَابُّوا यानी आपस में तोह़फ़े दो कि इस से मह़ब्बत पैदा होगी।[10]

3 मुसलमानों के उ़ज़्र को क़बूल करना अगर कोई मुसलमान भाई ग़लती करे और फिर उस ग़लती को तस्लीम करते हुए माज़ेरत करे तो उस का उ़ज़्र क़बूल करना चाहिये कि इस से दिल की कदूरत दूर होती है।

4 हुस्ने अख़्लाक़ इख़्तियार करना ख़ुश अख़्लाक़ी और नर्म मिज़ाजी भी मह़ब्बत बढ़ाने और सामने वाले का दिल जीतने का सबब और एक अच्छे इन्सान की अ़लामत है ह़दीसे पाक में है : तुम में सब से बेहतर वोह है जो अख़्लाक़ में सब से बेहतर हो।[11]

5 ख़ुशी ग़मी में शिर्कत करना किसी बीमार की इ़यादत या अपने मुसलमान भाई की ख़ुशी ग़मी में उस का शरीक होना भी भाईचारे और मह़ब्बत में इज़ाफ़े का एक सबब है। ह़दीसे पाक में है : मुसलमान जब अपने मुसलमान भाई की इ़यादत को गया तो वापस होने तक हमेशा जन्नत के फल चुनने में रहा।[12] जिस ने किसी मुसीबत ज़दा की ताज़ियत की तो उसे मुसीबत ज़दा के बराबर अज्र मिलेगा।[13]

6 ख़ुलूस से ख़ैर ख़्वाही करना अपने मुसलमान भाई की बेहतरी चाहना, किसी बुराई में मुलव्विस देख कर उस की इस्लाह़ करना और उसे अच्छा मश्वरा देना ख़ैर ख़्वाही है जो दिलों में एक दूसरे के लिये एतिमाद और मह़ब्बत पैदा करती है।

7 ह़ौसला अफ़्ज़ाई करना अपने भाई के किसी अच्छे कारनामे या उस की क़ाबिलिय्यत व सलाह़िय्यत को सराहना और ह़ौसला अफ़्ज़ाई करना भी आपस की मह़ब्बत को बढ़ाने का एक त़रीक़ा है।

अल्लाह पाक हम मुसलमानों को इत्तिफ़ाक़, इत्तिह़ाद, उख़ुव्वत व मह़ब्बत से रहने और एक दूसरे की मुश्किल वक़्त में मदद करने की तौफ़ीक़ नसीब फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) مسلم، ص51، حدیث : 194(2) مسلم، ص 1110، حدیث:6853 (3) بخاری، 4/117، حدیث:6066(4) مسند احمد، 8/421، حدیث: 22847 (5) مسلم، ص1065، حدیث:6548(6) مسلم، ص1065، حدیث: 6549 (7) احیاء العلوم الدین 2/216(8) احیاء العلوم الدین 2/217(9) مسلم، ص51، حدیث : 194(10) مؤطا امام مالک، 2/407، رقم: 1731 (11) بخاری، 2/489 حدیث:3559(12) مسلم، ص1066، حدیث:6554(13) ترمذی، 2/338، حدیث:1075۔

जन्नत में दो मह़ल्लात दिलाने वाली नेकियां

हर मुसलमान की दिली तमन्ना होती है कि वोह दुनिया में अच्छे आमाल से अपनी दुनिया और आख़िरत संवारे, क़ब्रो आख़िरत की सख़्तियों से नजात पाए, जन्नतुल फ़िरदौस में आला दरजात ह़ासिल करे और सब से बढ़ कर येह कि उसे जन्नत में दो दो मह़ल्लात नसीब हो जाएं, यक़ीनन येह हर नेक बन्दे की आरज़ू है। आइये ! जन्नत में दो मह़ल ह़ासिल करने के बारे में हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के चन्द फ़रामीन सुनते हैं और उन पर अ़मल पैरा होने की कोशिश करते हैं और इन फ़रामीन की रौशनी में हम अपनी ज़िन्दगी को मज़ीद बेहतर बना सकते हैं, चुनान्चे

मग़रिब व इ़शा के दरमियान नफ़्ली एतिकाफ़ की बरकत

1 सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि अल्लाह पाक के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जो मग़रिब व इ़शा के दरमियान मस्जिद में ठहरे और बा जमाअ़त नमाज़ अदा करे और नमाज़ व तिलावत के इ़लावा कोई बात न करे, तो अल्लाह पाक के ज़िम्मए करम पर है कि उस के लिये जन्नत में दो ऐसे मह़ल बनाए जिन का आपस में फ़ासिला एक 100 साल की मसाफ़त के बराबर हो और उस के लिये दोनों मह़ल्लात के दरमियान दरख़्त लगाएगा कि अगर अहले दुनिया उस का चक्कर लगाएं तो वोह उन सब को काफ़ी हो जाए।[1]

येह सवाब चन्द शराइत़ के साथ है, जिन में से एक येह है कि मग़रिब की नमाज़ बा जमाअ़त अदा करे, अगर अकेले नमाज़ पढ़ी तो येह सवाब नहीं मिलेगा। दूसरी येह कि नमाज़ बा जमाअ़त मस्जिद में अदा की जाए और उस से मुराद मह़ल्ले की मस्जिद है, लिहाज़ा अगर किसी ने अपने घर में जमाअ़त के साथ नमाज़ पढ़ी या अपने घर के क़रीब किसी छोटी मस्जिद में जो मह़ल्ले की मस्जिद न हो तो उसे येह सवाब ह़ासिल नहीं होगा और तीसरी येह कि फ़र्ज़ नमाज़ के बाद तस्बीह़ मुकम्मल कर के उसी जगह बैठा रहे जहां नमाज़ पढ़ी है, मजबूरी के इ़लावा न उठे वरना सवाब न पाएगा।[2]

मग़रिब के बाद नवाफ़िल अदा करने की बरकत

2 मुसलमानों की प्यारी अम्मीजान ह़ज़रते बीबी आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهَا से मरवी है कि अल्लाह पाक के रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अल्लाह पाक के नज़्दीक अफ़्ज़ल नमाज़, मग़रिब की नमाज़ है, उसे न तो मुसाफ़िर से कम किया और न ही मुक़ीम से, उस के ज़रीए रात की नमाज़ को शुरूअ़

फ़रमाया और दिन की नमाज़ को ख़त्म फ़रमाया तो जिस शख़्स ने नमाज़े मग़रिब पढ़ी और उस के बाद दो रक्अतें पढ़ीं अल्लाह पाक उस के लिये जन्नत में दो मह़ल बनाएगा। रिवायत करने वाले फ़रमाते हैं कि मुझे मालूम नहीं कि वोह दो मह़ल सोने के होंगे या चांदी के। और जिस ने चार रक्अतें पढ़ीं अल्लाह पाक उस के 20 साल के गुनाह मुआफ़ फ़रमाएगा। या फ़रमाया : 40 साल के गुनाह मुआफ़ फ़रमाएगा।[3]

3 एक रिवायत में अल्फ़ाज़ यूं हैं कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रहीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह पाक को नमाज़े मग़रिब से ज़ियादा कोई नमाज़ मह़बूब नहीं, उस के ज़रीए बन्दा अपनी रात का आग़ाज़ करता है और अपने दिन का इख़्तिताम करता है। अल्लाह पाक ने उसे न मुसाफ़िर से साक़ित (यानी ख़त्म) किया है और न मुक़ीम से, जिस ने मग़रिब के नमाज़ के बाद दो रकअ़तें पढ़ीं और किसी से बात चीत न की तो वोह इ़ल्लियीन (यानी बुलन्द दर्जे) में लिख दिया जाता है या इ़ल्लियीन में उस का दर्जा बुलन्द कर दिया जाता है और अगर उस ने येह नमाज़ पढ़ी और उस के बाद चार रकअ़तें पढ़ीं और किसी से बात चीत न की तो अल्लाह पाक उस के लिये दो मह़ल बनाता है जो मोतियों और याक़ूत से मुज़य्यन होंगे और उन के दरमियान ऐसी जन्नतें होंगी जिन का इ़ल्म अल्लाह पाक के इ़लावा किसी को नहीं और अगर उस ने येह नमाज़ पढ़ी और उस के बाद छे रक्अतें पढ़ीं और किसी से गुफ़्तगू न की तो उस के चालीस साल के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।[4]

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! हमें फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ साथ नफ़्ल नमाज़ों की त़रफ़ भी तवज्जोह देनी चाहिये और अल्लाह पाक की रिज़ा के लिये ख़ूब ख़ूब नफ़्ल नमाज़ें भी अदा करनी चाहियें।

सूरए इख़्लास पढ़ने की बरकत

4 अल्लाह पाक के आख़िरी नबी, मक्की मदनी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : ﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ 10 बार पढ़े, अल्लाह पाक उस के लिये जन्नत में एक मह़ल तय्यार करेगा और जो 20 बार पढ़े, अल्लाह पाक उस की बरकत से जन्नत में दो मह़ल बनाएगा और जो 30 बार पढ़े अल्लाह पाक उस की बरकत से जन्नत में तीन मह़ल तय्यार करेगा। ह़ज़रते उ़मर बिन ख़त़्त़ाब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अ़र्ज़ किया : या रसूलल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! तब तो अल्लाह पाक की क़सम हम अपने मह़ल बहुत बनवा लेंगे। प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : अल्लाह पाक उस से भी ज़ियादा वुस्अ़त वाला है।[5]

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देहलवी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस रिवायत के तह़त लिखते हैं : येह ह़दीस शरीफ़ मुत़लक़ है, यानी येह सूरत ज़िन्दगी में एक बार पढ़े या रोज़ाना, दोनों सूरतों में अल्लाह पाक का फ़ज़्लो करम बहुत वसीअ़ है।[6]

इ़शा के बाद दो नफ़्ल का सवाब दो जन्नती मह़ल

5 ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से रिवायत है, जो इ़शा के बाद 2 रकअ़त पढ़ेगा और हर रकअ़त में सूरए फ़ातिह़ा के बाद 15 बार ﴿قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ﴾ (मुकम्मल सूरत) पढ़ेगा अल्लाह पाक उस के लिये जन्नत में 2 मह़ल ऐसे तामीर करेगा जिसे अहले जन्नत देखेंगे।[7]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इन अह़ादीस पर अ़मल कर के हम न सिर्फ़ अपनी दुनिया को संवार सकते हैं बल्कि आख़िरत में भी कामयाबी ह़ासिल कर सकते हैं। अल्लाह पाक हमें ख़ूब नेकियां कर के जन्नती मह़ल ह़ासिल करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم

---

(1) الترغیب فی فضائل الاعمال لابن شاہین، ص31، حدیث:75 (2) اتحاف السادۃ للمتقین للزبیدی، 3/616 (3) قوت القلوب، 1/58 – تفسیر القرطبی، جزء ثالث، 2/159 بتغیرٍ (4) الترغیب فی فضائل الاعمال لابن شاہین، ص31، حدیث:74 (5) سنن دارمی، 2/552، حدیث:3429 (6) اشعۃ اللمعات، 2/156 (7) تفسیر دُرِّ منثور، 8/681۔

बुज़ुर्गाने दीन के मुबारक फ़रामीन

The Blessed quotes of the pious predecessors

बातों से ख़ुश्बू आए

बड़ा बहादुर

ख़्वाहिशात को क़ाबू करने वाला तने तन्हा शहर फ़त्ह़ करने वाले से बड़ा फ़ातेह है। (इरशादे मन्सूर बिन अ़म्मार मरवज़ी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ)

(الکواکب الدُّرِّیہ، 1/721)

जब इ़श्क़ सिखाता है आदाबे ख़ुद आगाही

आदाबे मह़ब्बत लोगों के सिखाने से नहीं आते बल्कि येह तो अल्लाह पाक का ख़ास अ़तिय्या है। (इरशादे मारूफ़ बिन फ़ीरोज़ करख़ी رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ)

(الکواکب الدُّرِّیہ، 1/717)

हर सूरत में ह़ुक़ूक़ का ख़याल रखो

अपने भाई की मुरव्वत पर भरोसा कर के उस के ह़ुक़ूक़ में कोताही मत बरतो। (इरशादे इमाम शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ)

(الکواکب الدُّرِّیہ، 1/705)

अह़मद रज़ा का ताज़ा गुलिस्तां है आज भी

ख़ैरो शर की जम्हूरी मुख़ालफ़त उन की अस्ल नहीं बदलती

पसन्दीदा चीज़ पसन्दीदा ही रहेगी चाहे लोग उसे नापसन्द करें और नापसन्दीदा चीज़ नापसन्दीदा ही रहेगी चाहे सब लोग उस में मुब्तला हों। (फ़तावा रज़विय्या, 28/55)

दिल की ज़िद क़बूले ह़क़ की राह में रुकावट बनती है

दिल में जब कोई बात समा जाती है तो आदमी अपनी आ़दते जारिया के ख़िलाफ़ कुछ क़बूल ही नहीं करता। अगर कोई बात उस के ख़िलाफ़ पढ़ता है तो ह़ल्क़ के नीचे नहीं उतरती और सुनता है तो कान से आगे नहीं बढ़ती जब कि लोगों को इस हट धर्मी का हुक्म नहीं दिया गया है। (फ़तावा रज़विय्या, 28/57)

तक़ाज़ाए मह़ब्बत

मुक़्तज़ाए मह़ब्बत इत्तिबाअ़ व तस्दीक़ है न कि नज़ाअ़ व तक्ज़ीब। (फ़तावा रज़विय्या, 28/401)

अ़त्तार का चमन कितना प्यारा चमन

क़ानून को फ़ौक़िय्यत दीजिये

अगर वाक़ेई कोई चोर हाथ आ गया है तब भी क़ानून हाथ में लेने के बजाए उसे क़ानून के ह़वाले कर देना चाहिये।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 रबीउ़ल आख़िर 1442 हि.)

वक़्त हर ग़म का मरहम है

ग़म आहिस्ता आहिस्ता मध्धम हो जाता है और बन्दा Normal Life में आ जाता है, क्यूंकि ह़ालात के साथ सुल्ह़ करनी पड़ती है। (मदनी मुज़ाकरा, 13 रबीउ़ल आख़िर 1442 हि.)

नेक सोह़बत ज़ौक़े इ़बादत की नाशी है

अगर कोई मुख़्लिस, नेक और आ़शिक़े रसूल बन्दा मिल जाए तो उस की सोह़बत दोनों जहां के लिये सआ़दत है क्यूंकि उस की सोह़बत से इ़बादत का शौक़ पैदा हो जाएगा।

(मदनी मुज़ाकरा, 6 रबीउ़ल आख़िर 1442 हि.)

अह़कामे तिजारत

1 वालिद का नाबालिग़ बच्चे की ज़मीन फ़रोख़्त करने का हुक्म

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि ज़ैद ने अपने नवासे उ़मर की पैदाइश पर उसे हैदराबाद में मौजूद अपनी ज़मीन तोह़फ़े में दी, उस ज़मीन पर उ़मर के वालिद बक्र ने क़ब्ज़ा भी कर लिया था। अभी कुछ अ़र्सा क़ब्ल बक्र अपनी पूरी फ़ैमेली समेत हैदराबाद से दुसरे शहर मुस्तक़िल त़ौर पर शिफ़्ट हो चुका है। आप से मालूम येह करना है कि क्या इस सूरत में बक्र अपने नाबालिग़ बच्चे की वोह ज़मीन फ़रोख़्त कर सकता है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : हुक्मे शरअ़ ज़ेहन नशीन रहे कि नाबालिग़ बच्चे को गिफ़्ट में दी जाने वाली चीज़ पर अगर उस बच्चे का वली यानी सरपरस्त क़ब्ज़ा कर ले तो इस सूरत में हिबा ताम हो जाता है यानी वोह गिफ़्ट बच्चे की मिल्किय्यत में आ जाता है, लिहाज़ा पूछी गई सूरत में उस ज़मीन पर भी बच्चे की मिल्किय्यत साबित हो चुकी है।

अलबत्ता बाप अगर नेक चलन हो या मस्तूरुल ह़ाल हो यानी उस का नेक व बद चलन होना मारूफ़ न हो तो उस का नाबालिग़ बच्चे की मम्लूका चीज़ कोई माक़ूल वज्ह पाए जाने पर फ़रोख़्त करना शरअ़न जाइज़ है बशर्ते कि मुनासिब क़ीमत में फ़रोख़्त करे, लिहाज़ा पूछी गई सूरत में बक्र, अगर नेक चलन या मस्तूरुल ह़ाल है तो उस का मार्केट वैल्यू पर अपने बच्चे की ज़मीन को फ़रोख़्त करना शरअ़न जाइज़ है। फ़रोख़्त के बाद ह़ासिल होने वाली रक़म का मालिक वोह बच्चा ही होगा।

सय्यिदी आला ह़ज़रत عَلَیْہِ الرَّحْمَہ से सुवाल हुवा कि : “ज़ैद ने अपना मकान व दुकान अपनी ज़ौजा के नाम बैअ़ कर दिया था ज़ौजा ने इन्तिक़ाल किया। ज़ैद के तीन बच्चे नाबालिग़ अपनी मां के वारिस हैं। अब ज़ैद के पास कुछ नहीं कि उस से अपना और उन नाबालिग़ों का खाना पीना चले। ज़ैद नेक चलन है माल बर्बाद करने वाला नहीं वोह नेक निय्यती से चाहता है कि अपना और अपने नाबालिग़ बच्चों का ह़िस्सा बेच कर तिजारत करे जिस से उन सब का रिज़्क़ पैदा हो। इस सूरत में ज़ैद उन ह़िस्सों के बेचने का इख़्तियार रखता है या नहीं ?” उस के जवाब में आप عَلَیْہِ الرَّحْمَہ फ़रमाते हैं : “अगर ज़ैद नेक चलन है औलाद का माल बर्बाद करने का इस पर अन्देशा नहीं और बैअ़ मुनासिब और माक़ूल क़ीमत को हो तो उसे उन ह़िस्सों के बेचने का इख़्तियार है।” (फ़तावा रज़विय्या, 25/436)

बहारे शरीअ़त में है : “बाप ने नाबालिग़ औलाद की ज़मीन बैअ़ कर डाली अगर उस के चाल चलन अच्छे हैं या मस्तूरुल ह़ाल है तो बैअ़ दुरुस्त है और अगर बद चलन है माल को ज़ाएअ़ करने वाला है तो बैअ़ नाजाइज़ है यानी नाबालिग़ बालिग़ हो कर उस बैअ़ को तोड़ सकता है, हां अगर अच्छे दामों बेची है तो बैअ़ सह़ीह़ है।”

(बहारे शरीअ़त, 2/814)

وَاللّٰهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 यतीम बच्चा अपना माल किसी को गिफ़्ट कर सकता है या नहीं ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि अगर कोई यतीम बच्चा ख़ुशी से अपनी ज़ाती रक़म से किसी को गिफ़्ट दे तो क्या उसे वोह गिफ़्ट वुसूल करना जाइज़ है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : नाबालिग़ बच्चा अपनी ज़ाती रक़म से किसी को बत़ौरे गिफ़्ट कोई चीज़ दे अगर्चे अपनी ख़ुशी से हो, तब भी उसे वुसूल करना जाइज़ नहीं, अगर वुसूल कर लिया, तो उस पर लाज़िम है कि वोह नाबालिग़ को वापस करे। हमारे उ़र्फ़ में जिस का वालिद इन्तिक़ाल कर जाए उस को यतीम कहते हैं अगर्चे वोह बालिग़ हो चुका हो। अगर येह बच्चा बालिग़ हो तो गिफ़्ट दे सकता है और नाबालिग़ हो तो नहीं दे सकता।

सदरुश्शरीआ़ मुफ़्ती अमजद अ़ली आज़मी عَلَيْهِ الرَّحْمَه लिखते हैं : "ख़ुद बच्चा भी अपना माल हिबा करना चाहे तो नहीं कर सकता यानी उस ने हिबा कर दिया और मौहूब लह को दे दिया उस से वापस लिया जाएगा कि हिबा जाइज़ ही नहीं... नाबालिग़ अपना माल न ख़ुद सदक़ा कर सकता है न उस का बाप। येह बात निहायत याद रखने की है अक्सर लोग नाबालिग़ से चीज़ ले कर इस्तिमाल कर लेते हैं समझते हैं कि उस ने दे दी ह़ालांकि येह देना न देने के हुक्म में है।" (बहारे शरीअ़त, 3/81)

وَاللهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰلهٖ وسلَّم

3 क़र्ज़ मुआ़फ़ करने के बाद दोबारा मुतालबा करना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए किराम इस मस्अले के बारे में कि मेरे दोस्त ने मुझे क़र्ज़ दिया और बाद में अपनी मर्ज़ी से वोह क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दिया। अब ह़ालात नासाज़गार होने की बिना पर वो दोबारा मुझ से क़र्ज़ का तक़ाज़ा कर रहा है। मालूम येह करना है कि क्या शरअ़न मुझ पर क़र्ज़ की अदाएगी करना लाज़िम है ?

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْوَهَّابِ اَللّٰهُمَّ هِدَايَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

जवाब : पूछी गई सूरत में आप के ज़िम्मे पर उस क़र्ज़ की अदाएगी करना शरअ़न लाज़िम नहीं, क्यूंकि दैन हो या क़र्ज़, मुआ़फ़ कर देने से मुआ़फ़ हो जाता है, और जो दैन ज़िम्मे से साक़ित़ हो जाए वोह दोबारा नहीं लौटता।

क़र्ज़ हो या दैन मुआ़फ़ करने से मुआ़फ़ हो जाता है। इस के मुतअ़ल्लिक़ अ़ल्लामा इब्ने आ़बिदीन शामी عَلَيْهِ الرَّحْمَه फ़रमाते हैं : "لوقال لغريمه إن كان لى عليك دين فقد أبرأتك وله عليه دين برئ" तर्जमा : अगर किसी शख़्स ने अपने मक़रूज़ से कहा : "अगर मेरा तुम पर कोई क़र्ज़ है तो मैं ने तुम्हें बरी कर दिया", और ह़क़ीक़त में उस का क़र्ज़ भी था, तो मक़रूज़ बरियुज़्ज़िम्मा हो जाएगा, यानी उस पर क़र्ज़ ख़त्म हो जाएगा। (ردالمحتار على الدر المختار، 7/504)

दुररुल हुक्काम शर्ह़ मुजल्लतुल अह़काम में है: "لوكان لشخص على آخر دين فأسقطه عن المدين، ثم بدا له رأى فندم على إسقاطه الدين عن ذلك الرجل، فلأنه أسقط الدين، وهو من الحقوق التى يحق له أن يُسقطها، فلا يجوز له أن يرجع إلى المدين ويُطالبه بالدين؛ لأن ذمته برأت من الدين بإسقاط الدائن حقه فيه" तर्जमा: अगर किसी शख़्स का दूसरे पर क़र्ज़ था, फिर वोह मक़रूज़ से वोह क़र्ज़ मुआ़फ़ कर देता है, और बाद में उस का इरादा बदल जाए और वोह क़र्ज़ की मुआ़फ़ी पर नादिम हो, तो चूंकि उस ने क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दिया था और येह उन हुक़ूक़ में से है जिन्हें इन्सान ख़ुद मुआ़फ़ कर सकता है लिहाज़ा अब उस के लिये जाइज़ नहीं कि वोह मक़रूज़ से दोबारा क़र्ज़ का मुतालबा करे, क्यूंकि मक़रूज़ के ज़िम्मे से क़र्ज़ उस वक़्त ख़त्म हो गया जब क़र्ज़ ख़्वाह ने अपना ह़क़ मुआ़फ़ कर दिया।

(درر الحكام شرح مجلة الاحكام، 1/54)

وَاللهُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُهٗ اَعْلَم صلَّى الله عليه واٰلهٖ وسلَّم

हज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام तख़्ते सुल्तानी पर

(क़िस्त : 05)

यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام तख़्ते सुल्तानी पर

फिर हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام बादशाह के साथ रहने लगे तक़रीबन एक साल बाद बादशाह ने मुल्क के तमाम मुआमलात, ताज व तख़्त और ख़ज़ाने आप के सिपुर्द कर दिये आप ने मुल्क को ख़ुशहाली की राह पर गामज़न कर दिया और अ़द्लो इन्साफ़ का दौर दौरा कर दिया[1] हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام ने क़हतसाली के दिनों के लिये ग़ल्लों के ज़ख़ीरे जमा करने की तदबीर फ़रमाई, इस के लिये बहुत वसीअ़ और आ़लीशान गोदाम तामीर फ़रमाए और कसीर ज़ख़ाइर जमा किये।

ज़मानए क़हत शुरूअ़ हो गया

जब फ़राख़ी के साल गुज़र गए और क़हत का ज़माना आया तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने बादशाह और उस के ख़ादिमों के लिये रोज़ाना सिर्फ़ एक वक़्त का खाना मुक़र्रर फ़रमा दिया। एक रोज़ दोपहर के वक़्त बादशाह ने हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام से भूक की शिकायत की तो आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : येह क़हत की इब्तिदा का वक़्त है। पहले साल में लोगों के पास जो ज़ख़ीरे थे सब ख़त्म हो गए और बाज़ार ख़ाली रह गए।

अ़ज़मते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام

अहले मिस्र हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام से अपने दिरहमो दीनार के बदले में ग़ल्ले ख़रीदने लगे, यूं उन के तमाम दिरहमो दीनार हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के पास आ गए। दूसरे साल मिस्रियों ने ज़ेवर और जवाहिरात के बदले में ग़ल्लों की ख़रीदारी की, यूं उन के तमाम ज़ेवरात और जवाहिरात हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के पास आ गए। जब लोगों के पास ज़ेवर और जवाहिरात में से कोई चीज़ न रही तो उन्हों ने तीसरे साल चौपाए और जानवर दे कर ग़ल्ला ख़रीदा और यूं पूरे मुल्क में कोई शख़्स किसी जानवर का मालिक न रहा। चौथे साल उन्हों ने ग़ल्ले के लिये अपने तमाम ग़ुलाम और बांदियां बेच डालीं। पांचवें साल अपनी तमाम अराज़ी, अ़म्ला और जागीरें फ़रोख़्त कर के हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام से ग़ल्ला ख़रीदा, इस तरह येह तमाम चीज़ें हज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام के पास पहुंच गईं।

छटे साल जब उन के पास कोई चीज़ बाक़ी न रही तो उन्हों ने अपनी औलादें बेच दीं और इस त़रह ग़ल्ले ख़रीद कर अपना वक़्त गुज़ारा। सातवें साल वोह लोग ख़ुद बिक गए और ग़ुलाम बन गए इस त़रह मिस्र में कोई आज़ाद मर्द बाक़ी रहा न औ़रत, जो मर्द था वोह ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का ग़ुलाम था और जो औ़रत थी वोह आप عَلَيْهِ السَّلَام की कनीज़ थी।

उस वक़्त लोगों की ज़बान पर येह था कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की सी अ़ज़मतो जलालत कभी किसी बादशाह को मुयस्सर न आई। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने बादशाह से फ़रमाया : तुम ने देखा कि अल्लाह तआ़ला का मुझ पर कैसा करम है और उस ने मुझ पर कैसा अ़ज़ीम एह़सान फ़रमाया है ? अब इन लोगों के बारे में तुम्हारी क्या राय है ? बादशाह ने अ़र्ज़ की : जो आप عَلَيْهِ السَّلَام की राय हो वोह हमें मन्ज़ूर है, हम सब आप के ताबेअ़ हैं। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मैं अल्लाह तआ़ला को गवाह करता हूं और तुझे गावह करता हूं कि मैं ने तमाम अहले मिस्र को आज़ाद कर दिया और उन के तमाम अम्लाक और कुल जागीरें वापस कर दीं।

पेट भर कर न खाया

इस ज़माने में ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने कभी शिकम सैर हो कर खाना नहीं खाया। एक मरतबा आप عَلَيْهِ السَّلَام से अ़र्ज़ की गई कि इतने अ़ज़ीम ख़ज़ानों के मालिक हो कर आप عَلَيْهِ السَّلَام भूके रहते हैं। आप عَلَيْهِ السَّلَام ने फ़रमाया : मैं इस अन्देशे से भूका रहता हूं कि सैर हो कर कहीं भूकों को भूल न जाऊं। سُبْحٰنَ الله ! क्या पाकीज़ा अख़्लाक़ हैं। मुफ़स्सिरीन फ़रमाते हैं कि मिस्र के तमाम मर्दो औ़रत को ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام के ख़रीदे हुए ग़ुलाम और कनीज़ें बनाने में अल्लाह तआ़ला की येह ह़िक्मत थी कि किसी को येह कहने का मौक़अ़ न मिले कि ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ग़ुलाम की शान में आए थे और मिस्र के एक शख़्स के ख़रीदे हुए हैं बल्कि सब मिस्री उन के ख़रीदे और आज़ाद किये हुए ग़ुलाम हों। ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने जो इस ह़ालत में सब्र किया था उस की येह जज़ा दी गई।[2]

भाइयों की मिस्र आमद

आहिस्ता आहिस्ता क़ह़त के असरात से कन्अ़ान भी मुतअस्सिर हो गया, ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام की इजाज़त से बेटे ग़ल्ला ख़रीदने आए[3] ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने अपने भाइयों को पहचान लिया मगर भाई ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام को पहचान न सके कुंएं में डाले जाने से अब तक 40 साल का त़वील अ़र्सा गुज़र गया था,[4] ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام ने एक तदबीर से अपने छोटे भाई बन्यामीन को अपने पास रोक लिया।[5]

याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام का ह़ुज़्न व मलाल

एक भाई मिस्र में ठहर गया बाक़ी भाई वापस कन्अ़ान आ गए ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने बिन्यामीन की ख़बर सुन कर अपने बेटों से मुंह फेर लिया और बेटों से फ़रमाया : हाय अफ़सोस ! यूसुफ़ की जुदाई पर। उस वक़्त ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام का ह़ुज़्न व मलाल इन्तिहा को पहुंच गया था, जब बेटों ने वज़ाह़त पेश की तो फ़रमाया : मेरी परेशानी और ग़म कम हो या ज़ियादा, मैं उस की फ़रियाद तुम से या और किसी से नहीं बल्कि अल्लाह पाक ही से करता हूं और अल्लाह तआ़ला अपनी रह़मत और एह़सान से मुझे वहां से आसानी अ़ता करेगा जहां से मेरा गुमान भी न होगा।[6]

मसाकीन को खाना खिलाइये

सय्यिदे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : एक मरतबा ह़ज़रते याक़ूब عَلَيْهِ السَّلَام ने किसी के सामने यूं फ़रमाया : ह़ज़रते यूसुफ़ पर रोने की वज्ह से मेरी बीनाई कमज़ोर हो गई, ह़ज़रते जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام ह़ाज़िर हो गए और अ़र्ज़ की : अल्लाह ने आप

को सलाम भेजा है और फ़रमाया है : मेरे इ़लावा किसी और से फ़रियाद क्यूं करते हैं, आप ने फ़रमाया : मैं अल्लाह ही से अपने रंजो ग़म की फ़रियाद करता हूं, फिर आप ने यूं दुआ़ की : ऐ मेरे रब ! क्या तू इस बूढ़े पर रह़म नहीं करेगा, मेरी बसारत कमज़ोर हो गई पीठ झुक गई, मेरे फूल (ह़ज़रते यूसुफ़ व बन्यामीन) को मुझ से मिला दे ताकि मैं मरने से पहले उन की ख़ुश्बू सूंघ लूं, ह़ज़रते जिब्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए और अ़र्ज़ गुज़ार हुए : अल्लाह करीम आप को सलाम भेजता है और फ़रमाता है : (येह दोनों आप से ज़रूर मिलेंगे) अगर उन दोनों का विसाल भी हो गया होता तो फिर भी मैं उन दोनों को आप के लिये ज़िन्दा कर देता, आप मसाकीन को खाना खिलाइये, बेशक ! मेरे बन्दों में मुझे ज़ियादा मह़बूब अम्बियाए किराम और मसाकीन हैं, उस के बाद ह़ज़रते याक़ूब عَلَیْہِ السَّلَام का मामूल था कि जब भी नाश्ता करते तो एक शख़्स को हुक्म देते कि वोह येह एलान कर दे कि जो ग़रीब नाश्ता करना चाहता है वोह ह़ज़रते याक़ूब के साथ नाश्ता कर ले, और जब आप का रोज़ा होता था तो किसी शख़्स से येह एलान करवाते : जो ग़रीब रोज़ादार है वोह याक़ूब के साथ रोज़ा इफ़्तार कर ले।[7]

अल्लाह की रह़मत से मायूस न होना

एक मरतबा मलकुल मौत ह़ज़रते इ़ज़्राईल عَلَیْہِ السَّلَام ह़ज़रते याक़ूब عَلَیْہِ السَّلَام के पास ह़ाज़िरे ख़िदमत हुए तो आप ने पूछा : तुम कौन हो ? और इस घर में कैसे दाख़िल हुए ? मलकुल मौत ने अ़र्ज़ की : मैं वोह हूं जो औलाद को यतीम कर देता हूं, औ़रतों को बेवा कर देता हूं लोगों को एक दूसरे से जुदा कर देता हूं, आप عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : तब तो तुम ह़ज़रते इ़ज़्राईल عَلَیْہِ السَّلَام हो। अ़र्ज़ की : जी हां ! आप ने फ़रमाया : मुझे बताओ कि तुम लोगों की रूह़ को क़ब्ज़ करते हो तो एक साथ क़ब्ज़ करते हो या अलग अलग ?[8] अ़र्ज़ की : मैं एक एक रूह़ क़ब्ज़ करता हूं, पूछा : क्या मेरे यूसुफ़ की रूह़ तुम ने क़ब्ज़ की है ? अ़र्ज़ की : जी नहीं ! पूछा : मेरे पास मुलाक़ात के लिये आए हो या रूह़ क़ब्ज़ करने के लिये ? अ़र्ज़ की : आप के पास सिर्फ़ सलाम अ़र्ज़ करने ह़ाज़िर हुवा हूं, अल्लाह आप की रूह़ उस वक़्त तक क़ब्ज़ नहीं फ़रमाएगा जब तक आप अपने बेटे ह़ज़रते यूसुफ़ عَلَیْہِ السَّلَام से नहीं मिल लेते। येह सुन कर जब याक़ूब عَلَیْہِ السَّلَام ने अपने बेटों से फ़रमाया : ऐ मेरे बेटो ! जाओ और यूसुफ़ और उस के भाई को तलाश करो[9] तो बेटों ने कहा : हम बिन्यामीन के मुआ़मले में कोशिश करना तो नहीं छोड़ेंगे अलबत्ता ह़ज़रते यूसुफ़ चूंकि अब ज़िन्दा नहीं, इस लिये हम उन्हें तलाश नहीं करेंगे। ह़ज़रते याक़ूब عَلَیْہِ السَّلَام ने फ़रमाया : अल्लाह तआ़ला की रह़मत से मायूस न हो, बेशक अल्लाह पाक की रह़मत से काफ़िर लोग ही नाउम्मीद होते हैं।[10]

---

(1) تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص125 ملخصًا (2) صراط الجنان، 5/19، 20 بتغیر (3) تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص126 (4) تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص127 (5) تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص132 ملخصًا (6) صراط الجنان، 5/50 بتغیر (7) شعب الایمان، 3/230، حدیث:3403 ملخصًا (8) تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص133 (9) تاریخ الانبیاء للخطیب البغدادی، ص134 (10) صرط الجنان، 5/51 بتغیر۔

ख़िलाफ़ते राशिदा और मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رضی اللہ عنہ

(मुख़्तसर जाइज़ा)

इस्लामी तारीख़ के सुनहरे औराक़ में एक ऐसा बाब है जो आफ़्ताबे नुबुव्वत की ज़ियाबारियों से मुनव्वर है, जहां ख़ुलफ़ाए राशिदीन के क़ुलूब में ईमान की लौ, मह़ब्बत का समुन्दर और अख़ुव्वत के फूल खिले हुए नज़र आते हैं। येह वोह मुक़द्दस दौर था जब दिलों में बाहमी एह़तिराम की अ़ज़मत, ख़ैर ख़्वाही की शम्अ़ और भाईचारे की मुअ़त्तर फ़ज़ा मोजज़न थी। इस ह़वाले से बिलख़ुसूस शेरे ख़ुदा, मौलाए काइनात ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा رضی اللہ عنہ के वोह ईमान अफ़रोज़, ह़िक्मत भरे और जुरअत मन्दाना इक़्दामात क़ाबिले मुतालआ़ हैं जो उन्हों ने ख़ुलफ़ाए सलासा की अ़ज़मत व नामूस की ह़िफ़ाज़त, उन के रियासती फ़ैसलों की शरई ताईद और उम्मत के इत्तिहाद की ख़ातिर किये। येह वोह रौशन मिसालें हैं जिन्हों ने मुसलमानों की सफ़ों में यक जेहती क़ाइम रखी, रियासत के नज़्मो नस्क़ को मज़बूत बनाया और फ़ित्ना परदाज़ों की सरकोबी का फ़रीज़ा सर अन्जाम दिया।

ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ की बैअ़त और ताईद मुसलमानों के पहले ख़लीफ़ा ह़ज़ते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने ख़लीफ़ा बनने के तीन दिन बाद फ़रमाया : कोई है जो मेरी बैअ़त को फ़स्ख़ कर के दस्तबरदारी और अ़लाह़दगी चाहता हो ताकि मैं उसे (बैअ़त की पाबन्दियों से) दस्तबरदार कर दूं ? तो मौला अ़ली رضی اللہ عنہ ने कहा : अल्लाह की क़सम ! हम न तो आप को इस ओ़हदे से दस्तबरदार और मुस्तअ़फ़ी करेंगे और न ही आप से इस्तिअ़फ़ा और दस्तबरदारी का मुतालबा करेंगे, वोह कौन (हिम्मत वाला और ताक़त वाला) है जो आप को पीछे करेगा जब कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم ने आप को आगे बढ़ाया है ?[1]

ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी के ह़क़ होने की ताईद और मुनाफ़िक़ीन का रद ख़िलाफ़ते सिद्दीक़े अकबर के शुरूअ़ में एक क़बीले के सरदार ह़ज़रते अ़ली رضی اللہ عنہ और ह़ज़रते अ़ब्बास رضی اللہ عنہ के पास आए और अ़र्ज़ की : ऐ अ़ली और ऐ अ़ब्बास ! क्या वज्ह है कि येह ख़िलाफ़त क़ुरैश के सब से कमज़ोर और कम तादाद वाले क़बीले में चली गई है ? इस पर ह़ज़रते अ़ली رضی اللہ عنہ ने (रियासत के नज़्मो नस्क़ को बरक़रार रखने और मुल्की निज़ाम को क़ुव्वत देने के लिये) फ़रमाया : अगर हम ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ को इस का अहल न समझते तो हम उन्हें ख़लीफ़ा तस्लीम न करते, बिलाशुबा मोमिन एक दूसरे के ख़ैर ख़्वाह होते हैं अगर्चे उन के घर और जिस्म दूर हों, और बिलाशुबा मुनाफ़िक़ लोग आपस में धोका देने वाले होते हैं।[2]

ख़लीफ़ए वक़्त की ह़िफ़ाज़त की फ़िक्र और दूर अन्देशी जब कुछ लोगों ने ज़कात का इन्कार किया और मुर्तद हो गए तो ह़ज़रते अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ बज़ाते ख़ुद उन से जिहाद करने

के लिये मैदान में निकलने लगे, तो ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने उन की सुवारी की लगाम थाम कर अ़र्ज़ की : اِلَی اَیْنَ یَا خَلِیفَۃَ رَسُولِ اللّٰہِ؟ اَقُولُ لَکَ مَا قَالَ لَکَ رَسُولُ اللّٰہِ صلّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلّم یَوْمَ اُحُدٍ: شِمْ سَیفَکَ، وَلَا تَفْجَعْنَا بِنَفْسِکَ، وَارْجِعْ إِلَی الْمَدِینَۃِ، فَوَاللّٰہِ لَئِنْ فُجِعْنَا بِکَ لَا یَکُونُ بَعْدَکَ لِلْاِسْلَامِ نِظَامٌ اَبَدًا यानी ऐ ख़लीफ़ए रसूल ! आप कहां जा रहे हैं ? मैं आप से वोही बात कहता हूं जो रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप से ग़ज़्वए उहुद के दिन फ़रमाई थी : अपनी तल्वार नियाम में रखिये और अपनी जान के ग़म में मुब्तला न कीजिये और मदीना वापस तशरीफ़ ले जाइये । अल्लाह की क़सम ! अगर हमें आप का सदमा पहुंचा तो आप के बाद इस्लाम का निज़ाम कभी क़ाइम नहीं हो पाएगा ।[3]

ख़िलाफ़ते सिद्दीक़ी व फ़ारूक़ी को हुज्जत व बुन्याद क़रार दिया एक मौक़अ़ पर मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने इरशाद फ़रमाया : बेशक अल्लाह करीम ने ह़ज़रते सिद्दीक़े अकबर व फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا दोनों को बाद में आने वाले तमाम हुक्मरानों के लिये क़ियामत तक के लिये हुज्जत और राहनुमा बना दिया, अल्लाह पाक की क़सम ! येह दोनों (अपने उमूरे ख़िलाफ़त को बेहतर त़रीक़े से अन्जाम देने में) बहुत दूर तक आगे बढ़ गए हैं (जहां दूसरे नहीं पहुंच सकते) और उन दोनों नुफ़ूसे क़ुदसिय्या ने अपने बाद में आने वालों को बहुत थका दिया ।[4]

मौला अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का येह फ़रमान ख़िलाफ़ते राशिदा के निज़ाम और बेहतरीन त़र्ज़े हुक्मरानी की अहमिय्यत पर एक दस्तख़त़ और मुहर की हैसिय्यत रखता है ।

गुस्ताख़े शैख़ैन के लिये सख़्त तादीबी कारवाई ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ह़ज़रते अबू बक्र व ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا के बारे में गुस्ताख़ाना कलिमात कहने वालों के लिये एक सख़्त अख़्लाक़ी और क़ानूनी हुदूद का एलान किया, एक मरतबा किसी ने अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! मैं एक ऐसे गिरौह के पास से गुज़रा जो सिद्दीक़े अक्बर व फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا का तज़्किरा इस त़रह़ कर रहे थे जो इस्लाम में रवा नहीं । येह सुन कर मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ मिम्बर पर खड़े हो गए और इरशाद फ़रमाया : ख़ालिक़े काइनात की क़सम ! सिर्फ़ ह़क़ीक़ी मोमिन ही इन दोनों से मह़ब्बत करेगा और बदबख़्त व बददीन ही उन से नफ़रत व मुख़ालिफ़त करेगा क्यूंकि उन की मह़ब्बत क़ुर्बत (ईमाने ह़क़ीक़ी) और उन से नफ़रत बेदीनी है । लोगों को क्या हो गया कि रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इन दोनों भाइयों, वज़ीरों, दोस्तों, क़ुरैश के सरदार और मुसलमानों के रूह़ानी वालिदैन का इस त़रह ज़िक्र करते हैं (फिर मौला अ़ली ने गुस्ताख़ों का मुंह बन्द करते हुए फ़रमाया) मैं हर उस शख़्स से बेज़ार हूं जो उन का इस बुरे अन्दाज़ में ज़िक्र करता है और मैं उसे सज़ा दूंगा ।[5]

एक मरतबा सिद्दीक़े अकबर और फ़ारूक़े आज़म की इ़ज़्ज़त व नामूस पर पहरा देते हुए यूं फ़रमाया : रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने सबक़त ले ली, फिर ह़ज़रते अबू बक्र दूसरे हुए और उ़मर फ़ारूक़ तीसरे हुए । अगर मैं किसी ऐसे शख़्स को पाउं जो मुझे अबू बक्र और उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُمَا पर फ़ज़ीलत दे तो मैं उसे मुफ़्तरी (यानी तोहमत लगाने वाले) की ह़द के त़ौर पर 80 कोड़े मारूंगा और उस की गवाही क़ाबिले क़बूल न होगी ।[6]

ख़िलाफ़ते फ़ारूक़ी के फ़ैसलों को क़ाइम रखा मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने ख़ुलफ़ाए सलासा के दौर ही में नहीं बल्कि उन के बाद भी उन के साथ मह़ब्बत व अदब का रिश्ता क़ाइम रखा और उन के इक़्दामाते ह़क़्क़ा की ताईद व तौसीक़ भी की, जैसा कि अमीरुल मोमिनीन ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने अहले नजरान को मुल्क बदर कर दिया था । मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के दौरे ख़िलाफ़त में वोह लोग आप की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और अ़र्ज़ की : ऐ अमीरुल मोमिनीन ! अब काग़ज़ी कार्रवाई आप के हाथ में है, पहले भी आप ने हमारे लिये सिफ़ारिश की थी, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने हमें हमारी ज़मीन से निकाल दिया था आप हमें दोबारा लौटने की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमा दें । येह सुन कर मौला अ़ली शेरे ख़ुदा ने (फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ के फ़ैसले का दिफ़ाअ़ करते हुए उसे दुरुस्त क़रार दिया और) फ़रमाया तुम्हारी बर्बादी हो, बेशक ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बिल्कुल दुरुस्त फ़ैसला फ़रमाने वाले थे और याद रखो ! ह़ज़रते उ़मर फ़ारूक़े आज़म رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने जो फ़ैसला फ़रमा दिया मैं उस में ज़र्रा भर तब्दीली नहीं करूंगा ।[7]

मुआदए फ़ारूक़ी को क़ाइम रखा हज़रते मौला अ़ली رضی اللہ عنہ कूफ़ा तशरीफ़ लाए तो आप ने इरशाद फ़रमाया : مَا قَدِمْتُ لِاَحُلَّ عُقْدَةً شَدَّهَا عُمَرُ यानी अमीरुल मोमिनीन हज़रते उ़मर رضی اللہ عنہ ने जो मुआहदा कर लिया था मैं उसे हरगिज़ नहीं तोड़ूंगा।[(8)]

दौरे फ़ारूक़ी और मौला अ़ली की मुशावरती ख़िदमात एक मरतबा हज़रते फ़ारूक़े आज़म رضی اللہ عنہ ने फ़ारस पर लश्कर कशी के लिये ख़ुद निकलने का इरादा किया और सहाबए किराम رضی اللہ عنہم से मश्वरा मांगा : आप लोगों की क्या राय है कि मैं यहां से कुछ लोगों को साथ ले जाऊं और वहां क़रीब किसी मक़ाम पर ठहर कर इस्लामी लश्कर जमा करूं और मुसलमानों की मदद करूं यहां तक कि अल्लाह तआ़ला मुसलमानों को फ़त्ह अ़ता फ़रमा दे। अक्सर सहाबा ने अ़र्ज़ की : हमारी राय येह नहीं है (कि आप उन के पास चले जाएं) हां ! आप के मश्वरे और राय उन से दूर नहीं हैं (यानी उन के काम आएंगे) लड़ने के लिये अ़रब के शहसवार और जंगजू और बहादुर काफ़ी हैं उन ही लोगों ने दुश्मन के लश्करों को शिक्सते फ़ाश दी है, बाज़ सहाबा رضی اللہ عنہم ने इस राय पर तन्क़ीद की, फिर हज़रते अ़ली رضی اللہ عنہ खड़े हुए और कहने लगे : अक्सर हज़रात ने जो राय दी है वोह दुरुस्त है जंग में कामयाबी और नाकामी का दारोमदार तादाद के कम या ज़ियादा होने पर नहीं है, येह तो अल्लाह का दीन है जिस को उस ने ग़ालिब कर दिया है और उसी का लश्कर है जिसे उस ने फ़िरिश्तों के ज़रीए मज़बूत किया यहां तक कि इस्लामी लश्कर इस मक़ाम तक पहुंच गया है हम तो अल्लाह के वादे पर भरोसा करते हैं वोही अपने वादे को पूरा करने वाला है और अपने लश्कर की मदद करने वाला है।[(9)]

मौला अ़ली رضی اللہ عنہ की बैअ़ते उ़स्मानी और फ़साद की रोक थाम हज़रते अ़ली رضی اللہ عنہ ने तीसरे ख़लीफ़ए राशिद हज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी رضی اللہ عنہ की न सिर्फ़ बैअ़त में सबक़त की बल्कि फ़सादी गिरोहों को मदीना पहुंचने से पहले ही रास्ते में रोक कर और उन्हें मलामत कर के एक अ़ज़ीम ख़िदमत और अ़मली दिफ़ाअ़ का मुज़ाहरा किया।

बहुत से मुअर्रिख़ीन की राय है कि हज़रते अ़ली رضی اللہ عنہ हज़रते उ़स्मान رضی اللہ عنہ की बैअ़त करने वालों में सब से पहले थे। एक मरतबा मौला अ़ली رضی اللہ عنہ को ख़बर पहुंची कि अ़ब्दुल्लाह बिन सबा जो अस्ल के एतिबार से यमन का एक यहूदी था एक गिरोह को ले कर मदीने की जानिब चला आ रहा है ताकि लोगों को ख़लीफ़ा हज़रते उ़स्मान رضی اللہ عنہ के ख़िलाफ़ भड़काए (और अम्नो सुकून को बर्बाद करे) तो हज़रते अ़ली رضی اللہ عنہ ने हज़रते उ़स्मान رضی اللہ عنہ से अ़र्ज़ की : मैं आप को उन (फ़सादी) लोगों के शर से महफ़ूज़ रखूंगा, फिर हज़रते अ़ली رضی اللہ عنہ उन फ़सादियों से रास्ते में मक़ामे जुहफ़ा में मिले, उन्हें डांट पिलाई, मलामत किया और वापस लौटा दिया, येह लोग अपने आप को शर्मिन्दा करते हुए वापस चले गए।[(10)]

दौरे उ़स्मानी में मौला अ़ली رضی اللہ عنہ का सफ़ीराना किरदार मौला अ़ली رضی اللہ عنہ जहां एक बेहतरीन मुशीर और इन्तिज़ामी मुआ़मलात पर गहरी निगाह रखते थे वहीं एक बेहतरीन सफ़ीर होने की सलाहिय्यत से मालामाल थे।

जब अहले मिस्र जुहफ़ा में आए और हज़रते उ़स्मान رضی اللہ عنہ पर एतिराज़ात किये तो हज़रते उ़स्मान رضی اللہ عنہ मिम्बर पर जल्वा अफ़रोज़ हुए और फ़रमाया : ऐ प्यारे नबी के सहाबा ! मुझे बुरा बनाया जा रहा है, बुराइयों को फैलाया जा रहा है, नेकियों को छुपाया जा रहा है मेरे बारे में नादान लोगों को बेवुक़ूफ़ बनाया जा रहा है, तुम में कोई ऐसा है जो उन लोगों के पास जाए और पूछे कि वोह किस चीज़ पर नाराज़ हैं और क्या चाहते हैं ? शेरे ख़ुदा मौला अ़ली رضی اللہ عنہ खड़े हुए और अ़र्ज़ की : मैं (येह ज़िम्मेदारी क़बूल करता हूं)। येह देख कर हज़रते उ़स्मान ने फ़रमाया : आप उन को ज़ियादा जानते भी हैं और इन से पूछगछ करने का ज़ियादा हक़ भी रखते हैं, हज़रते मौला अ़ली رضی اللہ عنہ (हज़रते उ़स्मान رضی اللہ عنہ के सफ़ीर बन कर) अहले मिस्र के पास गए, तो उन्हों ने आप को ख़ुश आमदीद किया और कहा : हमारे पास आप से ज़ियादा कोई महबूब शख़्स नहीं आया। आप ने पूछा : तुम लोग किस बात पर नाराज़ हो और तुम्हारी शिकायात क्या हैं ? उन्हों ने अपनी शिकायात बताईं[(11)]

मौला अ़ली رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने सिफ़ारती पहलू को सामने रखा और ख़ामोशी से उन लोगों की शिकायात ले कर ह़ज़रते उ़स्मान के पास पहुंचे तो ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने उन लोगों को जवाबात भिजवाए (मौला अ़ली ने ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी के जवाबात उन लोगों तक अह़सन त़रीक़े से पहुंचाए) तो लोग राज़ी हो गए और ख़ुशी ख़ुशी मदीना में दाख़िल हो गए। और ह़ज़रते उ़स्मान رَضِیَ اللہُ عَنْہ ने इस बारे में अहले बसरा और अहले कूफ़ा को भी ख़त़ लिख दिया कि जो शख़्स मदीना ह़ाज़िर न हो सके तो वोह (किसी को यहां मदीने में) अपना वकील मुक़र्रर कर दे (और जो शिकायत हो ह़ल करवा ले)।[12]

येह तमाम वाक़िआ़त इन्तिहाई इख़्तिसार के साथ पेश किये गए हैं इस के इ़लावा भी औराक़े तारीख़ में सैंकड़ों ऐसे वाक़िआ़त और मिसालें मौजूद हैं जिन से वाज़ेह़ होता है कि मौला अ़ली शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللہُ عَنْہ को ख़ुलफ़ाए सलासा से किस क़दर मह़ब्बत थी और आप उन का किस क़दर इकराम फ़रमाते थे और उन के दौरे ख़िलाफ़त में भी दीनी ख़िदमात के लिये पेश पेश रहते थे। शेरे ख़ुदा की येह ताबनाक ख़िदमात और ईमान अफ़रोज़ इक़्दामात उम्मते मुस्लिमा के लिये एक रौशन चराग़ और हमेशा के लिये क़ाबिले तक़्लीद नमूना हैं। आप ने ख़ुलफ़ाए सलासा की बैअ़त, ह़िमायत, दिफ़ाअ़ और उन के फ़ैसलों की तौसीक़ के ज़रीए इस्लामी रियासत के इस्तिह़काम, उम्मत के इत्तिह़ाद और ख़िलाफ़ते राशिदा के तसल्सुल को यक़ीनी बनाया। अल्लाह करीम हमें ख़ुलफ़ाए राशिदीन की मह़ब्बत से सरशार फ़रमाए और आख़िरत में उन का क़ुर्ब व वसीला अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

---

(1) تاریخ ابن عساکر، 30/306 (2) کنز العمال، جز5، 3/262، حدیث:14152 (3) کنز العمال، جز5، 3/262، حدیث:14154 (4) مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب لابن الجوزی، ص42 (5) مناقب امیر المؤمنین عمر بن الخطاب لابن الجوزی، ص42 (6) کنز العمال، جز13، 7/6، حدیث: 36097 (7) مصنف ابن ابی شیبہ، 17/65، حدیث:32667 (8) مصنف ابن ابی شیبہ، 17/65، حدیث:32668 (9) تاریخ طبری، 4/123 تا 124 ملخصاً (10) فقہ السیرۃ للبوطی، 540 تا 541 ملخصاً (11) تاریخ ابن عساکر، 39/249 (12) تاریخ ابن عساکر، 39/249۔

रमज़ानुल मुबारक के फ़ज़ाइल, रोज़ा, सह़र व इफ़्तार, तरावीह़, एतिकाफ़ और सदक़ए फ़ित्र वग़ैरा के मसाइल जानने के लिये किताब

“फ़ैज़ाने रमज़ान (मुरम्मम)”

आज ही नेट से डाउनलॉड कर के मुत़ालआ़ कीजिये।

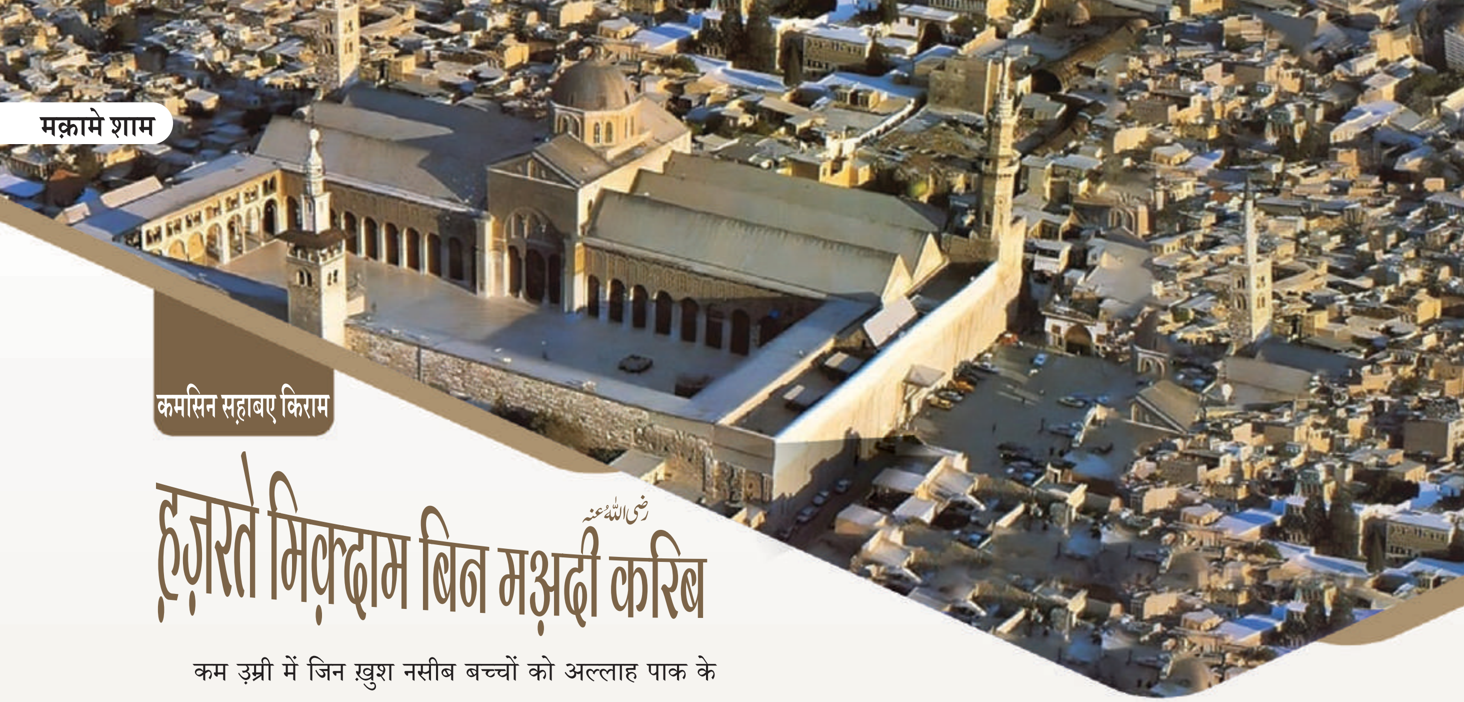

कमसिन सहाबए किराम

हज़रते मिक़्दाम बिन मअ़दी करिब رضی اللہ عنہ

कम उ़म्री में जिन ख़ुश नसीब बच्चों को अल्लाह पाक के आख़िरी नबी ह़ज़रते मुहम्मदे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सहाबी होने का शरफ़ मिला उन में ह़ज़रते मिक़्दाम बिन मअ़दी करिब رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ भी शामिल हैं, आइये ! उन के बचपन के बारे में पढ़ कर अपने दिलों को मह़ब्बते सहाबए किराम से रौशन करते हैं :

आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का शुमार कमसिन सहाबा में होता है।[1]

हुज़ूर ने कन्धे पर हाथ मारा : एक मौक़अ़ पर रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने आप के कन्धे पर हाथ मारा और आप को يَاقُدَيْمُ कह कर मुख़ात़ब फ़रमाया।[2]

याद रहे कि येह हाथ मारना ऐसा नहीं था जैसे कि हमारे हां बद तहज़ीबी में एक दूसरे के मारा जाता है बल्कि येह नर्मी और मह़ब्बत का अन्दाज़ था जैसा कि मश्हूर मुफ़स्सिर ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ ने इस की शर्ह़ में उसे हाथ रखने से ताबीर फ़रमाया है, चुनान्चे लिखते हैं : कन्धे पर हाथ रखना, क़ुदैम तस़्ग़ीर फ़रमा कर ख़ित़ाब करना करम व मह़ब्बत के लिये है।[3]

वफ़्द के साथ हुज़ूर की बारगाह में ह़ाज़िरी : आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ बनू कन्दा के उस वफ़्द में शामिल थे जो रह़मते आ़लम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुवा था।[4]

तादादे रिवायात : आप से 47 अह़ादीस मरवी हैं।[5]

ग़ल्ला नाप लिया करो : आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से एक रिवायत मरवी है कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : अपना ग़ल्ला नाप लिया करो, तुम को इस में बरकत दी जाएगी।[6]

मुफ़्ती शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : यानी ग़ल्ला जब रखो तो नाप कर रखो और जब ख़र्च करने के लिये निकालो तो नाप कर निकालो अल्लाह तआ़ला उस में बरकत देगा।[7]

विसाल : हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के वक़्त आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ तक़रीबन 14 साल के थे, क्यूंकि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ने 91 साल की उ़म्र में सिन 87 हिजरी में शाम में वफ़ात पाई।[8]

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

(1)فتح الباری لابنِ حجر، 5/263(2)دیکھئے: ابو داؤد، 3/183، حدیث:2933
(3)مراٰۃ المناجیح، 5/361(4)الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، 4/44(5)تہذیب الاسماء واللغات، 2/415(6)بخاری، 2/27، حدیث:2128(7)نزہۃ القاری، 3/484(8)طبقات ابن سعد، 7/290۔

अपने बुज़ुर्गों को याद रखिये

मज़ार ह़ज़रते बावा मीरां शाह सय्यिद अह़मद मुह़म्मदी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

मज़ार ख़्वाजा कमालुद्दीन ख़ान मुजद्दिदी रामपूरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

मज़ार साईं मुह़म्मद रुक्नुद्दीन नक़्शबन्दी क़ादिरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

रमज़ानुल मुबारक इस्लामी साल का नवां महीना है। इस में जिन सह़ाबए किराम, औलियाए उ़ज़्ज़ाम और उ़लमाए इस्लाम का विसाल या उ़र्स है, उन में से 118 मुख़्तसर ज़िक्र "**माहनामा फ़ैज़ाने मदीना**" रमज़ानुल मुबारक 1438 हि. ता 1446 हि. के शुमारों में किया जा चुका है, मज़ीद 12 का तआ़रुफ़ मुलाह़ज़ा फ़रमाइये :

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان

1 ह़ज़रते औ़फ़, ह़ज़रते मुअ़व्विज़ और ह़ज़रते मुआ़ज़ बिन ह़ारिस ख़ज़रजी अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُم तीनों भाई बनू नज्जार से तअ़ल्लुक़ रखते थे, अपनी वालिदा की निस्बत से इब्ने अ़फ़रा से मारूफ़ थे। 17 रमज़ानुल मुबारक 2 हिजरी को होने वाले ग़ज़्वए बद्र में ह़ज़रते औ़फ़ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने अल्लाह पाक की पसन्दीदा हालत के मुताबिक़ ज़िरह उतार कर, नंगे सर हो कर बहादुरी के साथ जिहाद किया और शहीद हो गए।(1)

2 ह़ज़रते मुअ़व्विज़ बिन ह़ारिस अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने ग़ज़्वए बद्र में अपने भाई ह़ज़रते मुआ़ज़ के साथ मिल कर दुश्मने इस्लाम अबू जहल पर इस तेज़ी से ह़म्ला किया कि उस का काम तमाम हो गया। इस के बाद येह भी बे जिगरी से लड़ते हुए दर्जए शहादत पर फ़ाइज़ हो गए।(2)

3 ह़ज़रते यज़ीद बिन ह़ारिस अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه ने ग़ज़्वए बद्र के मौक़अ़ पर हाथ में मौजूद खजूरों को फेंका और जिहाद में शरीक हुए और लड़ते हुए जामे शहादत नोश फ़रमा गए।(3)

औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام

4 ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल्लाह रज़ासानी ह़सनी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه कसरते इ़बादत, ज़ोहद और तन्हाई में मश्हूर थे, आप आ़लिम, सालेह़, शाइ़र और रावी ह़दीस थे, नेकी की दावत बहुत दिया करते थे, आप की पैदाइश बसरा में 150 हि. के बाद हुई और 15 रमज़ान 247 हि. को मक्कए मुकर्रमा में विसाल फ़रमाया।(4)

5 ह़ज़रते बावा मीरां शाह सय्यिद अह़मद मुह़म्मदी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه की पैदाइश बेजापूर, रियासत कर्नाटक, हिन्द में हुई, देहली में इस्लामी उ़लूमो फ़ुनून में महारत ह़ासिल कर के दौरे जहांगीरी में क़ाज़ियुल क़ुज़्ज़ाह मुक़र्रर हुए, कुछ अ़र्से बाद सज्दए ताज़ीमी से इन्कार कर के अजमेर शरीफ़, बग़दाद शरीफ़ और मदीना शरीफ़ में मुजाहदात में मसरूफ़ हुए, विसाल 18 रमज़ान 1092 हि. को फ़रमाया, मज़ार मर्जए ख़लाइक़ है।(5)

6 भूरे मियां ख़्वाजा कमालुद्दीन ख़ान मुजद्दिदी रामपूरी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه मश्हूर वलियुल्लाह ह़ज़रते शाह दरगाही मुजद्दिदी रामपूरी के मुरीदो ख़लीफ़ा थे। दिन रात ज़िक्रो फ़िक्र में रहते। आप का विसाल 4 रमज़ान 1284 हि. को हुवा। महल्ला पुल पुख़्ता रामपूर में तदफ़ीन

की गई। कुछ अ़र्से बाद गुम्बददार मज़ार तामीर हुवा।[(6)]

7 ह़ज़रते ख़्वाजा शाह मुह़म्मद इमाम अ़ली चिश्ती क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की विलादत ख़ानदाने सुल्तानुत्तारिकीन सूफ़ी ह़मीदुद्दीन नागोरी में हुई और विसाल 10 रमज़ान 1282 हि. को हुवा, मज़ार झुन्झुनू (Jhunjhunu), राजस्थान हिन्द में है। आप ख़्वाजा अ़ब्दुल्लाह ग़ुलाम भीक कोड़हाई चिश्ती के मुरीदो ख़लीफ़ा और ख़्वाजा अ़ब्दुल ग़फ़ूर अख़वन्द क़ादिरी के ख़लीफ़ा, कसीरुल फ़ैज़ थे।[(7)]

8 रूहानी बुज़ुर्ग ख़्वाजा पीर साईं मुह़म्मद रुक्नुद्दीन नक़्शबन्दी क़ादिरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश कमो बेश 1930 ई. कश्मीर के मज़हबी घराने में हुई, कुछ अ़र्सा मुलाज़मत की फिर ज़िक्रो फ़िक्र और मुजाहदात में मसरूफ़ हुए, पीर सय्यिद ह़ैदर शाह क़लन्दर पाक शरीफ़ से बैअ़तो ख़िलाफ़त पाई, उन्हों ने जो मसाजिद व मदारिस क़ाइम किये उन की तादाद 34 है। विसाल 11 रमज़ान 1421 हि. को विसाल फ़रमाया।[(8)]

उ़लमाए इस्लाम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام

9 शैख़ुल ह़नफ़िया, ह़ज़रते इमाम अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद कबीर बुख़ारी ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه मावराउन्नहर के रहने वाले थे, उन्हों ने अपने वालिदे गिरामी अ़ल्लामा अबू ह़फ़्स कबीर से तालीम ह़ासिल की और आ़लिमे मावराउन्नहर के दर्जे पर फ़ाइज़ हुए, आप सिक़ह आ़लिमे दीन व इमाम, ज़ोहदो तक़्वा के जामेअ़ और क़ुरआनो सुन्नत के पाबन्द थे, उ़लमा की एक तादाद ने आप से इस्तिफ़ादा किया। आप का विसाल रमज़ान 264 हि. में हुवा।[(9)]

10 ह़ज़रते इमाम उ़बैदुल्लाह बिन यह़या लैसी मालिकी उन्दुलुसी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की पैदाइश उन्दुलुस के एक इ़ल्मी घराने में हुई, वालिदे गिरामी से उ़लूमे इस्लामी ह़ासिल किये, वालिद साह़िब की वफ़ात के बाद ह़रमैने त़य्यिबैन और मिस्र का सफ़र किया और वहां के उ़लमा से इस्तिफ़ादा किया, वापस आ कर मस्नदे तदरीस पर फ़ाइज़ हुए, कसीर उ़लमा ने इस्तिफ़ादा किया, आप जय्यिद आ़लिमे उन्दुलुसी, फ़क़ीहे मालिकी, मुस्निदे क़ुर्तबा, ज़हीनो फ़त़ीन, जूदो सख़ावत के मालिक, कसीरुस्सदक़ात व एह़सानात, साह़िबे सरवत व वक़ार और मर्जए ख़ासो आ़म थे, रमज़ान 298 हि. को विसाल फ़रमाया।[(10)]

11 शैख़ अबुल अ़ब्बास मुह़म्मद बिन अह़मद बिन मह़बूब मह़बूबी मरवज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इब्तिदाई तालीमो तरबियत मक़ामी उ़लमा से ह़ासिल की, उ़लूमो फ़ुनून में महारत ह़ासिल करने के बाद 265 हि. में आप तिरमिज़ (सूबा सरख़ान दरिया, उज़्बेकिस्तान) तशरीफ़ ले गए वहां ह़ज़रते इमाम तिरमिज़ी की सोह़बत में रह कर जामेअ़ तिरमिज़ी की समाअ़त कर के इजाज़त ह़ासिल की, आप आ़लिम फ़ाज़िल, मुह़द्दिस, मुस्नद और शैख़ुल बलद थे। आप का विसाल रमज़ान 346 हि. में हुवा।[(11)]

12 शैख़ुल क़ुर्रा ह़ज़रते अ़ल्लामा इमाम अबू दाऊद सुलैमान बिन अबू क़ासिम नजाह़ उमवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिद उन्दुलुस के ह़ाकिम मुअय्यिद बिल्लाह हिशाम सानी बिन ह़कम के आज़ाद कर्दा ग़ुलाम थे, आप की पैदाइश 413 हि. में क़ुर्तबा में हुई, फिर आप दानिया और बलन्सिया मुन्तक़िल हो गए, यहां के जय्यिद उ़लमा से इ़ल्म ह़ासिल कर के आप अपने वक़्त के शैख़ व इमामुल क़ुर्रा और मुफ़स्सिरे क़ुरआन बन गए, नेकी, दीन, इ़ल्म और बुज़ुर्गी में आप का मरतबा बहुत बुलन्द था, आप का विसाल 16 रमज़ान 496 हि. में हुवा।[(12)]

---

(1)الاصابہ، 4/614(2)الاصابہ، 4/614-6/152(3)الاصابہ، 6/511
(4)اتحاف الاکابر، ص157، ویکیپیڈیا، مضمون: عبد اللہ الرضا بن موسی الجون
(5)کتبہ مزار،نوائے وقت،2،اپریل 2021ء(6)تذکرہ کاملان رامپور، ص86، 87 (7) تذکرۃ الانساب، ص79 (8) روزنامہ جموں وکشمیر، اتوار،14 مئی 2023ء(9)سیر اعلام النبلاء،8/458-10/415،416(10)سیر اعلام النبلاء، 11/72-الوافی بالوفیات، 19/277(11)سیر اعلام النبلاء،12/160-العبر فی خبر من غبر،2/74- الوافی بالوفیات،2/31(12)سیر اعلام النبلاء،14/216-اعلام للزرکلی،3/137-غایۃ النہایۃ،1/287- معرفۃ القراء،2/862،رقم:572

नए लिखारी
(New Writers)

तवाज़ोअ़ का क़ुरआनी बयान

मुह़म्मद अ़ब्दुल ग़फ़ूर अ़लवी
(दर्जए साबिअ़ा जामिअ़तुल मदीना)

तवाज़ोअ़ का लुग़वी माना : आ़जिज़ी व इन्किसारी करना है। मिन्हाजुल आ़बिदीन में है : तवाज़ोअ़ का इस्तिलाह़ी माना : अपने को ह़क़ीर और कमतर समझना। (मिन्हाजुल आ़बिदीन, स. 81)

तवाज़ोअ़ ऐसी सिफ़त है कि जिस के ज़रीए इन्सान दुनिया और आख़िरत में कामयाबी पा सकता है। क़ुरआनो ह़दीस में तवाज़ोअ़ करने वाले की पज़ीराई की गई है। अल्लाह पाक भी तवाज़ोअ़ करने वालों को पसन्द फ़रमाता है और उन लोगों के लिये आख़िरत में अच्छे इन्आ़म का वादा फ़रमाया, जब कि इस के मुक़ाबिल तकब्बुर की मज़म्मत बयान की गई। क़ुरआने पाक में तवाज़ोअ़ का ज़िक्र मुख़्तलिफ़ एतिबार से है जो कि दर्जे ज़ैल है :

1 मग़्फ़िरत और अज्रे अ़ज़ीम का वादा : क़ुरआने पाक में एक मक़ाम पर ईमान वालों और वालियों की कई सिफ़ात बयान की गई हैं, इन सिफ़ात में तवाज़ोअ़ करने वालों और वालियों का भी ज़िक्र फ़रमाया और आख़िर में उन सब सिफ़ात वालों के लिये मग़्फ़िरत और अज्रे अ़ज़ीम की बिशारत भी सुनाई चुनान्चे अल्लाह पाक सूरए अह़ज़ाब की आयत नम्बर 35 में इरशाद फ़रमाता है: ﴿وَ الْخٰشِعِیْنَ وَ الْخٰشِعٰتِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और आ़जिज़ी करने वाले और आ़जिज़ी करने वालियां। (پ22،الاحزاب:35)

आयत के आख़िर में फ़रमाया : ﴿اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّ اَجْرًا عَظِیْمًا(۳۵)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : उन सब के लिये अल्लाह ने बख़्शिश और बड़ा सवाब तय्यार कर रखा है। (پ22،الاحزاب:35)

2 ख़ुशख़बरी की नवेद : एक मक़ाम पर अल्लाह पाक ने तवाज़ोअ़ करने वालों की सिफ़ात बयान कीं और हुज़ूर عَلَیْهِ السَّلَام को हुक्म फ़रमाया कि आप आ़जिज़ी करने वालों को ख़ुशख़बरी सुना दें। अल्लाह पाक फ़रमाता है : ﴿وَ بَشِّرِ الْمُخْبِتِیْنَ(۳۴) الَّذِیْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَ جِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَ الصّٰبِرِیْنَ عَلٰى مَاۤ اَصَابَهُمْ وَ الْمُقِیْمِی الصَّلٰوةِۙ وَ مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ یُنْفِقُوْنَ(۳۵)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मह़बूब ख़ुशी सुना दो उन तवाज़ोअ़ वालों को कि जब अल्लाह का ज़िक्र होता है उन के दिल डरने लगते हैं और जो उफ़्ताद पड़े उस के सहने वाले और नमाज़ बरपा (क़ाइम) रखने वाले और हमारे दिये से ख़र्च करते हैं। (پ17،الحج:34،35)

इस आयत की तफ़्सीर में है : यानी आ़जिज़ी करने वाले वोह लोग हैं कि जब उन के सामने अल्लाह तआ़ला का ज़िक्र होता है तो उस की हैबत व जलाल से उन के दिल डरने लगते हैं और अल्लाह तआ़ला के अ़ज़ाब का ख़ौफ़ उन के आज़ा से ज़ाहिर होने लगता है और अल्लाह तआ़ला की त़रफ़ से उन्हें जो मुसीबतो मशक़्क़त पहुंचे उस पर सब्र करते हैं और नमाज़ को उस के औक़ात में क़ाइम रखते हैं

और अल्लाह तआला के दिये हुए रिज़्क़ में से सदक़ा व ख़ैरात करते हैं। (सिरातुल जिनान, 6/443)

3 आजिज़ी का हुक्म : इन्सान पैदा होने से ले कर बड़े होने तक वालिदैन का मोह़ताज होता है। बच्चे पर वालिदैन के इतने एहसानात हैं कि वोह ज़िन्दगी भर भी उन का बदला अदा नहीं कर सकता। अल्लाह पाक ने बच्चों को वालिदैन से आजिज़ी के साथ पेश आने का हुक्म दिया। अल्लाह पाक फ़रमाता है : ﴿وَ اخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और उन के लिये आजिज़ी का बाज़ू बिछा नर्म दिली से। (پ15، بنی اسراءیل:24)

4 आजिज़ी के साथ चलने का हुक्म : अल्लाह पाक ने मुसलमानों को हुक्म इरशाद फ़रमाया कि जब वोह ज़मीन में चलें तो आजिज़ी व इन्किसार के साथ चलें न कि तकब्बुर के अन्दाज़ में इरशादे रब्बानी है : ﴿وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और ज़मीन में इतराता न चल। (پ15، بنی اسراءیل:37) बल्कि अल्लाह पाक ने आहिस्ता और आजिज़ी के साथ चलने वालों को अपना बन्दा फ़रमाया : ﴿وَ عِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْاَرْضِ هَوْنًا﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और रह़मान के वोह बन्दे कि ज़मीन पर आहिस्ता चलते हैं। (پ19، الفرقان:63)

अल्लाह पाक हमें भी आजिज़ी व इन्किसार जैसी उम्दा सिफ़ात से नवाज़े और तकब्बुर से बचने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। आमीन

मक़रूज़ पर नर्मी की नबवी तालीमात

अ़ब्दुर्रह़मान अ़त्तारी
(दर्जए राबिआ जामिअ़तुल मदीना)

मक़रूज़ से हुस्ने सुलूक और नर्मी का मुआ़मला करना इस्लामी तालीमात का एक नुमायां हिस्सा है। रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इस अ़मल की न सिर्फ़ तरग़ीब दी बल्कि इस की फ़ज़ीलत और अज्रे अ़ज़ीम को भी बयान फ़रमाया। येह मुआ़मला दर अस्ल अल्लाह तआ़ला के साथ मुआ़मलात में आसानी की उम्मीद का ज़रीआ़ बनता है।

1 क़ियामत की सख़्तियों से नजात का ज़रीआ़ : नबिय्ये अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने येह तालीम दी कि तंगदस्त मक़रूज़ को मोहलत देना क़ियामत की बड़ी मुश्किलात से नजात का सबब बनेगा, चुनान्चे हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ سَرَّهُ اَنْ يُنْجِيَهُ اللّٰهُ مِنْ كُرَبِ يَوْمِ الْقِيَامَةِ، فَلْيُنَفِّسْ عَنْ مُعْسِرٍ اَوْ يَضَعْ عَنْهُ यानी जिस शख़्स को येह बात पसन्द हो कि अल्लाह तआ़ला उसे क़ियामत के दिन की सख़्तियों से नजात दे, तो उसे चाहिये कि वोह तंगदस्त (मक़रूज़) को (अदाएगी में) मोहलत दे या उस का (कुछ या पूरा) क़र्ज़ मुआ़फ़ कर दे। (مسلم، ص650، حدیث:4000)

2 अल्लाह की त़रफ़ से मग़्फ़िरत का हुक्म : रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने एक नेक बन्दे का हाल बयान फ़रमाया जिस की मग़्फ़िरत सिर्फ़ इस वज्ह से हुई कि वोह मक़रूज़ से नर्मी करता था। अल्लाह पाक ने उस से पूछा तू ने दुनिया में क्या अ़मल किया ? فَقَالَ: يَا رَبِّ، آتَيْتَنِي مَالَكَ فَكُنْتُ اُبَايِعُ النَّاسَ، وَكَانَ مِنْ خُلُقِي الْجَوَازُ، فَكُنْتُ اَتَيَسَّرُ عَلَى الْمُوسِرِ، وَاُنْظِرُ الْمُعْسِرَ، فَقَالَ اللّٰهُ: اَنَا اَحَقُّ بِذَا مِنْكَ، تَجَاوَزُوا عَنْ عَبْدِي यानी बन्दे ने अ़र्ज़ किया : ऐ मेरे रब ! तू ने मुझे माल दिया था, मैं लोगों से तिजारत करता था और मेरी आ़दत आसानी करने की थी, मैं मालदार पर आसानी करता और तंगदस्त को मोहलत देता था। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया : मैं (दर गुज़र करने में) तुझ से ज़ियादा ह़क़्दार हूं। मेरे बन्दे से दर गुज़र करो। (مسلم، ص650، حدیث:3996)

3 तक़ाज़े में नर्मी पर रह़मत की दुआ़ : आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सिर्फ़ क़र्ज़ मुआ़फ़ करने वाले को ही नहीं, बल्कि अपना ह़क़ मांगते वक़्त नर्मी बरतने वाले के लिये भी रह़मत की दुआ़ फ़रमाई : رَحِمَ اللّٰهُ رَجُلًا سَمْحًا اِذَا بَاعَ، وَاِذَا اشْتَرَى، وَاِذَا اقْتَضَى यानी अल्लाह उस शख़्स पर रह़म फ़रमाए जो बेचते वक़्त, ख़रीदते वक़्त और (अपना क़र्ज़ या ह़क़) मांगते वक़्त नर्मी बरतने वाला हो। (بخاری، 2/12، حدیث:2076)

4 परेशानियां दूर और दुआ़एं मक़्बूल : अल्लाह पाक के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : مَنْ اَرَادَ اَنْ تُسْتَجَابَ دَعْوَتُهُ، وَاَنْ تُكْشَفَ كُرْبَتُهُ، فَلْيُفَرِّجْ عَنْ مُعْسِرٍ यानी जो इस बात को पसन्द करता है कि उस की दुआ़एं क़बूल हों और परेशानियां दूर हों तो उसे चाहिये कि तंगदस्त को मोहलत दिया करे। (مجمع الزوائد، 4/239، حدیث:6664)

नबवी तालीमात के मुताबिक़ मक़रूज़ से नर्मी बरतना महज़ अख़्लाक़ी रवय्या नहीं, बल्कि अज्रो सवाब और रह़मते इलाही के हुसूल का ज़रीआ़ है। मुसलमान को चाहिये कि वोह माली मुआ़मलात में सख़्ती के बजाए आसानी पैदा कर के दुनिया व आख़िरत की कामयाबी हासिल करे।

अल्लाह पाक हमें अहादीसे तय्यिबात पढ़ कर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

मुतालअए तफ़्सीर की ज़रूरत व अहमिय्यत

मुहम्मद अब्दुल्लाह अत्तारी
(दर्जए साबिआ जामिअतुल मदीना)

अल्लाह पाक ने अपने प्यारे हबीब صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर क़ुरआने मजीद को नाज़िल फ़रमाया ताकि आप عَلَیْہِ السَّلَام उस के ज़रीए लोगों को अल्लाह पाक के अहकामात बताएं। याद रहे कि ऐसा नहीं हो सकता कि कोई शख़्स क़ुरआने करीम को समझने के लिये अरबी सीख ले और क़ुरआन को समझने का दावा करे बल्कि उस के लिये क़ुरआन की तफ़्सीर का मुतालआ करना बहुत ज़रूरी है बल्कि जिन की ज़बान ही अरबी है उन्हें भी बग़ैर तफ़्सीर पढ़े क़ुरआन के दुरुस्त मआनी और उस की बारीकियां समझना बहुत ही ज़ियादा मुश्किल है क्यूंकि क़ुरआने पाक अपने दामन में कई उलूम को लिये हुए है जैसा कि हज़रते अब्दुल्लाह बिन मसऊद رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ फ़रमाते हैं : जो इल्म हासिल करने की ख़्वाहिश रखता हो उसे चाहिये क़ुरआन में ख़ूब ग़ौरो ख़ौज़ करे क्यूंकि क़ुरआने पाक में अगलों पिछलों का इल्म मौजूद है। (شعب الایمان، 2332،حدیث:1960)

इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ तफ़्सीर की ज़रूरत व अहमिय्यत बयान करते हुए फ़रमाते हैं : जिस ज़माने में क़ुरआन नाज़िल हुवा उस वक़्त अरबी की फ़साहतो बलाग़त के बड़े बड़े माहिरीन मौजूद थे वोह उस के ज़ाहिर और उस के अहकाम को तो जानते थे लेकिन उस की बातिनी बारीकियां उन पर भी ग़ौरो फ़िक्र करने और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से सुवालात करने के बाद ही ज़ाहिर होती थीं जैसे जब येह आयते मुबारका नाज़िल हुई ﴿اَلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَ لَمْ یَلْبِسُوْۤا اِیْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ﴾ तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो ईमान लाए और अपने ईमान में किसी नाहक़ की आमेज़िश न की। (پ7،الانعام:82) तो सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُم बहुत परेशान हुए और उन्हों ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में अर्ज़ की : हम में से ऐसा कौन है जो अपनी जान पर ज़ुल्म नहीं करता तो रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : उस से येह मुराद नहीं बल्कि उस से मुराद शिर्क है। (دیکھیے:الاتقان،2/1192،1193)

तो हम तो उस चीज़ के ज़ियादा मोहताज हैं जिस की उन्हें ज़रूरत पड़ी बल्कि हम तो सब लोगों से ज़ियादा उस चीज़ के मोहताज हैं क्यूंकि हमें बग़ैर सीखे लुग़त (Language) के असरार व रुमूज़ और उस के मरातिब मालूम नहीं हो सकते।

तफ़्सीरे क़ुरआन के मुतालए के सात फ़वाइद

1 नासिख़ व मन्सूख़ की पहचान : यानी किस हुक्म पर अब भी अमल है और किस हुक्म पर अमल मन्सूख़ हो चुका है।

2 ग़लत फ़हमियों से बचाव : सिर्फ़ तर्जमा पढ़ने से बन्दा ग़लत फ़हमी का शिकार हो सकता है जब कि तफ़्सीर के मुतालए से उन ग़लत फ़हमियों से बचा जा सकता है।

3 दुरुस्त माना व मफ़्हूम की पहचान : एक लफ़्ज़ जो क़ुरआने पाक में कई जगह इस्तिमाल हुवा तफ़्सीर के मुतालए से मालूम होगा कि किस जगह वोह लफ़्ज़ किस माना में इस्तिमाल हुवा है।

4 किसी भी अक़ीदे या हुक्म की तफ़्सील : क़ुरआने करीम में कई अहकाम मसलन नमाज़ रोज़ा वग़ैरा मुजमलन बयान हुए जिन की तफ़्सील तफ़्सीर से मालूम होगी।

5 शाने नुज़ूल का इल्म : कौन सी आयत किस मौक़अ पर नाज़िल हुई उस का इदराक भी तफ़्सीर के मुतालए से होगा।

6 उम्मतों के अहवाल की तफ़्सील : क़ुरआने पाक में कई उम्मतों का ज़िक्र इज्मालन आया है जिन की तफ़्सील तफ़्सीर के मुतालए से पता चलेगी।

7 अम्बियाए किराम की सीरत : क़ुरआने पाक में कई अम्बिया का ज़िक्र है उन अम्बियाए किराम की सीरत तफ़्सीर के मुतालए से मालूम होगी।

उन फ़वाइद से भी पता चलता है कि तफ़्सीरे क़ुरआन के मुतालए की बहुत ज़ियादा अहमिय्यत है और मज़कूरा फ़वाइद और उन के इलावा और बहुत सारे फ़वाइद हासिल करने के लिये क़ुरआने करीम की तफ़्सीर का मुतालआ करना चाहिये जब कि कई लोग सिर्फ़ क़ुरआन का तर्जमा पढ़ कर तज़बज़ुब का शिकार हो जाते हैं। दौरे हाज़िर में उर्दू ज़बान में आसान और आम फ़हम तफ़्सीर, तफ़्सीरे ख़ज़ाइनुल इरफ़ान और तफ़्सीरे सिरातुल जिनान का मुतालआ मुफ़ीद रहेगा।

अल्लाह पाक हमें तफ़्सीरे क़ुरआन का मुतालआ करने और उस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। आमीन

बरकत वाला महीना

नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : اَتَاكُمْ رَمَضَانُ شَهْرٌ مُّبَارَكٌ فَرَضَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ عَلَيْكُمْ صِيَامَهٗ यानी तुम्हारे पास रमज़ान का महीना आ गया है, जो बरकत वाला महीना है। अल्लाह पाक ने इस महीने के रोज़े तुम पर फ़र्ज़ किये हैं। (نسائی، ص355،حدیث:2103)

प्यारे बच्चो ! इस ह़दीसे पाक में माहे रमज़ान को बरकत वाला कहा गया है, तो येह महीना बरकत वाला कैसे है ? आइये पढ़िये :

रमज़ानुल करीम अल्लाह पाक का बहुत ही प्यारा और मुक़द्दस महीना है। इस महीने में अल्लाह पाक अपने बन्दों पर ख़ास रह़मत फ़रमाता है। महीनों में सब से अफ़्ज़ल है। इस माह में नेकियों का अज्र बढ़ जाता है। हर दिन रात में कई लोगों को जहन्नम से आज़ाद किया जाता है। रोज़ादारों की दुआएं क़बूल होती हैं, ख़ास त़ौर पर इफ़्त़ारी के वक़्त। जन्नत के दरवाज़े खुल जाते और जहन्नम के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं। शैत़ान को क़ैद कर दिया जाता है ताकि वोह मुसलमानों को गुमराह न कर सके। इसी मुबारक महीने में शबे क़द्र भी है जो हज़ार महीनों से बेहतर है। येह फ़ज़ीलत माहे रमज़ान को दूसरे महीनों से मुन्फ़रिद बनाती है।

ह़दीस के दूसरे ह़िस्से में माहे रमज़ान के रोज़ों के मुतअ़ल्लिक़ बयान हुवा कि अल्लाह पाक ने मुसलमानों पर उस के रोज़े फ़र्ज़ फ़रमाए हैं, चुनान्चे अल्लाह पाक ने फ़रमाया : ﴿یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَیْكُمُ الصِّیَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ(۱۸۳)﴾ तर्जमए कन्ज़ुल इ़रफ़ान : ऐ ईमान वालो ! तुम पर रोज़े फ़र्ज़ किये गए जैसे तुम से पहले लोगों पर फ़र्ज़ किये गए थे ताकि तुम परहेज़गार बन जाओ। (پ2،البقرۃ:183)

इस्लाम के पांच बुन्यादी अरकान में से एक रोज़ा भी है। रोज़ा रखने के बहुत सारे दीनी और दुन्यवी फ़वाइद हैं। रोज़ा रखने वाले बच्चों से वालिदैन और सब लोग ख़ुश होते हैं, ऐसे बच्चों को सभी अच्छा बच्चा कहते हैं, सब से बड़ी बात येह कि ऐसे बच्चों से अल्लाह पाक राज़ी होता है और बरोज़े क़ियामत इन्आ़मो इकराम से नवाज़ेगा।

अच्छे बच्चो ! आप भी रोज़े रखने की आ़दत बनाएं ताकि बड़े हो कर रोज़े रखना मुश्किल न लगे क्यूंकि बालिग़ बच्चों पर रोज़े रखना फ़र्ज़ है, येह अल्लाह पाक का हुक्म है जो ऊपर आयत में बयान हुवा।

रोज़ा रखना बिल्कुल आसान काम है। दिन में थोड़ी बहुत भूक प्यास बरदाश्त करेंगे तो उस पर बहुत सवाब मिलेगा एक दो दिन रोज़ा रखेंगे तो आ़दत बन जाएगी।

आओ बच्चो ! इस माहे रमज़ान को अलग त़रीक़े से मनाएं, इस में रोज़े रखें, इ़बादत करें और ख़ूब अल्लाह पाक की रह़मतें और बरकतें ह़ासिल करें।

अल्लाह पाक हमें रोज़े रखने और ख़ूब इ़बादत करने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِیْن بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِیْن صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

आख़िरी नबी का प्यारा मोजिज़ा

नदी का पानी ख़ुश्क हो गया

नबिय्ये रहमत صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बा बरकत ज़िन्दगी का हर लम्हा अल्लाह तआ़ला की क़ुदरत, नुसरत और आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बुलन्द मरतबे का आईनादार है। आप के बचपन के अदवार में भी ऐसे अनोखे वाक़िआ़त ज़ाहिर हुए जो न सिर्फ़ आप के ख़ुसूसी मक़ामो शरफ़ की गवाही देते हैं बल्कि हमें येह सबक़ देते हैं कि अल्लाह के बरगुज़ीदा बन्दों के साथ तअ़ल्लुक़, उन की इत्तिबाअ़ और यक़ीने कामिल की दौलत बन्दे की राहों से रुकावटें हटा देती है।

जब रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की उ़म्र दस साल से चन्द साल ज़ियादा हुई, तो आप अपने चचा ज़ुबैर के साथ एक सफ़र पर रवाना हुए, दौराने सफ़र क़ाफ़िला एक ऐसी वादी से गुज़रा जिस में एक ऊंट गुज़रने वालों के लिये रास्ते की रुकावट बना हुवा था, जब उस ऊंट ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को देखा तो वोह बैठ गया और अपने सीने (के अगले हिस्से) को ज़मीन से रगड़ने लगा।

पस आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم अपने ऊंट से उतरे और उस पर सुवार हो कर रवाना हुए यहां तक कि वादी पार कर ली तो उस ऊंट से उतर गए। फिर जब क़ाफ़िले की इस सफ़र से वापसी हुई तो रस्ते में एक ऐसी वादी से गुज़रे जहां नदी बह रही थी और पानी का बहाव तेज़ था, जिस की वज्ह से क़ाफ़िले वाले रुक गए (क्यूंकि बहता पानी आगे बढ़ने में रुकावट था) रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : मेरे पीछे पीछे आ जाओ फिर आप صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم बे झिजक पानी में उतर गए, अल्लाह का करना ऐसा हुवा कि पानी फ़ौरन ख़ुश्क हो गया और सब ने आप के पीछे पीछे उस नदी को पार कर लिया। जब क़ाफ़िले वाले मक्का पहुंचे तो इस बात का तज़्किरा करने लगे कि येह लड़का बड़ी शानो मर्तबे वाला है। (سیرتِ حلبیہ، 1/170)

سُبْحٰنَ الله ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत देखिये कि रास्ते की रुकावट बनने वाला ऊंट आप को देखते ही बैठ गया और ख़ुद को हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारी के लिये पेश भी कर दिया। और फिर नदी से गुज़रते हुए पानी का ख़ुश्क हो जाना तो अ़ज़ीमुश्शान मोजिज़ा है। मोजिज़े पर मुश्तमिल इस वाक़िए से हमें चन्द बातें सीखने को मिलती हैं :

- जानवर भी रसूले अकरम से महब्बत व अपनाइयत रखा करते थे।
- अल्लाह तआ़ला ने अपने हबीब صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को बचपन ही से अपनी ख़ास इनायतों और निशानियों से नावाज़ा ताकि अहले बसीरत उन की शान को पहचान सकें।

जानवरों के साथ भी शफ़क़त भरा बरताव करना चाहिये और जानवर की महब्बत का जवाब महब्बत भरे बरताव से देना चाहिये।

अल्लाह तआ़ला अपने महबूब बन्दों को मुश्किलें हल करने का ज़रीआ़ बना देता है वोह जहां क़दम रखते हैं, वहां मुश्किलात ख़ुद रास्ता छोड़ देती हैं।

हमें अपने साथियों और हम सफ़रों के काम आना और उन की मुश्किलात दूर करनी चाहियें।

कामयाबी के रास्ते पर दूसरों को भी अपने साथ रख कर कामयाबी से हमकिनार करना चाहिये।

कामयाब लोगों को Follow करना कामयाबी की ज़मानत है।

क़ुदरते इलाही के सामने कोई ज़ाहिरी रुकावट बाक़ी नहीं रहती, वोह चाहे जानवर का जमूद हो या पानी का बहाव, जब अल्लाह चाहे सब मुसख़्ख़र (यानी ताबेअ़) हो जाते हैं।

मुश्किल वक़्त में अहले ईमान को ज़ाहिरी तदबीर से ज़ियादा यक़ीन व तवक्कुल के साथ क़दम बढ़ाना चाहिये, क्यूंकि यक़ीन रास्ते खोल देता है।

ज़िन्दगी के ज़ाहिरी रास्तों पर अल्लाह वालों के पीछे चलना जब मन्ज़िल तक पहुंचा देता है तो अ़मल के रास्ते में उन के पीछे चलना भी यक़ीनन कामयाबी का ज़ामिन साबित होगा।

हमें कमाल वाले का कमाल तस्लीम करना चाहिये और किसी की क़ाबिले तारीफ़ बात की तारीफ़ करनी चाहिये।

हुरूफ़ मिलाइये !

प्यारे बच्चो ! मस्जिद अल्लाह का घर है, यहां सुकून, अदब और ख़ामोशी इख़्तियार करना बहुत ज़रूरी है। हमें चाहिये कि मस्जिद में आ कर बिला ज़रूरत बात करने और शोर शराबा करने से बचें ताकि नमाज़ियों को नमाज़, दुआ़ और दीगर इ़बादात में किसी क़िस्म की परेशानी न हो। मस्जिद में दौड़ना, ज़ोर से हंसना या खेल कूद करना मस्जिद की बे अदबी है जो कि सख़्त गुनाह का काम है। अगर हम मस्जिद में ख़ामोशी और अदब का ख़याल रखेंगे तो अल्लाह तआ़ला हम से ख़ुश होगा।

आप ने ऊपर से नीचे, दाएं से बाएं हुरूफ़ मिला कर पांच अल्फ़ाज़ तलाश करने हैं जैसे टेबल में लफ़्ज़ **"मस्जिद"** तलाश कर के बताया गया है। तलाश किये जाने वाले 5 अल्फ़ाज़ येह हैं :

1 अदब 2 ख़ुश 3 सुकून 4 दुआ़ 5 नमाज़।

س	ی	ل	م	ا	ل	خ	ن	و
ز	ا	م	ن	ر	س	و	ط	ش
ق	ل	ی	خ	س	ی	ش	ک	د
س	ع	ت	ک	ی	ن	ر	ا	ع
و	س	ب	د	ج	س	م	ہ	ا
ش	ک	و	ل	و	ق	ش	ا	ر
ل	و	س	ت	ا	ر	م	ن	ت
ا	ن	ش	ی	ک	ث	ح	س	ر
ث	ع	و	ب	د	ا	ت	ی	ت

सेहत का ख़ज़ाना

सर्दियां रुख़्सत हो चुकी थीं लेकिन मौसम ऐसा था कि जैसे अभी गर्मियां बा क़ाइदा शुरूअ़ नहीं हुई, यानी ठन्डा मीठा मौसम जिस में दोपहर के वक़्त तो ज़ाइद कपड़े जिस्म पर बोझ महसूस होने लगते लेकिन सुब्ह और शाम के वक़्त उन के पहने बिना गुज़ारा भी नहीं था। मौसम की हल्की फुल्की तब्दीली के साथ साथ शायद ब्रेक में भाग दौड़ का असर भी था कि बच्चों ने क्लास रूम में हल्की रफ़्तार में पंखा चलाया हुवा था और अपनी अपनी कुर्सियों पर थके थके से बैठे थे। सर बिलाल हस्बे आ़दत मुस्कुराते हुए क्लास में दाख़िल हुए और सलाम व दुआ़ के बाद वाइट बोर्ड की त़रफ़ बढ़ते हुए आज के सबक़ का उ़नवान लिखा : **रोज़े की अहमिय्यत** (हमारी सेहतमन्द ज़िन्दगी के लिये)।

दर अस्ल रमज़ानुल मुबारक की आमद की वज्ह से प्रिन्सिपल साहिब ने पीरियड का शिडयूल आ़रज़ी त़ौर पर तब्दील किया था इसी लिये अब सर बिलाल का लेक्चर ब्रेक के फ़ौरन बाद होता था।

बच्चो ! कल मैं नमाज़े अ़स्र अदा करने के बाद वहीं मस्जिद में बैठा सोच रहा था कि रमज़ाने करीम शुरूअ़ होते ही अचानक हम मुसलमानों में कैसी बड़ी तब्दीली आ जाती है।

सारा साल मस्जिदों में दूसरी सफ़ भी भर नहीं पाती, लेकिन रमज़ान में हॉल से ले कर मस्जिदों के सेहन तक भर जाते हैं।

सारा साल बुज़ुर्ग ही सर ढांपे दिखाई देते हैं लेकिन इस माह में नौजवान लड़के भी सरों पर टोपियां और बाज़ इमामे सजाए हाथों में तस्बीह़ पकड़े नज़र आते हैं।

पहले तो इधर इमाम साहिब ने सलाम फेरा उधर हम बाहरी दरवाज़े की त़रफ़ लपके लेकिन इस माह में नमाज़ों के बाद वहीं बैठे तिलावत में मसरूफ़ हो जाते हैं, बेशक येह सब अल्लाह पाक की रह़मत के साथ साथ रमज़ानुल मुबारक का फ़ैज़ान है।

सर आज के सबक़ में हम क्या सीखने जा रहे हैं ? सर बिलाल अपनी गुफ़्तगू मुकम्मल कर चुके तो मुआ़विया ने जल्दी से पूछा क्यूंकि उसे उ़नवान बहुत दिलचस्प लग रहा था।

जी जी बेटा लेकिन पहले छोटी सी एक्टीवीटी कर लेते हैं ताकि कुछ दोहराई भी हो जाए और आप लोगों की थकावट भी दूर हो जाए तो ज़रा मुझे बताइये कि हमें रोज़ा क्यूं रखना चाहिये ?

उसैद रज़ा : रोज़ा रखने से अल्लाह पाक राज़ी होता है,

सोबान : रोज़ा गुनाहों से बचाता है,

साइम : रोज़े से भूकों और ज़रूरत मन्दों का एह़सास पैदा होता है।

अनस रज़ा : रोज़ा गुनाहों की मुआ़फ़ी का सबब है।

सर बिलाल की इजाज़त मिलने पर बच्चों ने बारी बारी रोज़े की अहमिय्यत के मुतअ़ल्लिक़ सारी बातें सुना दीं जो उन्हों ने वक़्तन फ़वक़्तन सर बिलाल से ही सीखी थीं जिन्हें सुन कर सर बिलाल भी ख़ुश थे कि बच्चे न सिर्फ़ तवज्जोह से सुनते हैं बल्कि याद भी रखते हैं।

उसैद रज़ा ने हाथ उठाया : लेकिन सर, क्या रोज़ा रखने से हमारी सेहत पर भी असर पड़ता है ? मुआविया की तरह उसैद रज़ा का ज़ेहन भी आज के उनवान के गिर्द घूम रहा था।

सर बिलाल ने जवाब दिया : जी बिल्कुल उसैद बेटा ! आप ने देखा होगा हमारे घरों में जो गाड़ी या मोटर साइकल होती है कुछ महीनों के वक़्फ़े से हमारे पापा या बड़े भाई उसे वर्कशॉप पर ले जाते हैं जहां उस की ट्यूनिंग होती है जिस की वज्ह से उस की कारकर्दगी बेहतर हो जाती है इसी तरह रोज़े में भूका प्यासा रहना हमारे जिस्मानी निज़ाम को बेहतर करता है। साल के ग्यारह महीनों में जिस्म के अन्दर मौजूद मुख़्तलिफ़ ख़लियों (Cells) में फ़ासिद माद्दे पैदा हो जाते हैं, रोज़े की बरकत से येह फ़ासिद माद्दे निकल जाते हैं और ख़लिये अपने आप को मरम्मत (Repair) कर लेते हैं।

सर मेरे पापा बता रहे थे कि रोज़ा दिल की बीमारी के साथ साथ शूगर के मरीज़ के लिये भी बहुत मुफ़ीद है, सर बिलाल की गुफ़्तगू में वक़्फ़ा आया तो सोबान रज़ा ने हाथ खड़ा कर दिया था और इजाज़त मिलने पर कहा।

सर बिलाल : बिल्कुल बेटा ऐसा ही है बल्कि उस के इलावा ब्लड प्रेशर और जिगर की बीमारी को कन्ट्रोल करने में भी मदद देता है। और आप सब को एक अहम बात बताऊं बच्चो ! साइन्स तो उन सब फ़वाइद तक आज पहुंची है नां लेकिन हमारे प्यारे नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने चौदह सौ साल पहले ही बता दिया था صُوْمُوْا تَصِحُّوْا यानी रोज़ा रखो सेहत मन्द हो जाओगे। (معجم اوسط، 6/146، حدیث:8312)

तो बच्चो रोज़े के इतने सारे फ़ायदे जान कर आप ख़ुश तो हुए होंगे मगर याद रखिये ! हमें हर नेक और अच्छा काम अल्लाह पाक की ख़ातिर करना चाहिये बाक़ी रहे दुन्यावी फ़ायदे तो वोह अल्लाह चाहेगा तो मिल ही जाएंगे।

दो जहां की नेमतें मिलती हैं रोज़ादार को
जो नहीं रखता है रोज़ा वोह बड़ा नादान है

बच्चों और बच्चियों के 6 नाम

सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : आदमी सब से पहला तोहफ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है लिहाज़ा उसे चाहिये कि उस का नाम अच्छा रखे। (جمع الجوامع، 3/285، حدیث:8875) यहां बच्चों और बच्चियों के लिये 6 नाम, उन के माना और निस्बतें पेश की जा रही हैं।

बच्चों के 3 नाम

नाम	पुकारने के लिये	माना	निस्बत
मुहम्मद	बुरहान	ऐसी दलील जिस में शको शुबा न हो	रसूले पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का सिफ़ाती नाम
मुहम्मद	अ़ली	बुलन्द	मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का बा बरकत नाम
मुहम्मद	अशरफ़	ज़ियादा शराफ़त वाला	सहाबी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ का मुबारक नाम

बच्चियों के 3 नाम

फ़ातिमा	दोज़ख़ की आग से छुड़ाने वाली	शहज़ादिये रसूल رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का बा बरकत नाम
नफ़ीसा	पाक साफ़	सहाबिय्या رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا का बा बरकत नाम
माजिदा	क़ाबिले ताज़ीम	एक बुज़ुर्ग ख़ातून رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہَا का बा बरकत नाम

(जिन के हां बेटे या बेटी की विलादत हो वोह चाहें तो इन निस्बत वाले 6 नामों में से कोई एक नाम रख लें।)

बच्चों को क़ुरआन से जोड़िये

बच्चों को क़ुरआन से कैसे जोड़े ? येह एक ऐसा सुवाल है जो दीनी सोच रखने वाले वालिदैन के ज़ेहन में आता है। याद रखिये ! बच्चों को क़ुरआन से जोड़ना कोई एक दिन का काम नहीं बल्कि मुसल्सल मेहनत, हिक्मते अ़मली और अ़मली तरबियत से मुम्किन है। यूं तो सारा साल ही येह फ़िक्र होनी चाहिये कि हमारे बच्चे क़ुरआन से कैसे जुड़ें ! लेकिन चूंकि रमज़ानुल मुबारक रूहानिय्यत, इ़बादत और क़ुरआने करीम से तज्दीदे तअ़ल्लुक़ का महीना है। इस बा बरकत महीने में वालिदैन पर येह ज़िम्मेदारी मज़ीद बढ़ जाती है कि वोह अपने बच्चों को क़ुरआन के क़रीब करें। यहां हम चन्द बातों की त़रफ़ तवज्जोह दिलाना चाहते हैं जिन पर अ़मल कर के वालिदैन अपने बच्चों का तअ़ल्लुक़ क़ुरआन से मज़बूत कर सकते हैं।

क़ुरआन से मह़ब्बत पैदा करें

बच्चों को क़ुरआन से जोड़ने के लिये सब से पहले उन को येह एहसास दें कि क़ुरआन अल्लाह की किताब है, इस से मह़ब्बत ऐ़न ईमान है। बच्चों को बताएं कि अल्लाह जिस से मह़ब्बत करता है उसे क़ुरआन पढ़ने, पढ़ाने, समझने और समझाने की तौफ़ीक़ देता है। बच्चों को बताएं कि क़ुरआन सीखने और सिखाने वाले सब से बेहतर लोग हैं। (بخاری،3/410،حدیث:5027) बच्चों को बताएं कि क़ुरआन वोह अ़ज़ीम किताब है जो अपने सीखने सिखाने और अ़मल करने वाले की शफ़ाअ़त करेगी और जन्नत में ले कर जाएगी। (تاریخ ابن عساکر،41/3، معجم کبیر،10/198،حدیث:10450) बच्चों को बताएं कि किसी को क़ुरआन की एक आयत सिखाना सवाबे जारिया का सबब है। (جمع الجوامع،7/209،حدیث:22456) जब इस अन्दाज़ में बच्चों को क़ुरआन की अहमिय्यत बताएंगे तो اِنْ شَآءَ اللہ उन के दिल में क़ुरआन की मह़ब्बत पैदा होगी और क़ुरआन के साथ तअ़ल्लुक़ भी मज़बूत होगा।

बच्चों के लिये दुआ़ करें

बच्चों को क़ुरआन से जोड़ने के लिये एक मुअस्सर ज़रीआ़ दुआ़ है, क्यूंकि हिदायत और दिलों का बदलना अल्लाह तआ़ला ही के इख़्तियार में है। वालिदैन को चाहिये कि वोह इख़्लास के साथ अल्लाह के हु़ज़ूर येह दुआ़ करें कि वोह हमारे बच्चों के दिलों में क़ुरआने करीम की मह़ब्बत, उस की समझ और उस पर अ़मल की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए।

तिलावत का माह़ौल बनाएं

बच्चों को क़ुरआन से जोड़ने के लिये घर में तिलावते क़ुरआन करने, सुनने और सुनाने का माह़ौल बनाना ज़रूरी है। इस के लिये घर

में रोज़ाना कुछ न कुछ वक़्त क़ुरआन की तिलावत की जाए। सोने से पहले 3 क़ुल या सूरए मुल्क पढ़ी और सुनी जाए। अल्लाह ने चाहा तो बच्चे क़ुरआन से जुड़े रहेंगे।

छोटी सूरतें याद करवाने का एहतिमाम करें

बच्चों को क़ुरआन से जोड़ने का एक ज़रीआ येह भी है कि उन को छोटी सूरतें याद करवाने का एहतिमाम किया जाए। सब से पहले : 3 क़ुल, सूरतुल अ़स्र, सूरतुल कौसर, सूरए क़ुरैश और इस त़रह की दीगर सूरतें याद करवाई जाएं।

क़ुरआनी वाक़िआत सुनाइये

बच्चे क़िस्से कहानियां सुनना पसन्द करते हैं लिहाज़ा बच्चों को क़ुरआन से जोड़ने के लिये क़ुरआनी वाक़िआत सुनाना भी मुफ़ीद साबित होगा। मक्तबतुल मदीना की किताब **“अ़जाइबुल क़ुरआन मअ़ ग़राइबुल क़ुरआन”** इस सिल्सिले में मुआ़विन साबित होगी।

ख़ुश इल्हान क़ुर्रा की तिलावत सुनाएं

बच्चों को क़ुरआन से जोड़ने के लिये ख़ुश इल्हान और तजवीज़ के क़वाइदो ज़वाबित़ के साथ क़ुरआन पढ़ने वाले क़ुर्रा ह़ज़रात की तिलावत सुनाएं। اِنْ شَآءَ اللہ इस से बच्चे क़ुरआन पढ़ने की त़रफ़ माइल होंगे और ख़ुश इल्हानी के साथ तिलावत करने की कोशिश करेंगे।

क़ुरआनी मुक़ाबला करवाएं

बच्चों को क़ुरआन से महब्बत दिलाने और उन में दिलचस्पी पैदा करने का एक मुअस्सर ज़रीआ क़ुरआनी मुक़ाबले हैं। मुक़ाबले से बच्चों में बेहतर और सह़ीह़ तजवीद के साथ क़ुरआन पढ़ने और उस की तालीमात पर अ़मल करने का शौक़ पैदा होगा। वालिदैन को चाहिये कि मुक़ाबलों को सख़्त इम्तिह़ान के बजाए एक ख़ुशगवार सरगर्मी बनाएं जिस से बच्चे क़ुरआन से जुड़े रहें।

क़ुरआनी मुक़ाबिलों की मिसालें :

- बच्चों में मुख़्तलिफ़ सूरतें ख़ूबसूरत आवाज़ और सह़ीह़ तजवीद के साथ पढ़ने का मुक़ाबला करवाएं।
- बच्चों में छोटी सूरतें, क़ुरआनी दुआएं या मुन्तख़ब आयात याद करने का मुक़ाबला करवाया जाए। मसलन : सूरतुल अ़स्र, सूरतुल फ़ील, सूरतुल कौसर, सूरतुल इख़्लास, सूरतुल फ़लक़, सूरतुन्नास और आयतुल कुर्सी वग़ैरा।
- क़ुरआनी अख़्लाक़ मुक़ाबला करवाया जाए जिस में बच्चों को क़ुरआन में बताए गए अच्छे अख़्लाक़ जैसे : सच बोलना, नमाज़ क़ाइम करना, वालिदैन से ह़ुस्ने सुलूक वग़ैरा की अ़मली मिसालें बताने को कहा जाए।
- क़ुरआनी कहानी का मुक़ाबला करवाया जाए जिस में बच्चे क़ुरआन में आने वाले वाक़िआत को अपनी ज़बान में सुनाएं, जैसे : ह़ज़रते ख़िज़्र और मूसा عَلَیْہِ السَّلَام का वाक़िआ, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام का अल्लाह पर भरोसा, अस्ह़ाबे कहफ़ का ईमान वग़ैरा।

मुक़ाबले में जो बच्चा अच्छी कारकर्दगी दिखाए उस की तारीफ़ और होसला अफ़्ज़ाई करें, मुम्किन हो तो कोई इन्आ़म भी दें इस से बच्चों का क़ुरआन से तअ़ल्लुक़ मज़ीद मज़बूत होगा।

क़ुरआनी इजतिमाआ़त में शिर्कत करवाइये

रमज़ानुल मुबारक में दर्से क़ुरआन, दर्से तरावीह़, ख़ुलासए तरावीह़ और ख़त्मे क़ुरआन जैसे उ़नवानात से क़ुरआनी इजतिमाआ़त होते हैं उन इजतिमाआ़त में अपने साथ समझदार बच्चों को शिर्कत करवाना भी क़ुरआन के साथ तअ़ल्लुक़ मज़बूत होने का ज़रीआ है। इस त़रह के इजतिमाआ़त से न सिर्फ़ उन के दिलों में क़ुरआन की महब्बत पैदा होगी बल्कि नेक माह़ौल में बैठने की बरकत से उन की शख़्सिय्यत में अदब, आ़जिज़ी और दीन से वाबस्तगी मज़ीद बढ़ जाएगी।

बेटियों की तरबियत

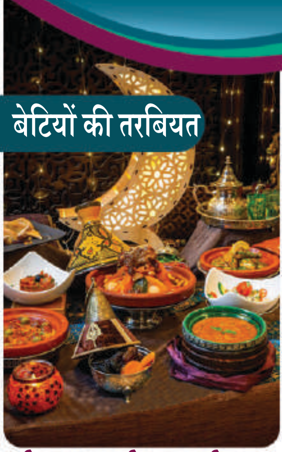

बेटियों को सह़र व इफ़्त़ार का सलीक़ा सिखाएं

ख़ानदानी निज़ाम की मज़बूती और घर के माह़ौल की ख़ूबसूरती में बेटियों का किरदार निहायत अहम है। ख़ुसूसन रमज़ानुल मुबारक जैसे मुक़द्दस महीने में जब घरों में इ़बादत, ख़ैर ख़्वाही, बरकत और रूहा़निय्यत की फ़ज़ाएं बिखरती हैं, तो सह़र व इफ़्त़ार के मामूलात मज़ीद अहमिय्यत इख़्तियार कर लेते हैं। ऐसे में वालिदैन की ज़िम्मेदारी है कि वोह बेटियों को न सिर्फ़ रोज़ा रखने की अहमिय्यत बताएं बल्कि सह़र व इफ़्त़ार की तय्यारी का सलीक़ा, तरतीब, अख़्लाक़ और ह़िक्मते अ़मली भी सिखाएं ताकि आने वाली नस्लों में भी दीन व तहज़ीब का येह ख़ूबसूरत वुरसा मह़फ़ूज़ रहे।

सह़र व इफ़्त़ार की तरबियत क्यूं ज़रूरी ? सह़र व इफ़्त़ार का एहतिमाम सिर्फ़ खाने पीने का मुआ़मला नहीं, बल्कि येह नज़्मो ज़ब्त़, वक़्त की पाबन्दी, मेहमान नवाज़ी, शुक्र गुज़ारी और ईसार जैसी ख़ूबियां परवान चढ़ाने का ज़रीआ़ है। बेटी जब सह़र व इफ़्त़ार की तय्यारी करना सीखती है तो वोह मुस्तक़बिल में अपनी ज़िन्दगी में येह हुस्ने अ़मल मुन्तक़िल करती है। इस से घरों में मह़ब्बत, तआ़वुन और दीनी माह़ौल क़ाइम रहता है।

सह़र का एहतिमाम, ह़िक्मत और तरतीब सह़र का वक़्त बरकत वाला वक़्त है। इस लिये बेटियों को येह शुऊ़र दिया जाए कि वोह जल्द बेदार होने की आ़दी हों, वालिदा बेटी को आराम से अपने साथ जगाएं, बेटी न उठे या सुस्ती दिखाए तो चीख़ने चिल्लाने के बजाए ह़िक्मते अ़मली अपनाए, पहले ही दिन तरबियत देने में सख़्ती न दिखाए, ऐसे बेटी बद दिल हो सकती है, इस के लिये रमज़ानुल मुबारक आने से पहले ही थोड़ी थोड़ी तरबियत शुरूअ़ कर दें ताकि बेटी मेन्टली भी तय्यार हो और शौक़ भी पैदा हो, सब से पहले तो सह़री तय्यार करने से इतना पहले उठे कि तह़म्मुल से तहज्जुद अदा कर पाएं फिर बेटी की उ़म्र के मुत़ाबिक़ काम तक़्सीम कर लें मसलन बेटी इतनी छोटी है कि पकाने में हाथ नहीं बटा सकती तो अपने पास बिठाएं, अच्छी अच्छी बातें बताएं और ज़रूरत की छोटी छोटी चीज़ें मंगवाएं, पानी की बोतलें / जग भर दें, दस्तरख़्वान पर खाना सजाती जाएं, घर के दीगर अफ़राद को जगाने का कह दें। और बेटी कुछ बड़ी हो तो चाय बनाने का कह दें, आप रोटी बना लें वग़ैरा, और इस सब के दौरान कुछ लापरवाही होने पर शोर शराबा डांट वग़ैरा से बचें बल्कि काम ख़राब होने पर दुरुस्त त़रीक़ा बताएं, बेटी जब मां को सब्रो तह़म्मुल के साथ सह़री बनाता देखेगी तो उस के अन्दर भी ऐसे ही सब्रो तह़म्मुल पैदा होगा, जब कि उस के बरअ़क्स अगर मां ख़ुद ऐन टाइम पर उठे, वक़्त की कमी के सबब बेटी को उठाने के लिये किचन से ही शोर करती जाए चीख़ना चिल्लाना हो, और जब बेटी उठे तो मां को ग़ुस्से में काम करता देखे जल्दबाज़ी में काम हो रहा है एक चूल्हे पर चाय रखी है तो एक पर रोटी बन रही है चाय की त़रफ़ ध्यान दिया तो रोटी जल रही है, रोटी पर ध्यान दिया तो चाय उबल उबल कर गिर रही है, एक अ़जीब अफ़रा तफ़री वाला मुआ़मला बना हुवा हो, दीगर घर वालों को उठाने में मज़ीद घर का माह़ौल बद अम्नी का शिकार हो रहा हो तो जब बेटी सह़री बनाएगी उस का भी अन्दाज़ फ़ित़री त़ौर पर ऐसा ही सामने आएगा जब कि पहले त़रीक़े पर जब अ़मल किया तो बहुत बेहतरी और बदलाव वाला पुरसुकून और रूहानी माह़ौल होगा, घर का माह़ौल हरगिज़ हरगिज़ ख़राब न होने दें, घर वालों का ख़याल रखें और सह़र के खाने की तय्यारी में नफ़ासत दिखाएं। सह़र के वक़्त घर के अफ़राद के आगे मुस्कुरा कर खाना रखें। इस तरबियत से बेटी में सब्र, ख़िदमत और दिल जोई जैसी आला सिफ़ात पैदा होती हैं।

इफ़्त़ार का सलीक़ा बेटियों को सिखाएं कि वक़्त से पहले तय्यारी करनी है, बग़ैर शोर मचाए सुन्नतों भरी प्यारी मीठी गुफ़्तगू करते हुए काम करें, बेटी को उस की उ़म्र के ह़िसाब से काम दें, अगर छुरी एहतियात के साथ इस्तिमाल करना आती है तो फ़्रूट काटने का

काम उन के ज़िम्मे कर दें, शरबत बनाना, बोतलें भरना, दस्तरख़्वान सजाना, इफ़्तार के बाद सब समेटना, बरतन धोना, सम्भालना वग़ैरा, पकाना आता है तो पास बैठ कर खाना बनवाएं, उ़मूमन इफ़्तार में ऐसे पकवान बन रहे होते हैं जो आ़म दिनों में नहीं बनते तो बेटी को त़रह त़रह के पकवान बनाना सिखाएं, इफ़्तार की तय्यारी में पूरा महीना मल्टी टास्किंग होती है उस को कैसे हैन्डल करना है सिखाएं, घर में किस को क्या पसन्द है और क्या पसन्द नहीं है इस को भी पेशे नज़र रखें, किस चीज़ को पकाने के लिये उस का तवाज़ुन किया होगा इस बात पर भी तरबियत हो, नमक मिर्च को कैसे बैलेंस रखना है येह इफ़्तार के वक़्त एक इन्तिहाई अहम मस्अला है जिस की वज्ह से कहीं न कहीं लड़ाई झगड़े भी देखने को मिलते हैं, इफ़्तार जो कि क़बूलिय्यते दुआ़ का वक़्त होता है मगर अफ़्सोस कई घरों में उस वक़्त मैदाने जंग बना होता है इस से बचना चाहिये। बेटी को सिखाएं कि इफ़्तार का दस्तरख़्वान सजाते वक़्त पानी और खजूर को सब से पहले सामने रखें।

रूहानी पहलू की तरबियत बेटियों को येह भी सिखाया जाए कि सह़र व इफ़्तार सिर्फ़ खाने का नाम नहीं बल्कि क़ुर्बे इलाही का ज़रीआ़ है। उन्हें दुआ़, सब्र और शुक्र का दर्स दें। इफ़्तार की तय्यारी के दौरान नमाज़ के वक़्त में पहले नमाज़ अदा करनी है, इफ़्तार के लम्ह़ात में मांगी जाने वाली दुआ़ क़बूलिय्यत का दर्जा रखती है, इस लिये इन लम्ह़ात को ज़िक्रो दुआ़ से मुज़य्यन करना सिखाएं। इसी त़रह उन्हें क़ुरआने पाक की तिलावत, नवाफ़िल और नेकी के दीगर कामों में हिस्सा लेने की तरग़ीब दें ताकि रमज़ान उन के लिये रूहानी तरबियत का महीना साबित हो। बेटियों को सह़र व इफ़्तार का सलीक़ा सिखाना दर अस्ल एक ख़ूबसूरत दीनी और अख़्लाक़ी ज़िम्मेदारी है। येह तरबियत सिर्फ़ खाने की तय्यारी तक मह़दूद नहीं बल्कि उस के ज़रीए ह़या, ख़िदमत, शुक्र गुज़ारी, मह़ब्बत और दीन दोस्ती जैसे औसाफ़ उन की शख़्सिय्यत में परवान चढ़ते हैं। जो बेटी आज अपनी मां से सह़र व इफ़्तार का सलीक़ा सीखती है, वोह कल एक घर में रौशनी, सुकून और रह़मत का सबब बनती है। येही तरबियत नस्लों को संवारती है और इस्लामी तहज़ीब को ज़िन्दा रखती है। याद रहे इन सब कामों में बेटी की जो तरबियत करनी है इस में बेटी का शौक़ और जज़्बा बढ़ाना है उस पर काम मुसल्लत़ नहीं करना कि उसे काम नहीं आता मगर ज़बरदस्ती करवाना है इस त़रह बेटी काम से बेज़ार होगी और बोझ समझेगी दिल से शौक़ व लगन के साथ काम नहीं करेगी, बेटी का काम सिखाते वक़्त तरबियत के दौरान पहले उस काम का शौक़ पैदा करवाना है, शौक़ शौक़ में बेटियां छोटी उ़म्र से पूरा घर सलीक़े से संभालना भी सीख जाती हैं, जब कि बेज़ारियत और बोझ समझते हुए बड़ी उ़म्र में होते हुए भी वोह सलीक़ा नहीं ला पातीं और काम से जान छुड़ाना चाहती हैं।

सह़र व इफ़्तार में एह़तियात़ सिखाएं बेटियों को सिखाएं कि सह़र व इफ़्तार में इसराफ़, दिखावा या बेजा पकवानों की भरमार से बचना चाहिये। बेटियों को सिखाएं कि सह़र में हल्की और मुफ़ीद ग़िज़ाएं ज़ियादा बेहतर हैं, जैसे दूध, खजूर, फल, अन्डा, दलिया या हल्की रोटी वग़ैरा। बहुत ज़ियादा तेज़ मसालह़ा या नमक वाले खानों से रोज़े के दौरान पानी की कमी बढ़ सकती है और ब्लड प्रेशर वाले अफ़राद के लिये ख़त़रा हो सकता है। सेह़त, उ़म्र और रोज़ादार की जिस्मानी ह़ालत के मुत़ाबिक़ सह़री और इफ़्तार में उन अश्या के इस्तिमाल में फ़र्क़ हो सकता है।

इफ़्तार में एह़तियात़ इफ़्तार के वक़्त पकोड़े, समोसे, तली हुई चीज़ें और कोल्ड ड्रिंक वग़ैरा उ़मूमन ज़ियादा खाई जाती हैं, मगर माहिरीने ग़िज़ाइय्यत की राय है कि रमज़ान में सेह़तमन्द रहने के लिये उन की मिक़्दार और क़िस्म पर ख़ास तवज्जोह दी जाए। तली हुई (fried) और ज़ियादा चिक्नाई वाली ग़िज़ाएं, जैसे समोसे, पकोड़े वग़ैरा, रोज़ा के बाद हाज़िमे पर बोझ डाल सकती हैं और मेदे की तेज़ाबिय्यत, बद हज़्मी व सुस्ती या वज़्न बढ़ने का सबब बन सकती है, कोल्ड्रींक्स और ज्यादा सकर (sugar) या मुसन्नअ़ (processed) अज्ज़ा पर मुश्तमिल अश्या, वज़्न में इज़ाफ़े, energy के अचानक उतार चढ़ाव और मेदे के मसाइल पैदा कर सकती हैं। चन्द सादा और मुफ़ीद चीज़ें इफ़्तार के लिये काफ़ी हैं।

रमज़ानुल मुबारक में अपने घर फ़ैज़ाने ग़रीब नवाज़ चैनल (FGN Channel) ज़रूर आ़म करें बिल ख़ुसूस सह़र व इफ़्तार के औक़ात में, बादे अ़स्र और बादे इ़शा होने वाले मदनी मुज़ाकरे भी देखना न भूलें। इस में अ़क़ाइद और शरई़ मसाइल के साथ साथ घरेलू मसाइल और उन का ह़ल, औलाद की तरबियत, मियां बीवी, वालिदैन अ़ज़ीज़ो अक़ारिब के लिह़ाज़ से मुख़्तलिफ़ पहलूओं पर बहुत मुफ़ीद राहनुमाई और मश्वरे मिलते हैं जिन पर अ़मल करने से घर के माह़ौल में बहुत बदलाव देखा जाता है।

मज़ार हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا

तज़्किरए सालिहात

अज़्वाजे मुतहहरात और रमज़ानुल मुबारक

रमज़ानुल मुबारक का महीना मुसलमानों के लिये बहुत अहम है जिस में वोह इबादत, परहेज़गारी और नेकी में मामूल से बढ़ कर कोशिश करते हैं। ख़ुसूसन ख़वातीन का घरेलू ज़िम्मेदारियों के साथ फ़राइज़ो नवाफ़िल की अदाएगी का भरपूर एहतिमाम क़ाबिले तहसीन है। अगर बैते नबवी की बात की जाए तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के घर में रमज़ान का इस्तिक़बाल, इबादात का एहतिमाम और उस की साअतों का भरपूर इस्तिमाल एक ख़ास शान रखता था। अज़्वाजे मुतहहरात का ज़ौक़े इबादत, इल्मी जुस्तजू और ख़ैर के कामों में सबक़त बिल ख़ुसूस ख़वातीने उम्मत के लिये क़ाबिले तक़्लीद है।

अज़्वाजे मुतह्हारत की इल्मी व फ़िक़्ही तरबियत

हज़रते आइशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا इल्मो फ़िक़्ह के बुलन्द मक़ाम पर थीं, आप ने रमज़ान की अज़ीम रात लैलतुल क़द्र के बारे में बराहेरास्त नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रहनुमाई तलब की जो रमज़ान के लम्हात को अनमोल बनाने की शदीद ख़्वाहिश का सुबूत है। आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह! अगर मुझे मालूम हो जाए कि कौन सी रात लैलतुल क़द्र है तो मैं क्या दुआ करूं? फ़रमाया : येह दुआ اَللّٰھُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّیْ[1] इस हदीस में दुआ की तालीम भी है और घरानए नुबुव्वत में इल्मी मुज़ाकरात का सुबूत भी।

इसी तरह रोज़े के औक़ात की वज़ाहत में भी अज़्वाजे मुतहहरात का अहम किरदार है, जैसा कि वक़्ते सहर की हद बन्दी से मुतअल्लिक़ हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا की बयान कर्दा रिवायत के मुताबिक़ सहरी का इख़्तितामी वक़्त तुलूए फ़ज्र तक है।[2]

इस तरबियते नबवी में हमारे लिये तालीम है कि अपने साथ अहले ख़ाना को भी इबादात व दीनी तालीमात से वाबस्ता रखें।

ख़ैर के कामों में तरग़ीब और इबादत के लिये बेदारी

अच्छे सरबराहे ख़ाना की ज़िम्मेदारी है कि वोह अपने घर वालों को ग़फ़्लत में न पड़ने दे बल्कि नेकी पर आमादा करे। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रमज़ान के आख़िरी अशरे में उस का ख़ास एहतिमाम फ़रमाते : ख़ुद मशग़ूले इबादत रहते और अपनी अज़्वाज को भी बेदार करते।[3] यक़ीनन इस से अहले ख़ाना के लिये फ़िक्रमन्दी ज़ाहिर होती है। जैसा कि हज़रते आइशा ने रमज़ान के आख़िरी अशरे में रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शब बेदारी व कमर बस्तगी, अहले ख़ाना को जगाने और लैलतुल क़द्र की तलाश की तरग़ीब को रिवायत किया है।[4] जिस से वाज़ेह है कि इज़्दिवाजी, मुआशरती और तब्लीग़ी अज़ीम ज़िम्मेदारियों के बावुजूद आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अहले ख़ाना की तालीमो तरबियत को कभी सानवी हैसिय्यत नहीं दी। इस तर्ज़े नबवी को अगर "घर वालों को जहन्नम का ईंधन बनने से बचाने वाले" हुक्मे क़ुरआनी का अमली

नमूना क़रार दिया जाए तो बेजा नहीं।

एतिकाफ़ और अज़्वाजे मुतह्हारत का ज़ौक़े इबादत

एतिकाफ़ बन्दे को दुनिया से ला तअ़ल्लुक़ कर के बारगाहे इलाही से मुस्तक़िल वाबस्ता करने वाली अहम इबादत है, हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की देखा देखी अज़्वाजे मुतह्हरात भी एतिकाफ़ में दिलचस्पी रखतीं और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इजाज़त तलब करतीं, जैसा कि एक बार हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एतिकाफ़ का इरादा ज़ाहिर फ़रमाया तो हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने अपने लिये भी और उम्मुल मोमिनीन हज़रते हफ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا के कहने पर उन के लिये भी हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से एतिकाफ़ की इजाज़त मांगी[5] एक रिवायत में है कि उन दोनों की देखा देखी उम्मुल मोमिनीन हज़रते ज़ैनब बिन्ते जहश رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने भी आख़िरी अ़शरा के एतिकाफ़ के लिये अपना ख़ैमा लगा लिया था।[6]

इस से उन पाक हस्तियों के पाकीज़ा जज़्बए इबादत और क़ुर्बे इलाही के मुआ़मलात में एक दूसरे से आगे निकलने की ख़्वाहिश वाज़ेह है, अगर्चे किसी शरई मस्लहत के तहत उस ख़ास मौक़अ़ पर नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ैमे हटवा दिये थे और उस साल एतिकाफ़ नहीं किया था, लेकिन अज़्वाज के जज़्बे की हौसला अफ़्ज़ाई फ़रमाई और उन्हें शरई हुदूद सिखाई। अहम बात येह है कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के विसाले ज़ाहिरी के बाद भी अज़्वाजे मुतह्हरात ने एतिकाफ़ का मामूल जारी रखा जैसा हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا फ़रमाती हैं : नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने विसाले ज़ाहिरी तक रमज़ानुल मुबारक के आख़िरी अ़शरे का एतिकाफ़ फ़रमाते रहे, फिर उन के बाद उन की अज़्वाज ने एतिकाफ़ किया।[7]

उम्महातुल मोमिनीन की रमज़ानुल मुबारक की इन मसरूफ़िय्यात का जाइज़ा इस नतीजे पर पहुंचाता है कि एक मिसाली इस्लामी घराना वोह है जहां रमज़ानुल मुबारक की सरगर्मियां रिवायती सहरी व इफ़्तारी तक महदूद न हों बल्कि अल्लाह से तअ़ल्लुक़ जोड़ने, इल्म हासिल करने और एक दूसरे को नेकी की तरग़ीब देने का भरपूर सिल्सिला जारी रखा जाए। नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने हज़रते आइशा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا को लैलतुल क़द्र की जो दुआ़ सिखाई : "اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ كَرِيْمٌ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّىْ", येह उम्मत के लिये एक तोहफ़ा है। येह दुआ़ सिखाती है कि इबादत का हासिल आजिज़ी और अल्लाह की मग़्फ़िरत का तलबगार होना है।

आज की ख़वातीन के लिये अज़्वाजे मुतह्हरात का तर्ज़े इबादत बेहतरीन नमूनए अ़मल है। जिस तरह उन्हों ने घरेलू ज़िम्मेदारियों के बावुजूद इल्मे दीन सीखा, रातों को इबादत के लिये क़ियाम किया, और एतिकाफ़ जैसी मशक़्क़त तलब इबादत का शौक़ रखा, इसी तरह आज भी ख़वातीन को चाहिये कि वोह रमज़ान को अपनी और अपने अहले ख़ाना की इस्लाह का ज़रीआ़ बनाएं। हमें चाहिये कि अपने घरों को "बैते नबवी" के रंग में रंगने की कोशिश करें, जहां क़ुरआन की तिलावत हो, शरई मसाइल की तालीमो तअ़ल्लुम हो और रातों को उठ कर अल्लाह के हुज़ूर गिड़गिड़ाने का एहतिमाम हो। येही वोह रास्ता है जो दुनिया में सुकून और आख़िरत में कामयाबी का ज़ामिन है।

(1)ترمذی،5/306، حدیث:3524(2)الاحسان بترتیب صحیح ابن حبان،5/196، حدیث: 3465 (3)دیکھئے: ترمذی، 2/209، حدیث: 795 (4)دیکھئے: بخاری، 1/663، حدیث:2024(5)دیکھئے:بخاری، 1/672، حدیث:2045(6)دیکھئے: بخاری، 1/666، حدیث:2033(7)دیکھئے:بخاری 1/664، حدیث:2026۔

इस्लामी बहनों के शरई मसाइल

1 औरत का बापर्दा हो कर क़ब्रिस्तान जाना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि क्या औ़रत बापर्दा हो कर क़ब्रिस्तान जा सकती है या नहीं ? आज कल बाज़ ख़वातीन की जानिब से येह राय पेश की जाती है कि अगर कोई औ़रत शरई पर्दे की मुकम्मल पाबन्दी करे, तो ऐसी सूरत में उस का क़ब्रिस्तान जाना मम्नूअ़ नहीं है। इस पर एक रिवायत को बत़ौरे दलील पेश किया जाता है, जिस में है कि ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا अपने भाई ह़ज़रते अ़ब्दुर्रहमान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की क़ब्र पर जाया करती थीं। इस से येह साबित किया जाता है कि औ़रत अगर शरई तक़ाज़ों का ख़याल रखे तो उस के लिये क़ब्रिस्तान जाना मम्नूअ़ नहीं है। रहनुमाई फ़रमा दें कि इस रिवायत से दलील पकड़ना दुरुस्त है या नहीं ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के रौज़ा मुबारका के इ़लावा आ़म क़ब्रों की ज़ियारत के लिये जाना औ़रतों के लिये मुत़लक़न मना है, अगर्चे बापर्दा हो कर जाएं, उ़लमा ने फ़रमाया कि औ़रत से जुमुआ़ साक़ित़ है, नमाज़े जनाज़ा और जमाअ़त की ह़ाज़िरी मना है, तो जब औ़रत को इन तमाम इ़बादात के लिये निकलने से रोक दिया गया जो कि शरीअ़त में बुलन्द मक़ाम रखती हैं, तो उस का क़ब्रिस्तान जाना ब दर्जहा औला मम्नूअ़ क़रार पाएगा।

बाक़ी जहां तक उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا वाली रिवायत का तअ़ल्लुक़ है, तो इस में येह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہَا ने सफ़रे ह़ज के दौरान अपने भाई ह़ज़रते अ़ब्दुर्रहमान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ की क़ब्र की ज़ियारत फ़रमाई, तो येह ज़ियारत घर से बत़ौरे ख़ास क़ब्रिस्तान जा कर नहीं की, बल्कि दौराने सफ़र इत्तिफ़ाक़न हुई और इस इत्तिफ़ाक़ी ज़ियारत की गुन्जाइश थी, बशर्ते कि मुन्किराते शरइय्या से पाक हो, लेकिन दौरे ह़ाज़िर में औ़रतों के लिये फ़ितना, नौह़ा, बेसब्री और दीगर मुन्किरात से पाक ज़ियारत का इम्कान नादिर बल्कि मादूम है, लिहाज़ा फ़ुक़हाए किराम ने इस दौर में इत्तिफ़ाक़ी ज़ियारत से भी मना फ़रमा दिया, तो अब औ़रतों के लिये ज़ियारते क़ुबूर मुत़लक़न ही मना है।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

2 बच्चों के गाल या पेशानी पर सियाह नुक़्ता लगाना कैसा ?

सुवाल : क्या फ़रमाते हैं उ़लमाए दीन व मुफ़्तियाने शरए मतीन इस मस्अले के बारे में कि नज़रे बद से बचने के लिये बच्चों के गाल या पेशानी पर सियाह नुक़्ता लगाना कैसा ?

بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْجَوَابُ بِعَوْنِ الْمَلِکِ الْوَھَّابِ اَللّٰھُمَّ ھِدَایَةَ الْحَقِّ وَالصَّوَابِ

बच्चों को नज़रे बद से बचाने के लिये पेशानी, ठोड़ी या गाल पर सियाह नुक़्ता लगाना जाइज़ है, क्यूंकि येह नज़रे बद से बचने की तदबीर है जो ख़िलाफ़े शरअ़ नहीं और ऐसा टोटका जो शरीअ़त के ख़िलाफ़ न हो और तजरिबा से मुफ़ीद होना इस का साबित हो जाइज़ होता है जैसा कि अ़रब लोगों में राइज था कि जिस की नज़र लगती उस के हाथ, पांव धो कर नज़र लगे हुए को छींटा मारते, और हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इस से मना न फ़रमाया। बल्कि बच्चों को नज़रे बद से बचाने के लिये सियाह नुक़्ता ठोड़ी में लगाने का सुबूत तो ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہُ के अ़मल से भी साबित है। लिहाज़ा इस में किसी क़िस्म का ह़रज नहीं।

وَاللّٰہُ اَعْلَمُ عَزَّوَجَلَّ وَ رَسُوْلُہٗ اَعْلَم صلَّی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

रमज़ानुल मुबारक के अहम वाक़िआत

तारीख़ / माह / सिन	नाम / वाक़िआ	मज़ीद मालूमात के लिये पढ़िये
3 रमज़ानुल मुबारक 11 हि.	यौमे विसाल ख़ातूने जन्नत हज़रते फ़ातिमतुज़्ज़हरा رضی اللہ عنہا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 ता 1440 हि. और किताब **"शाने ख़ातूने जन्नत"**
3 रमज़ानुल मुबारक 1391 हि.	यौमे विसाल मशहूर मुफ़स्सिर हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी رحمۃ اللہ علیہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 हि. और रिसाला **"फ़ैज़ाने मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी"**
10 रमज़ानुल मुबारक 10 सिने नबवी	यौमे विसाल उम्मुल मोमिनीन हज़रते ख़दीजतुल कुब्रा رضی اللہ عنہا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438, 1440 हि. और रिसाला **"फ़ैज़ाने ख़दीजतुल कुब्रा"**
15 रमज़ानुल मुबारक 3 हि.	यौमे विलादत नवासए रसूल हज़रते इमाम हसने मुज्तबा رضی اللہ عنہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438, रबीउल अव्वल 1441 हि. और रिसाला **"इमामे हसन की 30 हिकायात"**
17 रमज़ानुल मुबारक 2 हि.	यौमे बद्र व शोहदाए बद्र	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 ता 1439 हि. और किताब **"सीरते मुस्तफ़ा, सफ़्हा 209"**
17 रमज़ानुल मुबारक 57 या 58 हि.	यौमे विसाल उम्मुल मोमिनीन हज़रते आइशा رضی اللہ عنہا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 ता 1440 हि. और किताब **"फ़ैज़ाने आइशा सिद्दिक़ा"**
19 रमज़ानुल मुबारक 2 हि.	यौमे विसाल शहज़ादिये रसूल, हज़रते रुक़य्या رضی اللہ عنہا	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 हि. और किताब **"सीरते मुस्तफ़ा, सफ़्हा 694"**
20 रमज़ानुल मुबारक 8 हि.	फ़त्हे मक्का	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1440 हि. मई 2021 ई. और किताब **"सीरते मुस्तफ़ा, सफ़्हा 411"**
21 रमज़ानुल मुबारक 40 हि.	यौमे शहादत मुसलमानों के चौथे ख़लीफ़ा हज़रते अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رضی اللہ عنہ	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 ता 1444 हि.और रिसाला **"करामाते शेरे ख़ुदा"**
22 रमज़ानुल मुबारक 1326 हि.	यौमे विसाल बिरादरे आला हज़रत मौलाना हसन रज़ाखान	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 और 1439 हि
27 रमज़ानुल मुबारक	लैलतुल क़द्र	माहनामा फ़ैज़ाने मदीना रमज़ानुल मुबारक 1438 और किताब **"फ़ैज़ाने रमज़ान (मुरम्मम), सफ़्हा 181"**

दीने इस्लाम की ख़िदमत में आप भी दावते इस्लामी का साथ दीजिये और अपनी ज़कात, सदक़ाते वाजिबा व नाफ़िला और दीगर अ़तिय्यात (Donation) के ज़रीए माली तआ़वुन कीजिये !

आप के चन्दे को किसी भी जाइज़, दीनी, इस्लाही (Reformatory), फ़लाही (Welfare) रूहानी ख़ैर ख़्वाही और भलाई के काम में ख़र्च किया जा सकता है